मुसव्विर का ख़्याल

संगीता गुप्ता

मुसव्विर का ख़याल

संगीता गुप्ता

पृथ्वी फाइन आर्ट एण्ड कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

पृथ्वी फाइन आर्ट एंड कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

ISBN :

मूल्य : ₹ 3000
©संगीता गुप्ता

पहला संस्करण : 2018

प्रकाशक : पृथ्वी फाइन आर्ट एंड कल्चरल सेंटर
124, हंस भवन, 1 बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002

मुसव्विर का ख़याल
संगीता गुप्ता की कविताएं एवं चित्र

आवरण चित्र : संगीता गुप्ता

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचालित-प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

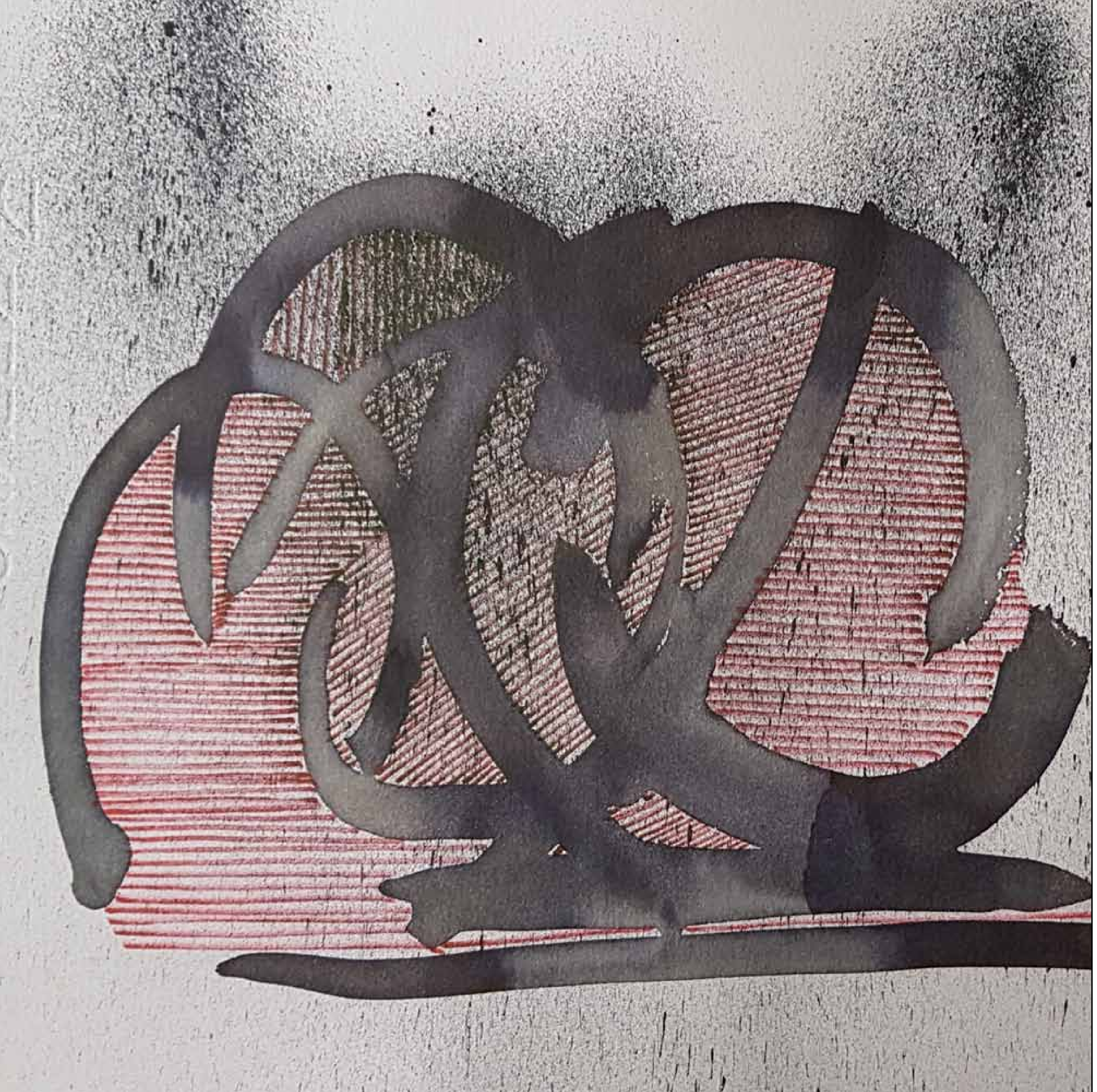

Sangeeta Gupta is one of the most active contemporary artists of our time; she is not only an exceptional artist but also a poet and film maker. Her pen and ink drawings are characteristically sensitive, and carry a delicate sensibility along with her melodious lyrics. Through her work, which is some of the best of Indian Abstract, she has achieved a marked spiritual and philosophical quality which is justified through her poetry. This book will surely be of interest to all those who are looking for a fresh perspective, as Sangeeta takes us on a visual and literary journey into uncrossed realms.

Siddhartha Tagore
Editor, Art & Deal Magazine

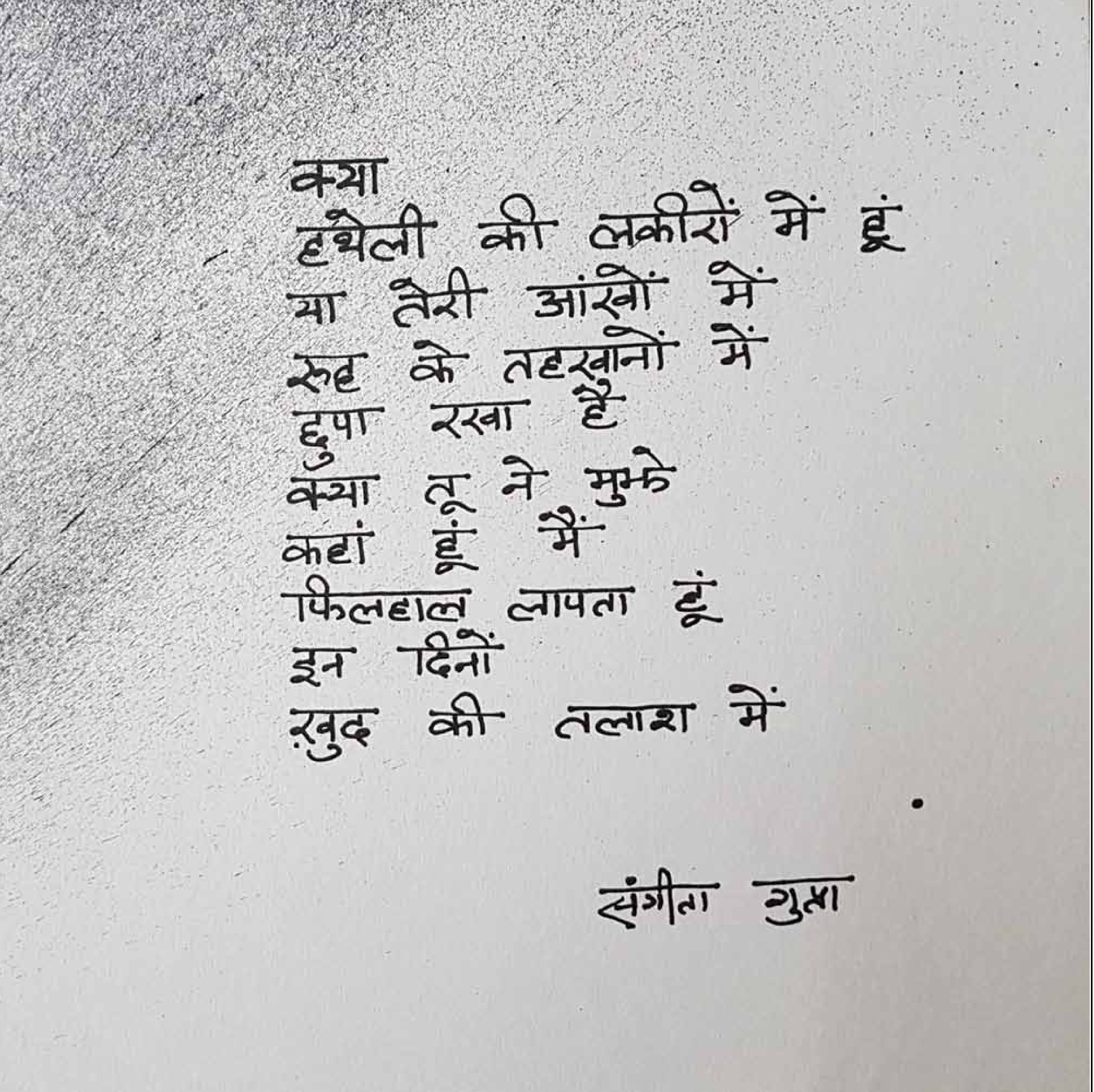

THE MULTIFACETED ART-SCAPE OF SANGEETA GUPTA

A versatile and vibrant art-scape appears to mirror the multifaceted persona of Sangeeta Gupta and her colourful work. In a creative oeuvre that extends from painting to writing to poetry to photography to film making to calligraphy and much more besides working as a senior civil servant and running charitable organizations; she has a prolific and varied body of work to her credit.

Marked for its rich repertoire of paintings and drawings, her colourful work with intricate crisscrossing lines and indefinable geometric forms appears primarily in an abstract genre as it envelops the surface from all corners. Her compositions in impalpable shapes, forms and lines ingrained with poetic text, are self-assertive. Devoid of any illusion of re-production of a visible reality from worldly references, the non-figurative imagery is enriched with emotive text. A lyrical movement is embodied with a carefully laid out palette and textures in the work. A finesse comes through in the manner in which the artist wields her brush be it in oil and acrylic on canvas or in ink or watercolours on paper as part of her large body of work. There is the viscosity of ink and glossiness of lacquer as it suggests the glow of sun in some work while bespeaks of earthiness in the others.

Her more recent ensemble as featured in this publication, includes drawings in black on white with calligraphic text entailing her poetry. The line drawings and scribblings overflowing with handwritten text, evoke love and other human emotions in a synergy of her expertise in making art and writing poetry. While natural world and environment is drawn into the text, human nature is the pivot that inscribes the text. Transcribed in Devanagari script, the poems supplementing the visuals, come in a mix of Urdu and Hindi touching sensitive human chords at heart.

Sangeeta's work in its synergy across varied art forms, recalls the text of Vishnudharmottara as it offers solace to the mankind in contemporary troubled times. The artistic abstractions embellished with sensitively written poetry can be described as Sat Chit Ananda as they

appear pure/timeless, represent consciousness coming from within her and are blissful not just for the creator but also the viewers.

Credited with numerous awards for her remarkable work, the multi-talented artist has represented India in over 200 solo and group exhibitions across the country and internationally. Sangeeta Gupta's short stories and anthologies of her poems have been published in Hindi and translated in several foreign languages. Her work in films includes writing lyrics, scripting, directing and shooting.

Sangeeta Gupta's work speaks for spirituality against gross materialism as it also stands for social issues that the artist has been championing. The emotional dimension in art is integral to her expressions, aesthetics and presentation that transcends technique and style.

Sushma K Bahl
5th April 2018, Delhi.

Sushma K. Bahl, author of 5000 Years of Indian Art, in English and Chinese editions, and Forms of Devotion that won the publishers' award, besides other books, and former Head, Arts & Culture, British Council India; is an independent arts adviser, writer and curator based in Delhi.

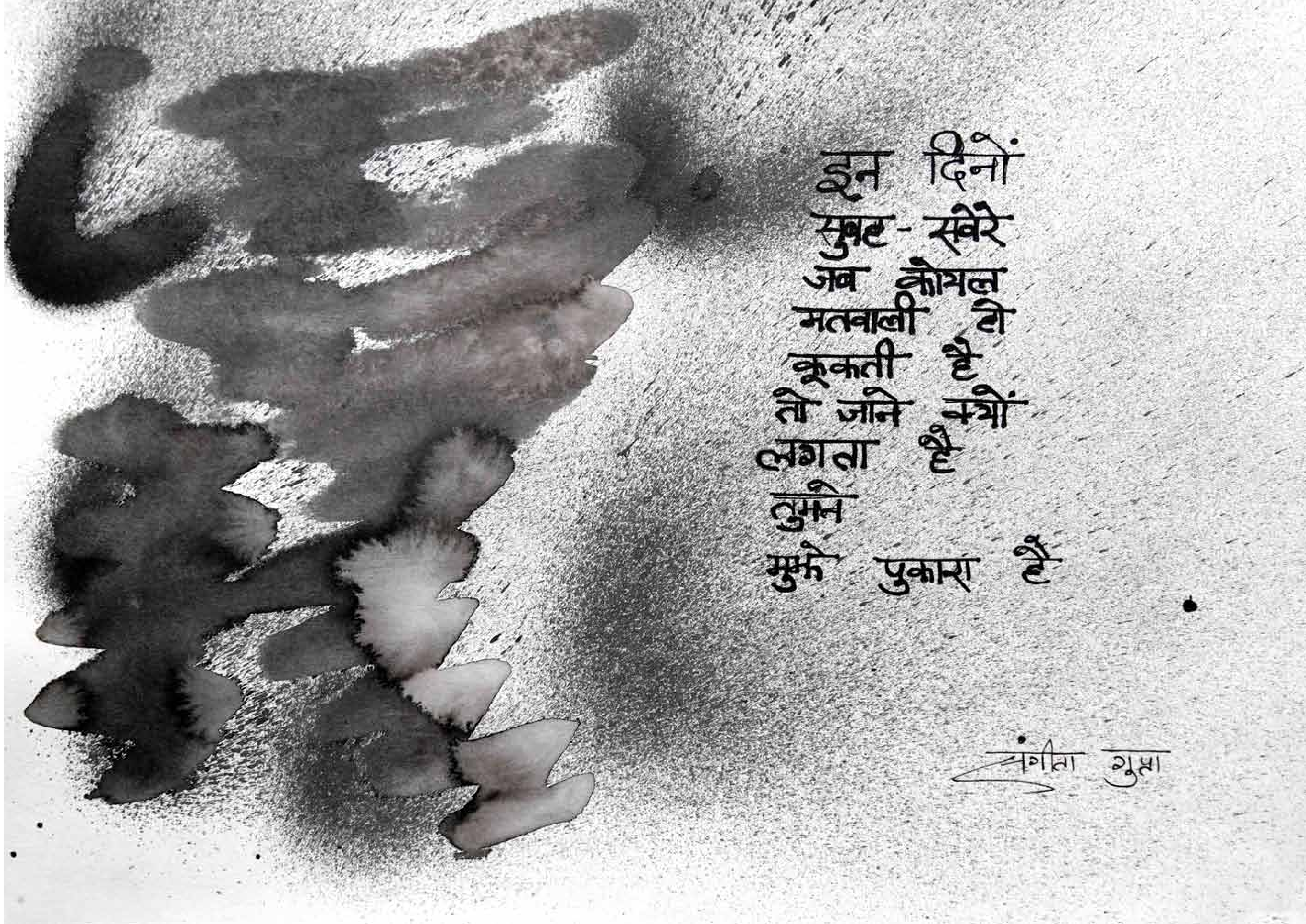

गहनतम प्रत्यक्ष ज्ञान के क्षण कलाओं में से आ सकते हैं, छवि या शब्द के माध्यम से। यह भी कि केवल कलाएं ही परस्पर अनुगूंजती हैं। और कोई इस बात से भी निश्चित हो सकता है कि यह ऐसा अनुभव है, जो अपने मूल में और प्रभाव में लगभग एक जैसा ही रहता है, चाहे वह कविता में रूपांतरित हो या पेंटिंग में। दोबारा कहें तो यह दर्शन या बोध का क्षण होता है, एक अविस्मरणीय जीवंतता और उच्चतर अवस्था में पहुंची प्रत्यक्षानुभूति का क्षण। यह भी सर्वविदित है कि यह दर्शन हमारी ऐकांतिकता की प्रदीप्ति है।

अपने चित्रों एवं रेखाचित्रों के विपुल भंडार से युक्त संगीता गुप्ता के पास निश्चय ही सरस्वती का वरदान है और इसी कारण से वे चित्रकार होने के साथ साथ कवयित्री भी हैं। आजकल के मुहावरे में उनकी कोई 'महत्वाकांक्षा' नहीं है, बस एक अभिलाषा या आकांक्षा है कि वे अपने जीवनानुभवों के विन्यास को परिष्कृत करें और अपनी उदात्त भावनाओं का समादर करें। जहां तक मेरा संबंध है, मैंने जीवनभर कला की कृतियों का, जिन्हें चित्रकार और शिल्पकार अपनी अंतरात्मा से समाज के लिए गढ़ते हैं, आनंदोपभोग कर स्वयं को समृद्ध किया है। इसी तरह महान संगीत की शक्ति ने भी इस क़लमकार को ऊर्जस्वित किया है। यह एक सच्ची आनंदानुभूति रही। इसी तरह जब काव्यात्मक शब्द और आलोकित छवि संयुक्त होती है तो वह हृदय को दुगुना पुनर्जीवित कर सकती है। यह छोटा सा संकलन इस आशा के साथ प्रस्तुत है कि वह उसके अध्येताओं के लिए आनंद के आलोकित हो जाने या उत्कर्ष की ओर आरोहण के क्षण ला सकें।

-केशव मलिक
(प्रतिनाद)

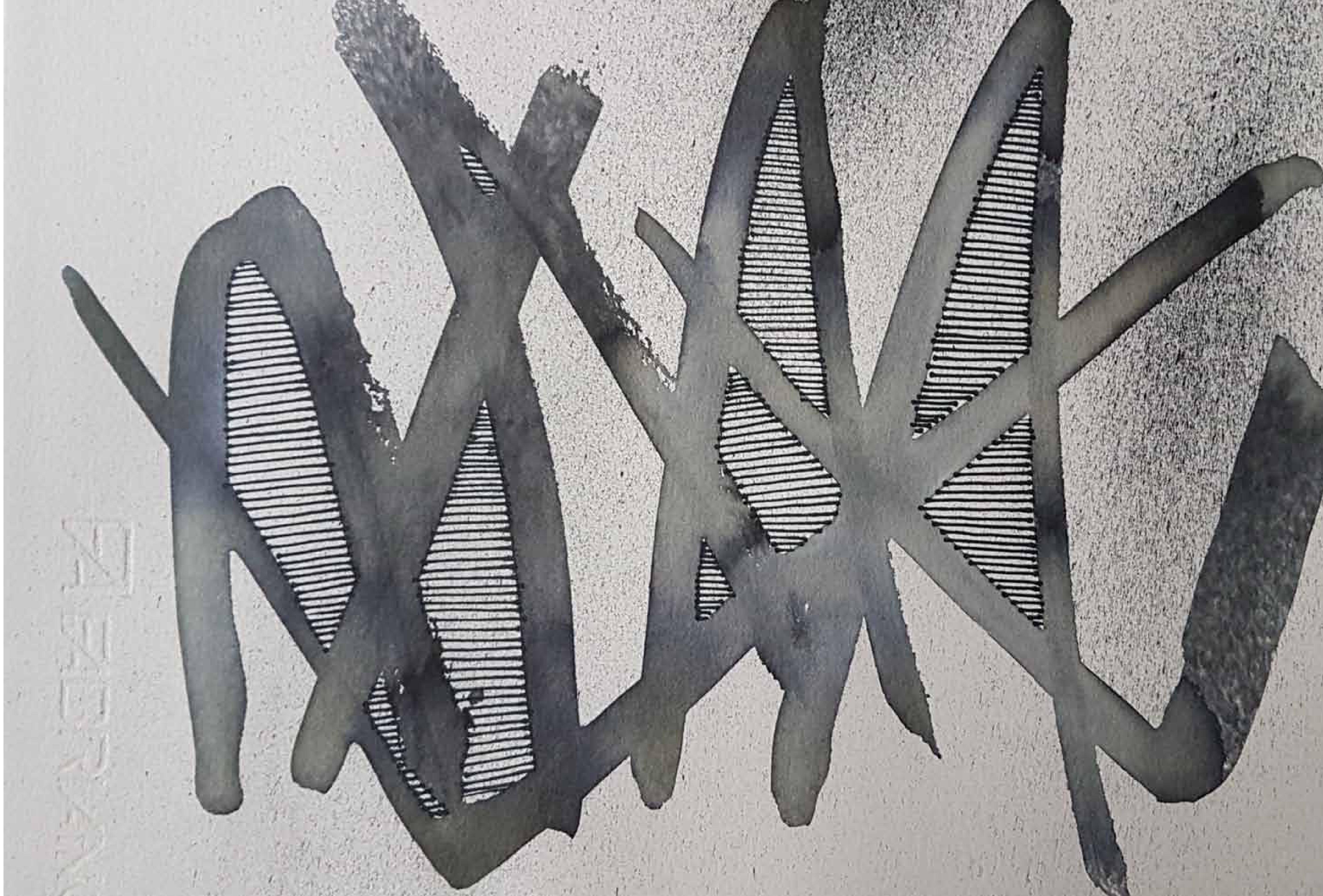

THE DALAI LAMA

FOREWORD

In the beautiful photographs collected in this book, Sangeeta Gupta has captured something of the timeless quality found in the Ladakhi landscape with its towering peaks, arid plains, swift rivers and still lakes under deep blue skies, as in much of the rest of the Himalayan region.

December 17, 2014

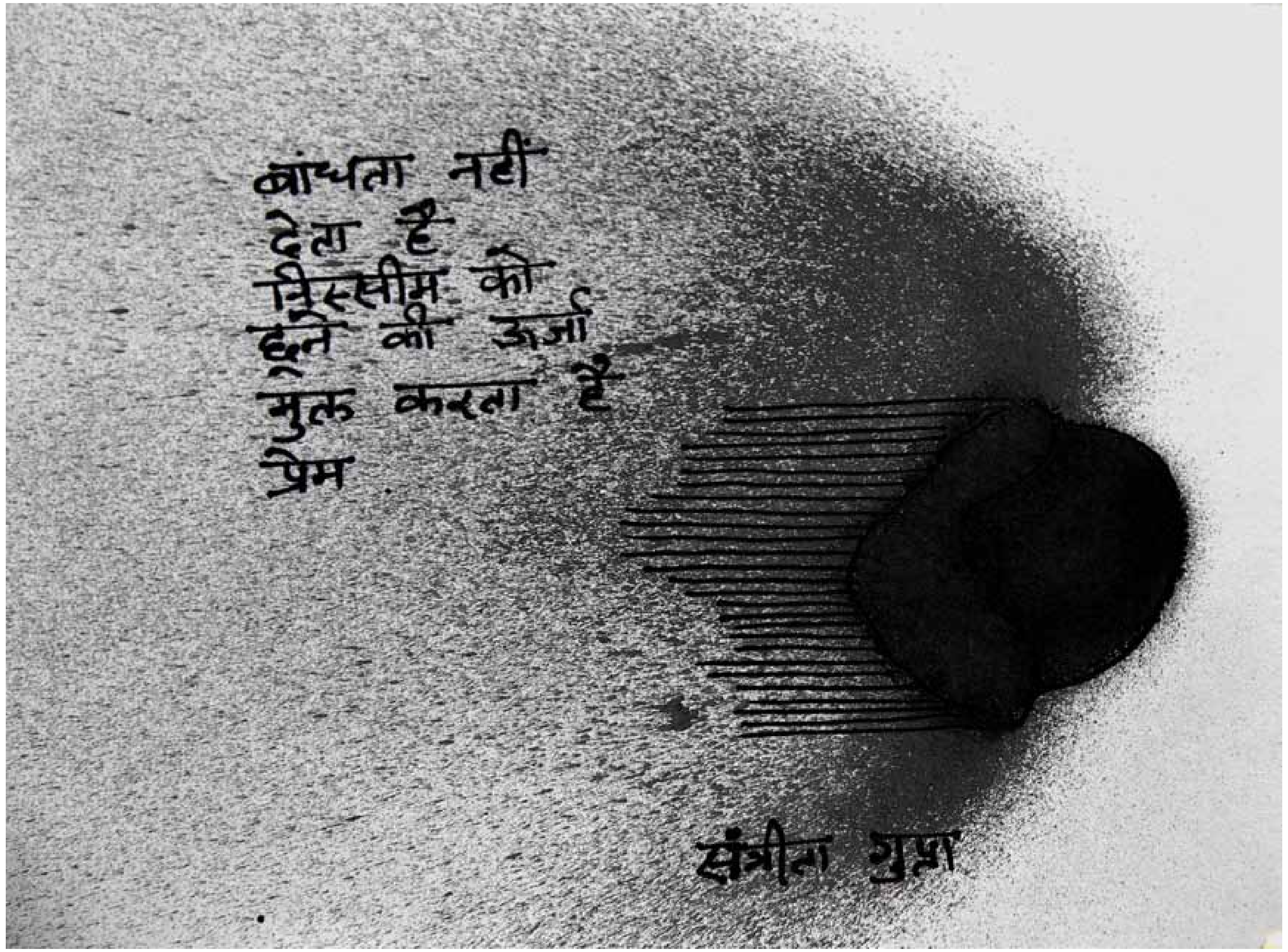

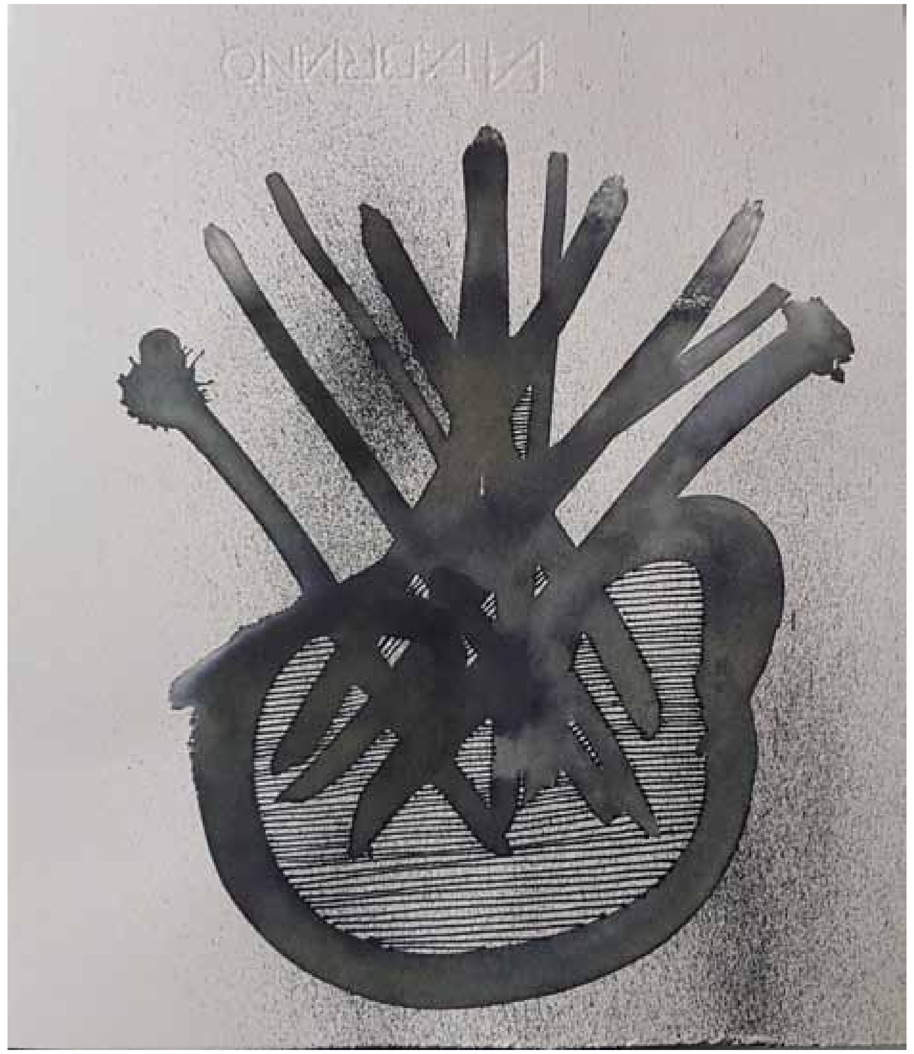

विखंडनशील आज के युग में, कविता का मुहावरा स्वयं इतना गद्यात्मक हो गया है कि किसी भी रचनाकार के विषय में आत्यन्तिक रूप से कोई वक्तव्य नहीं दिया जा सकता, तो भी यह कहना समुचित ही होगा कि पिछले दो संग्रहों की तुलना में संगीता जी अब एक बड़े फलक के साथ सामने आई हैं। इस संग्रह की रचनाओं में प्रेम है, प्रेम का दंश है, गृहस्थी है, मोह के उलझे धागे हैं। सामाजिक सरोकार है, जागतिक भेद दृष्टि से उद्भूत खीझ है और है लड़की पर दैहिक मानसिक, प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी तरह पड़ती मार से निकली एक सहमी आह।

हर पीढ़ी को नयी आती पीढ़ी का स्वागत तो करना ही चाहिए; फिर कवयित्रियां तो नयी और भी कम हैं। गिनती की प्रतिभाओं में आगे चलकर संगीता जी का भी नाम जुड़े, इसी सदाशयता के साथ।

-कैलाश वाजपेयी
(समुद्र से लौटती नदी)

तुम्हारी ये कविताएं,
ऐसे उतरी मुझमें,
जैसे मधुऋतु उतरी वन में,
जैसे मछली शांत नदी में,
जैसे सूरज उतरे बदली में,
इस इन्द्रधनुषी भाषा को,
तुम रंगती रहना मन में,
तन के मध्यम ज़्वर में,
अंतस् के अपने स्वर में।

सुनीता जैन

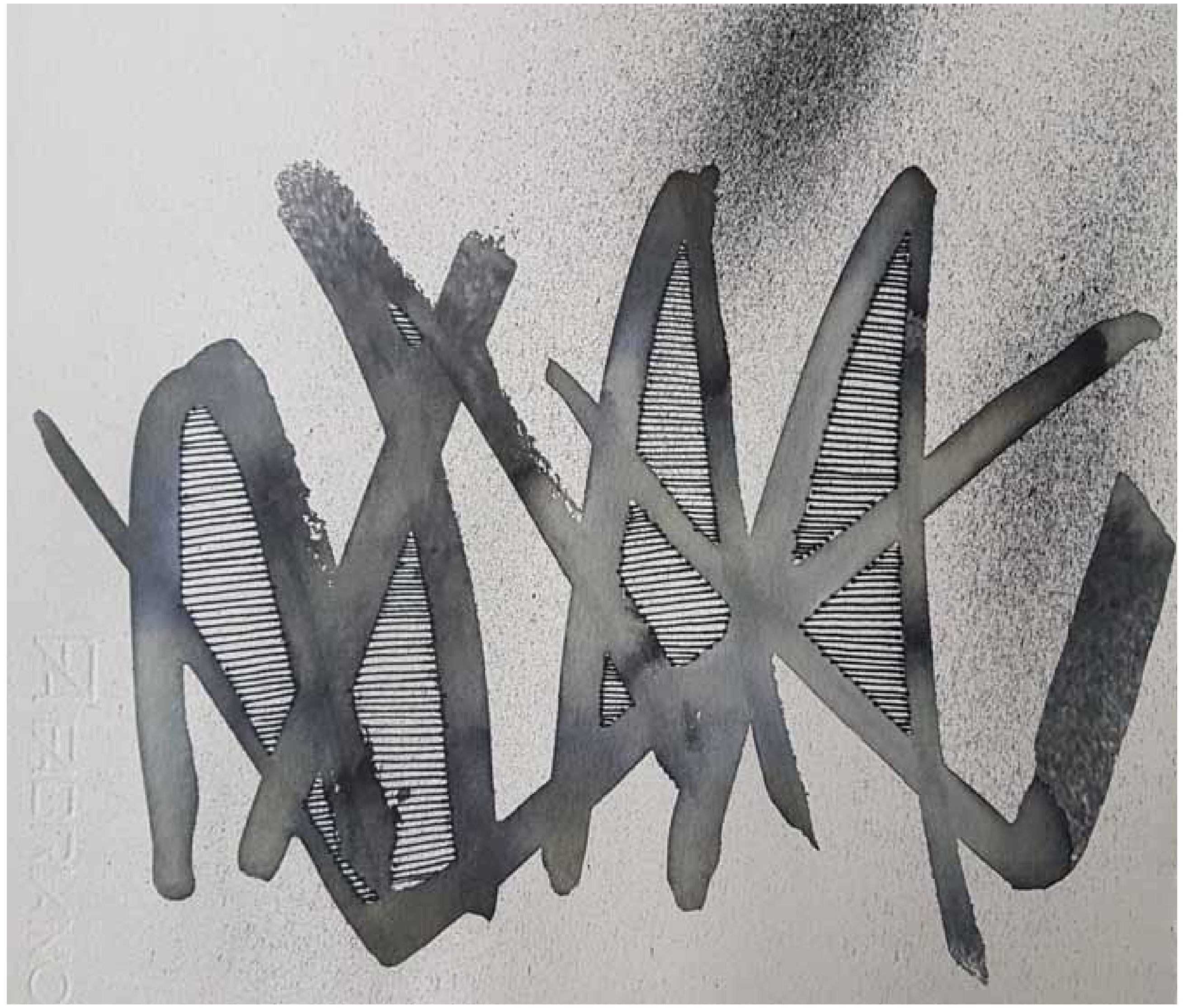

“समुद्र से लौटती नदी” संगीता गुप्ता का तीसरा काव्य-संग्रह है जो दो वर्षों के अन्तराल के बाद आ रहा है। संग्रह की कविताएं इस युवा कवयित्री की उस बेचैन सृजनात्मकता के भीतर से पैदा हुई हैं जो आज के समय की जानी पहचानी वास्तविकता है। यह इस बात का प्रमाण भी है कि इस सृजक के पास कहने के लिए बहुत कुछ है और उसे बिना किसी लाग लपेट के एक सहज अनलंकृत ढंग से कह देने का कौशल भी। यह भाषा की अभिधा का एक नया रंग है जो पाठक के मन पर किसी तरह का बोझ नहीं डालता, बल्कि एक खास तरह की मुक्ति प्रदान करता है। इस संग्रह की अनेक कविताओं में मुक्ति की यह बेचैनी देखी जा सकती है।

संगीता दो अलग-अलग माध्यमों में काम करने वाली कलाकार है। इस तरह के संयोग बहुत विरल होते हैं। उनके चित्रांकनों में जो सहज प्रभाव पैदा करने की क्षमता दिखायी पड़ती है उसका एक दूसरा रूप इन कविताओं में देखा जा सकता है। एक और बात खास तौर से ध्यान आकृष्ट करती है कि रंग और रेखाओं की दुनिया में रमने वाली इस कलाकार की कविताओं में शब्दों का इस्तेमाल तो पूरे रचनात्मक विवेक के साथ किया गया है .... इस संग्रह की कविताओं में महानगरों की अनुगूंजें हैं। पर इस माने में संगीता हिन्दी की सम्भवतः पहली रचनाकार हैं जो शहर कलकत्ता के साथ वैसा ही रागात्मक संबंध महसूस करती हैं जैसे बंगला के बहुत से आधुनिक कवि करते हैं। यह आकस्मिक नहीं कि इस पुस्तक में दो कविताएं कलकत्ते के बारे में हैं और परोक्ष रूप से तो उसकी अर्थच्छवियां कई दूसरी कविताओं में भी देखी जा सकती हैं। महानगर के भीतर की इस भयावह सच्चाई को संगीता एक उठे हुए तमाचे के रूप में देखती हैं जिसके आघात से बचना आसान नहीं। वे सड़क पर शाम का अखबार बेचते लड़के को इस तरह देखती हैं -“अपनी भूख की फिक्र में/सड़क छानता वह/हमारे सभ्य चेहरों पर उठा तमाचा” इन पंक्तियों और इस संग्रह की अनेक ऐसी पंक्तियों में संवेदना की जो अनलंकृत सच्चाई है वह इस काव्य संग्रह को वृहत्तर पाठक समुदाय तक पहुंचायेगी ऐसा निस्संकोच कहा जा सकता है।

केदारनाथ सिंह
(समुद्र से लौटती नदी)

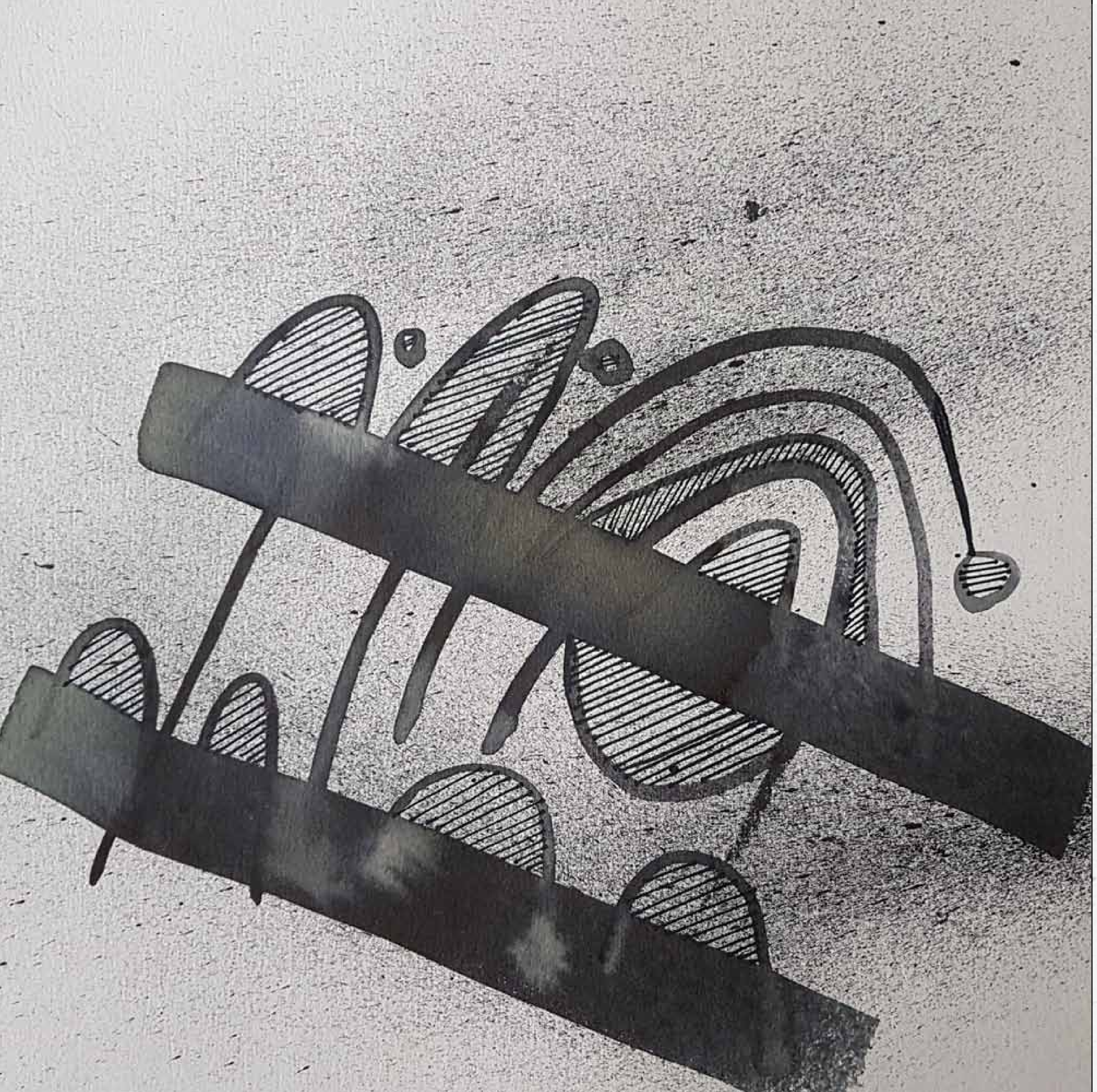

जीने की एक बज़िद चाहत, जो हर रुकावट को यूं गले लगाती है जैसे वह बाधा नहीं ज़िन्दगी का अहम हिस्सा हो। फिर इस शिद्दत से उसे जीती है कि वह मूर्त से अमूर्त होती चली जाती है। होते-होते हज़ार रंग पा जाती है। अमूर्तन कैनवस पर उतरता है तो अवसाद नहीं, उल्लास का बिम्ब बन कर। वही उल्लास जो सागर की लहरों में हैं, सूरज की गुनगुनी से तीखी होती धूप में है। नाउम्मीद होना इस कवि ने जाना नहीं। कभी जाना तो दामन जकड़ता नाउम्मीदी का हाथ यूं अलग झटक दिया जैसे ग़लती से उठाया रंग हो। अणु-अणु में व्याप्त बेशुमार रंग हैं इस कवि के पास, इसलिए ग़लती सुधारना मुमकिन ही नहीं पुरक़शिश है। इन अनगिन रंगों को चुन-चुन कर बनी हैं, निजत्व को प्रकृति में जीती कविताएं।

मृदुला गर्ग
(स्पर्श के गुलमोहर)

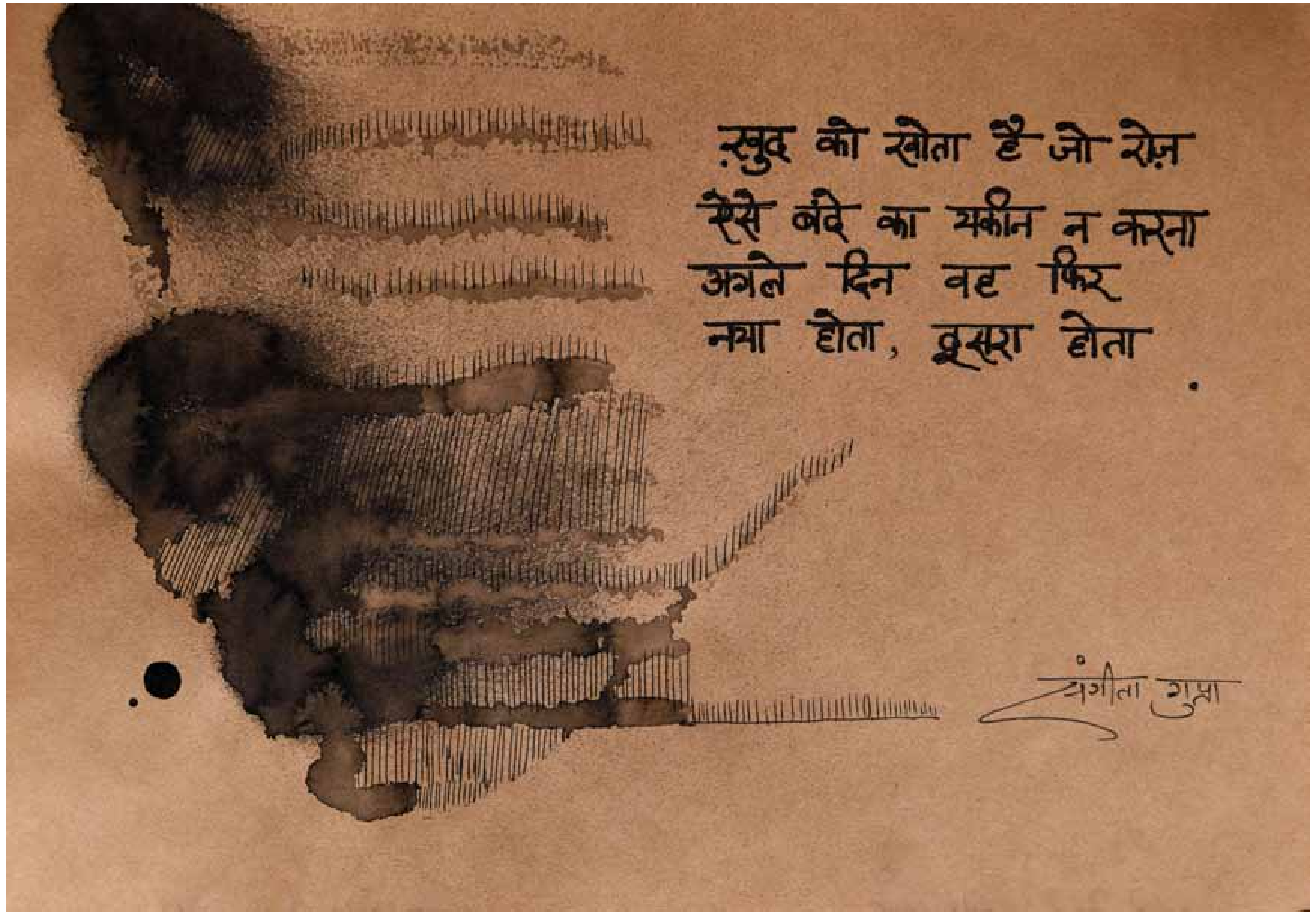

"......the choices that she employs in her quintessential lines are not mere rhetoric, they convince us that for her the making of verse is not an end in itself, but that it is as well a means of remaking of our being."

KESHAV MALIK
Poet & Art Critic

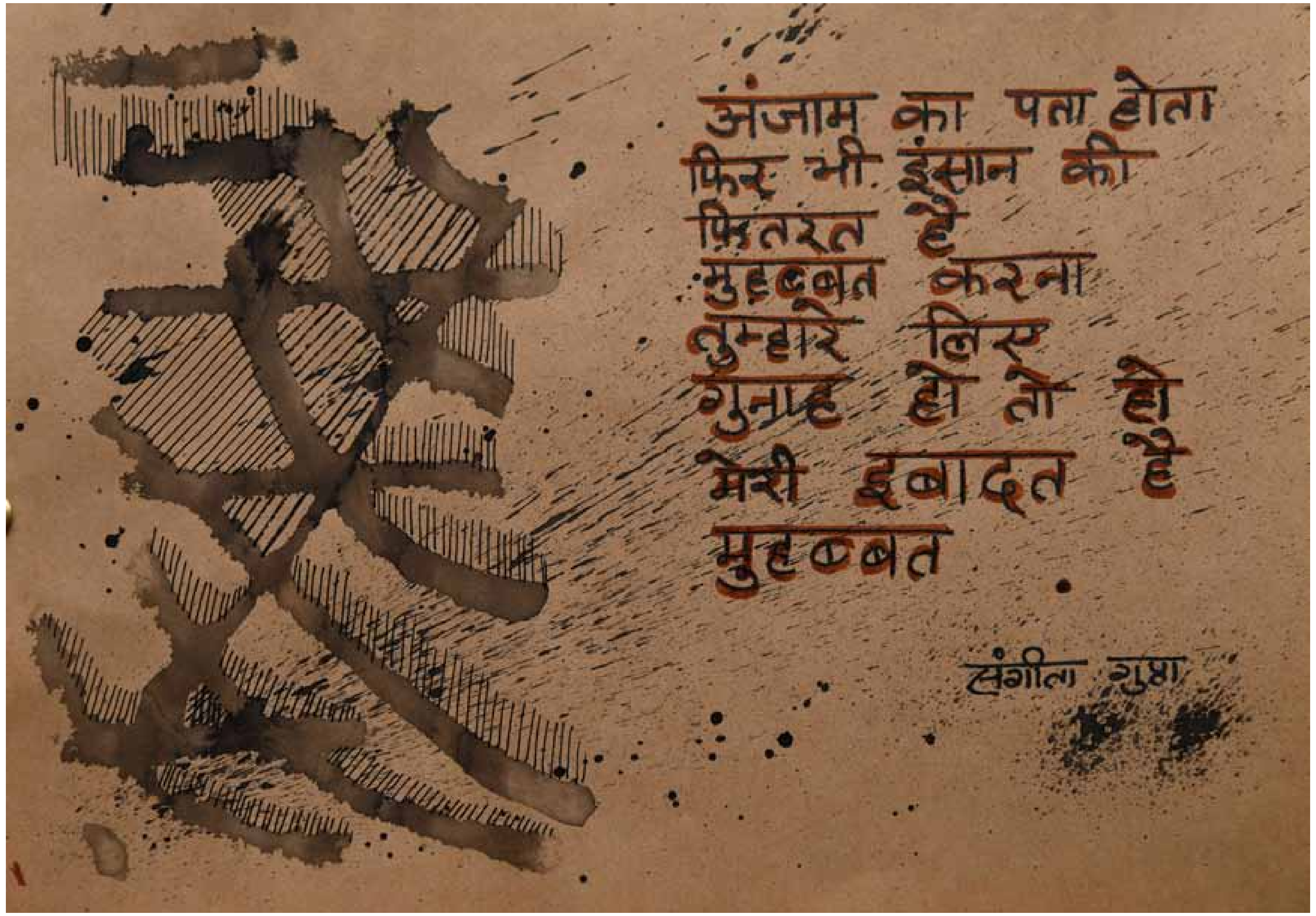

Sangeeta Gupta in her book has combined some evocative poems with beautiful photographs of Kashmir taken by her. The title Ekam refers to the unity of all existence as articulated in the Upanishads. The famous phrase from the Vedas "Ekam Sad Vipraha Bahuda Vadanti" the Truth is One, the wise call it by many names', is a foundational principle of our civilisation as well as of Constitution. I commend Sangeeta for this attractive publication.

Karan Singh

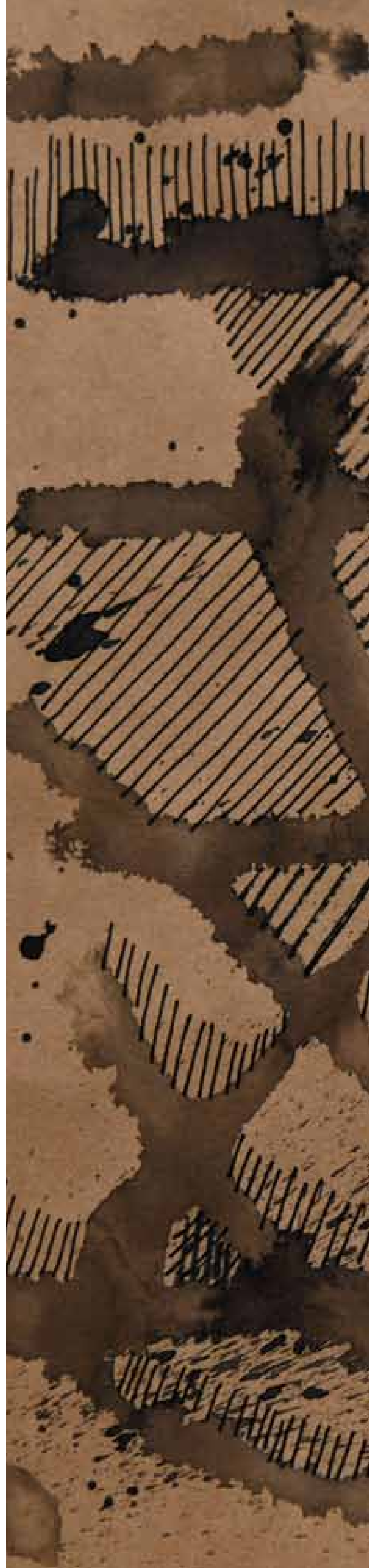

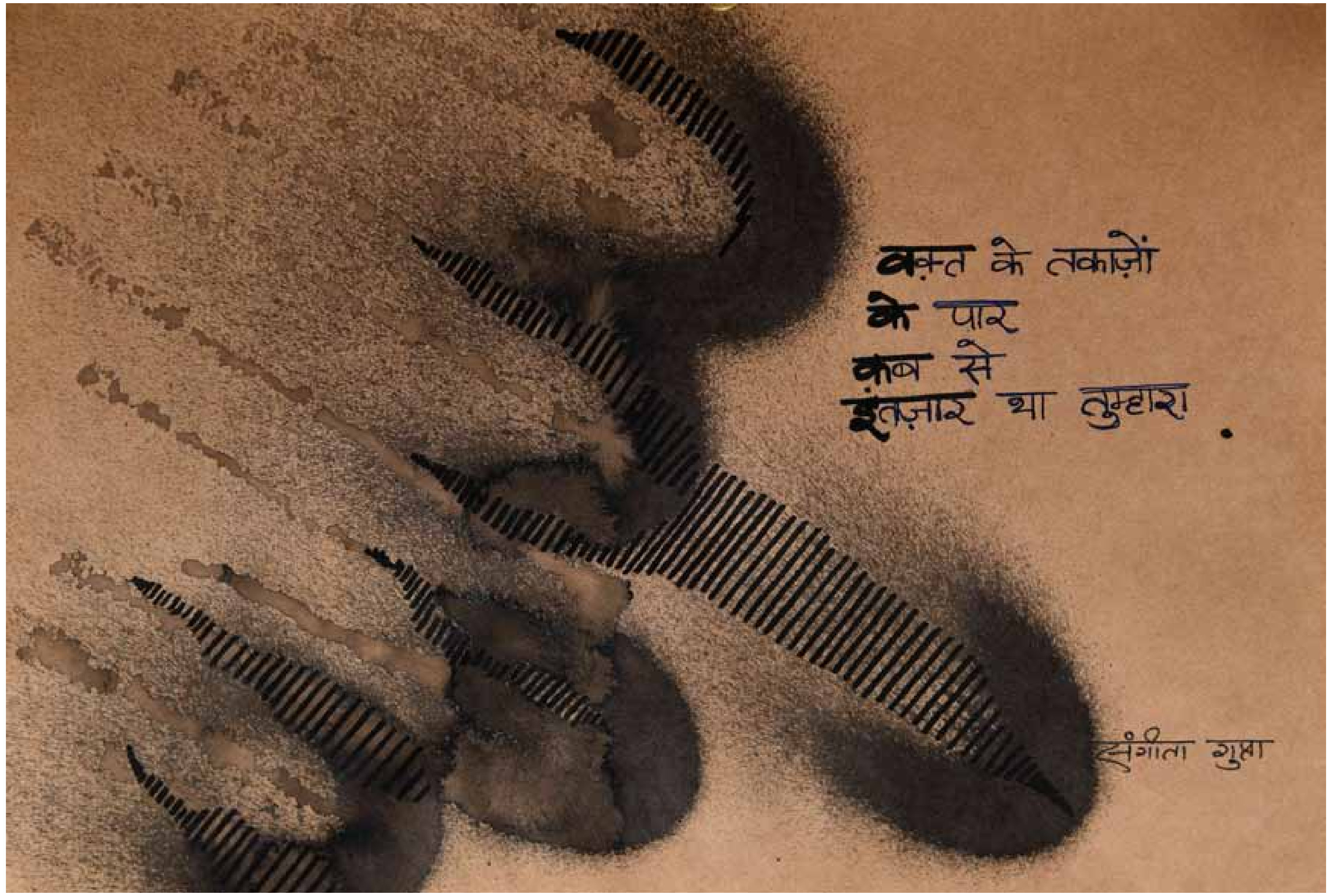

अपने चित्रों में हलके रंगों का प्रयोग करनेवाली संगीता प्राय: मिश्रित माध्यमों का प्रयोग करती रही हैं। श्वेत-श्याम और रंगीन स्याही की बारीक रेखाएँ, जलरंगों और पेस्टिल रंगों के स्पर्श और अब नये चित्रों में तैल रंगों का उपयोग — सब मिलकर एक सुखद प्रभाव पैदा करते हैं और नई संभावनाओं के प्रति आश्वस्त करते हैं। संगीता के काम करने के ढँग से सहज ही कला के प्रति उनकी गहरी आस्था और संवेदना का अनुमान लगाया जा सकता है, साथ ही यह जोड़ना भी आवश्यक है कि कलाकार की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल रंग और रेखाएँ ही नहीं है, बल्कि शब्द भी हैं। संगीता कवयित्री हैं और उनका कविता संग्रह 'समुद्र से लौटती नदी' इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है और इससे पहले भी दो काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

— हरिपाल त्यागी
1. 11. 99

नाख़त्म होते गुफ़्तगू के
सिलसिले यकबयक थम गये
एक चुप
शोर मचाता है

संगीता गुप्ता

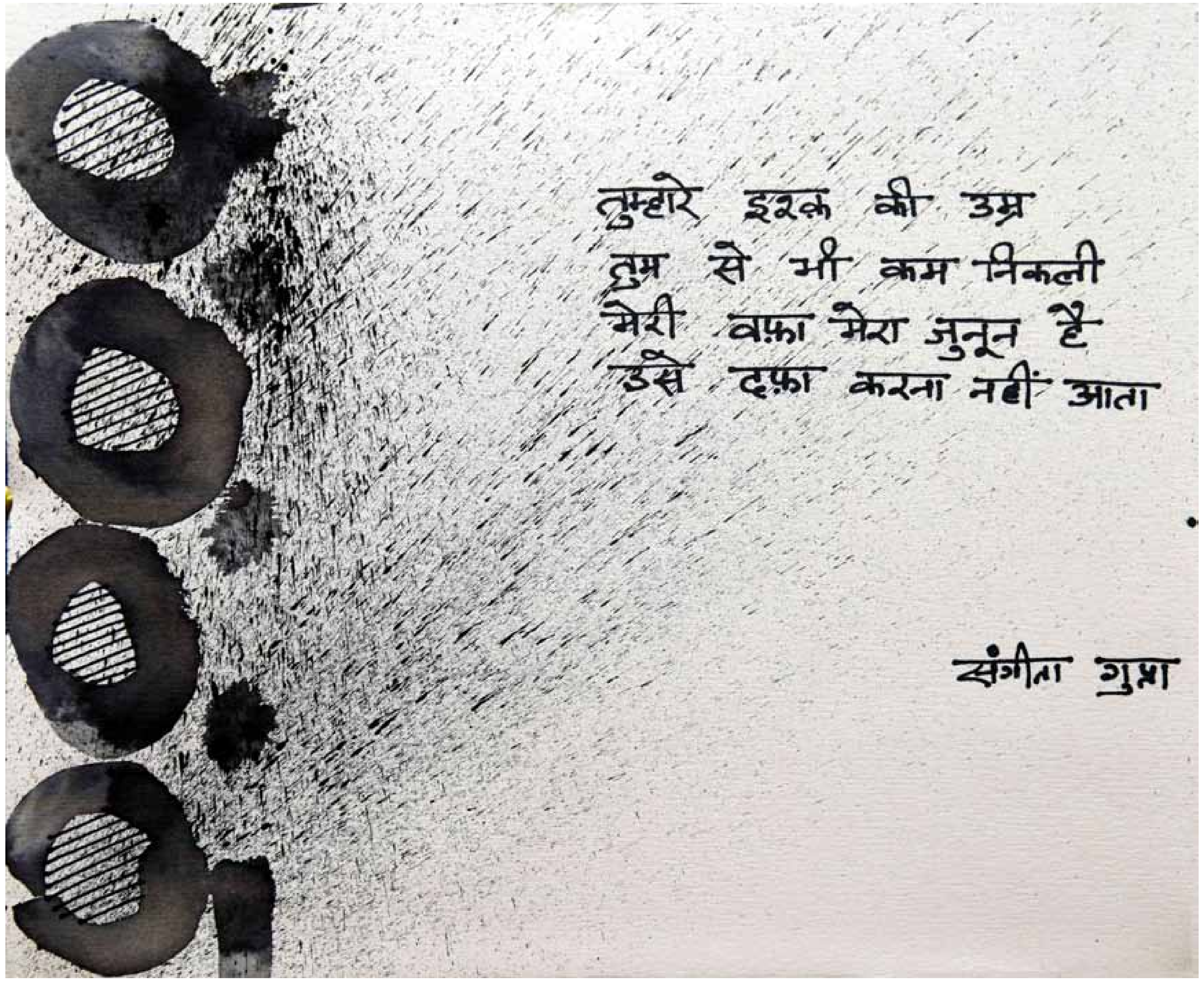
तुम्हारे इश्क़ की उम्र
तुम से भी कम निकली
मेरी वफ़ा मेरा जुनून है
उसे दफ़ा करना नहीं आता
संगीता गुप्ता

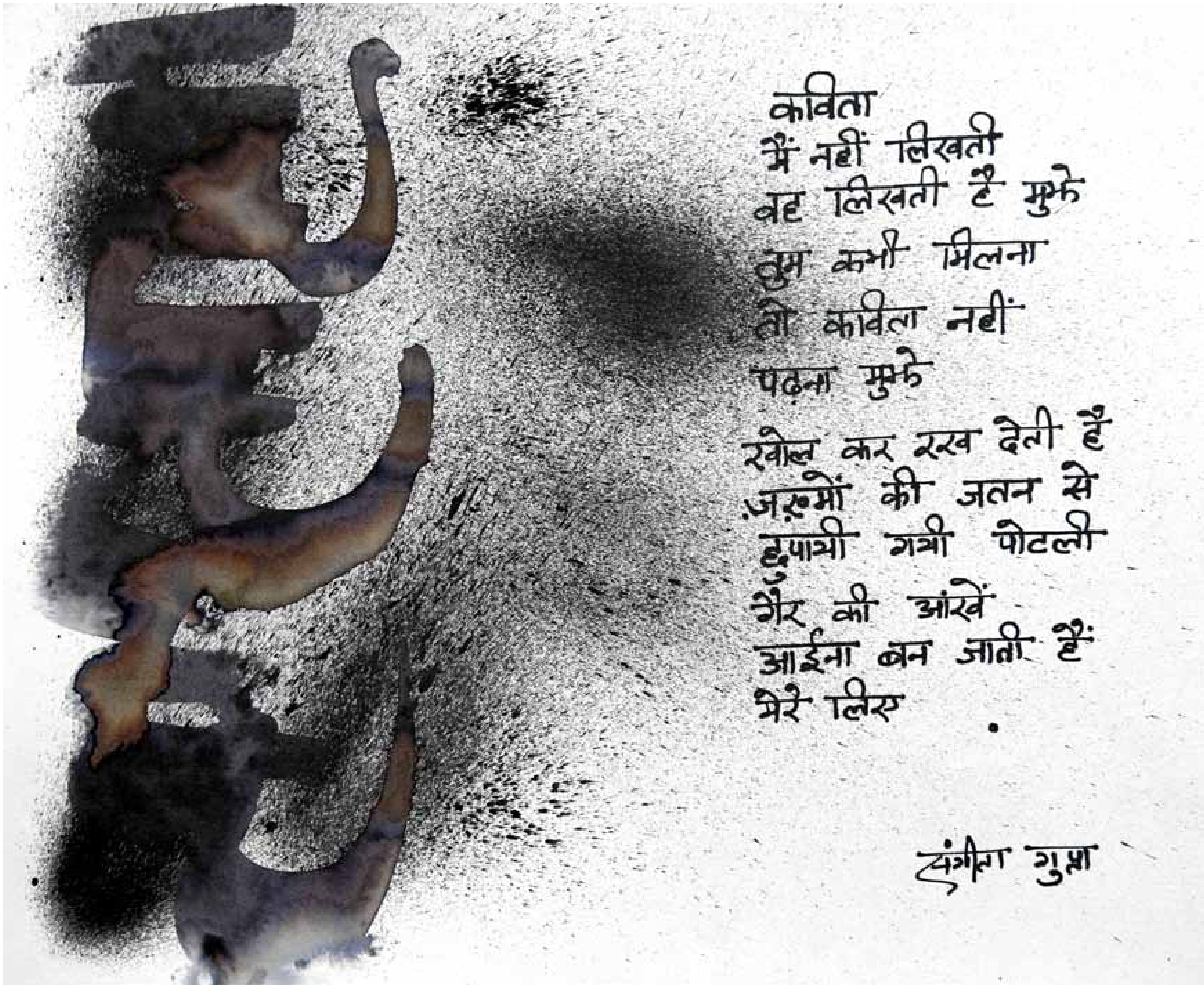
कविता
मैं नहीं लिखती
वह लिखती है मुझे
तुम कभी मिलना
तो कविता नहीं
पढ़ना मुझे
खोल कर रख देती है
ज़ख़्मों की जतन से
छुपायी गयी पोटली
गैर की आंखें
आईना बन जाती हैं
मेरे लिए
संगीता गुप्ता

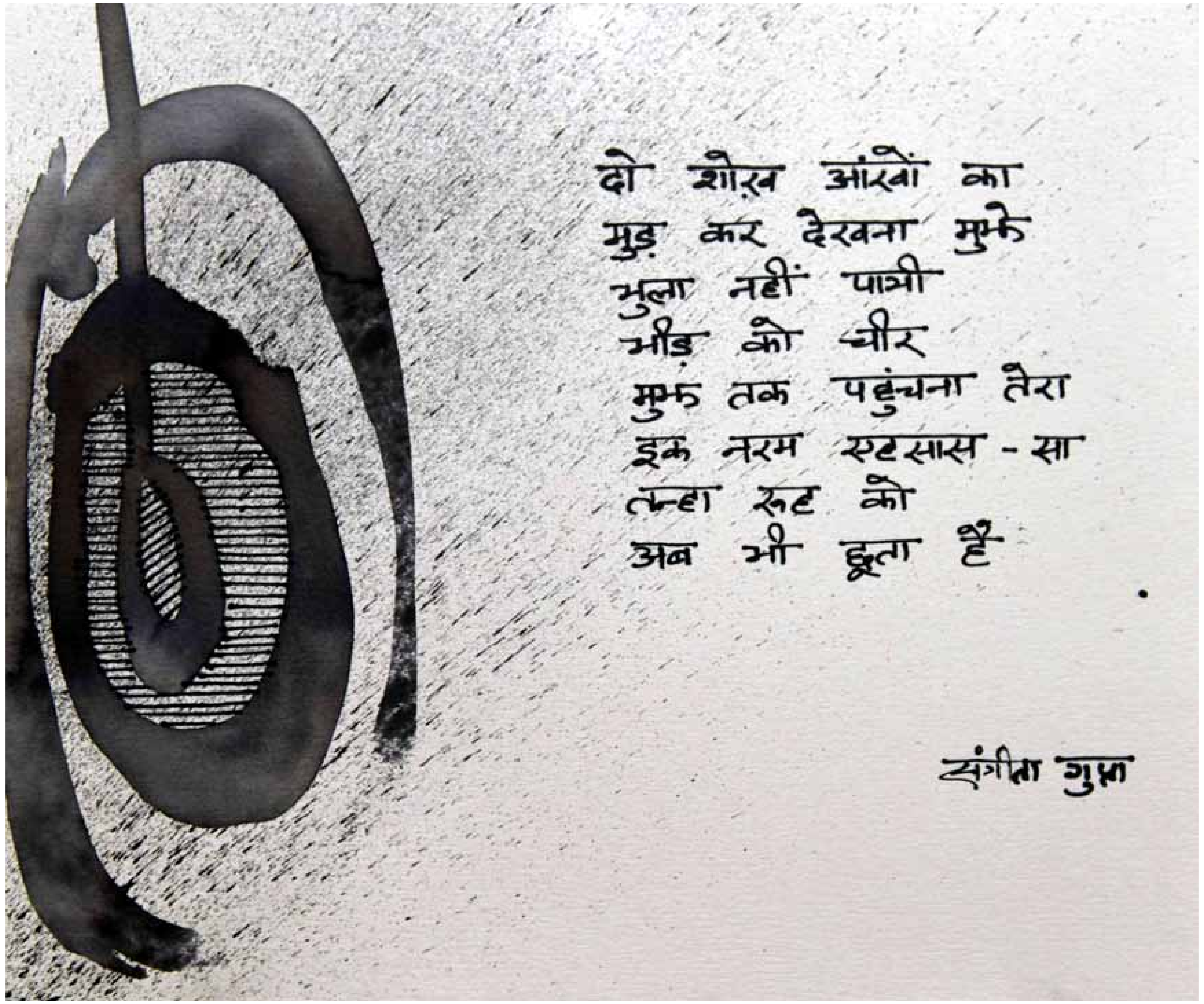
दो शोख़ आंखों का
मुड़ कर देखना मुझे
भुला नहीं पाती
भीड़ को चीर
मुझ तक पहुंचना तेरा
इक नरम एहसास - सा
तन्हा रूह को
अब भी छूता है
संगीता गुप्ता

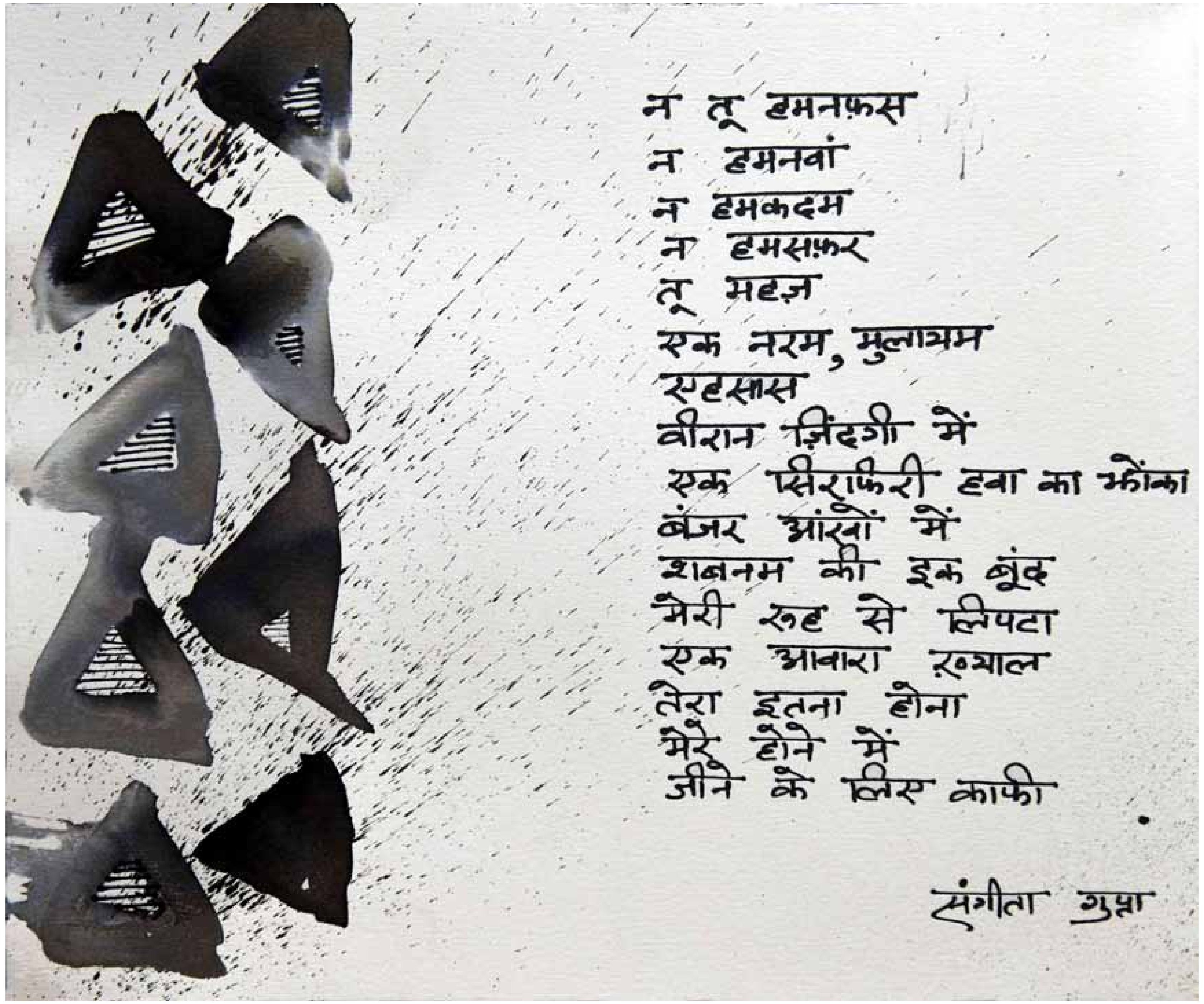
न तू हमनफ़स
न हमनवां
न हमकदम
न हमसफ़र
तू महज़
एक नरम, मुलायम
एहसास
वीरान ज़िंदगी में
एक सिराफिरी हवा का झोंका
बंजर आंखों में
शबनम की इक बूंद
मेरी रूह से लिपटा
एक आवारा ख़्याल
तेरा इतना होना
मेरे होने में
जीने के लिए काफी
संगीता गुप्ता

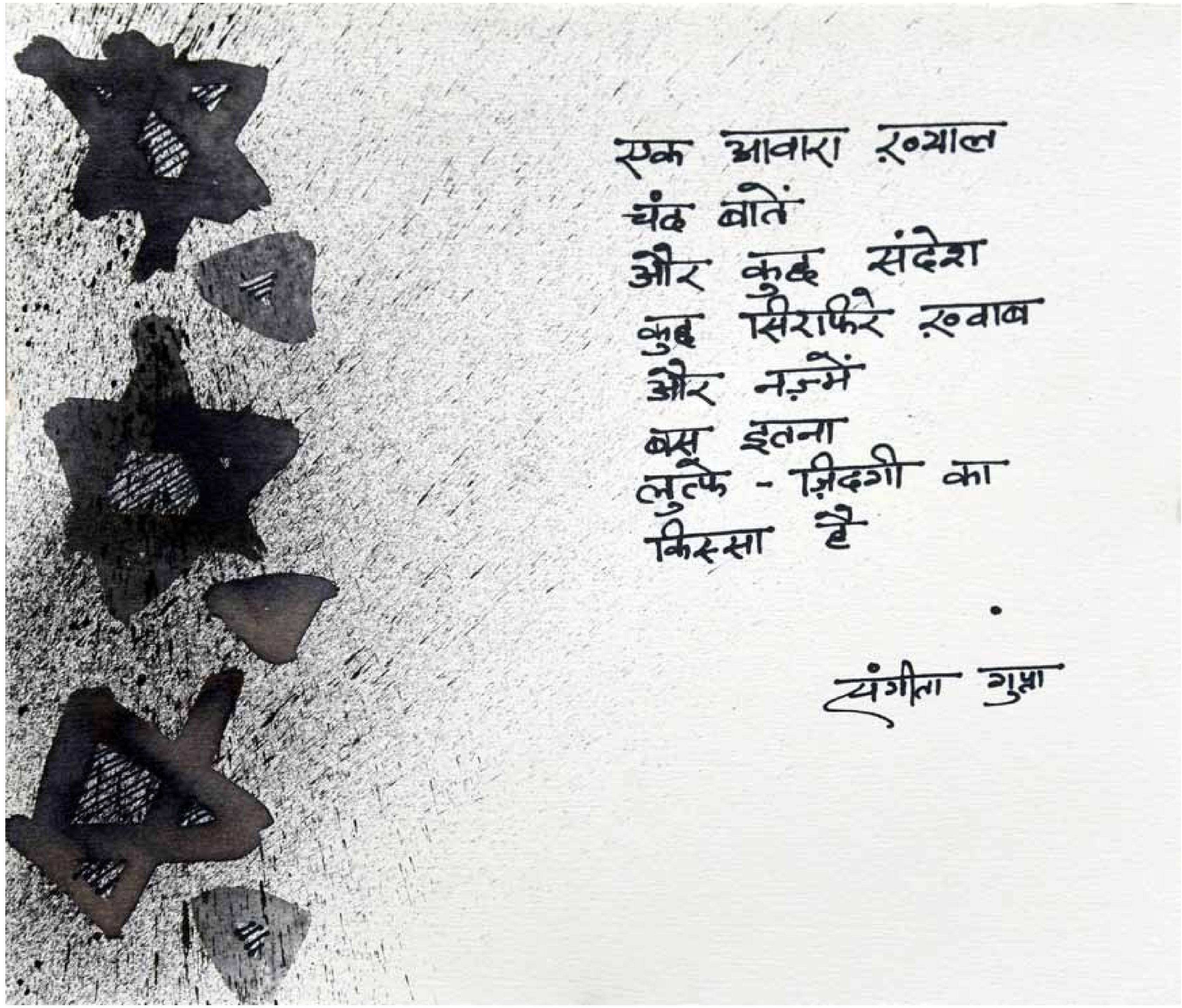
एक आवारा ख्याल
चंद बातें
और कुछ संदेश
कुछ सिरफिरे ख्वाब
और नज़्में
बस इतना
लुत्फ़े - ज़िंदगी का
किस्सा है
संगीता गुप्ता

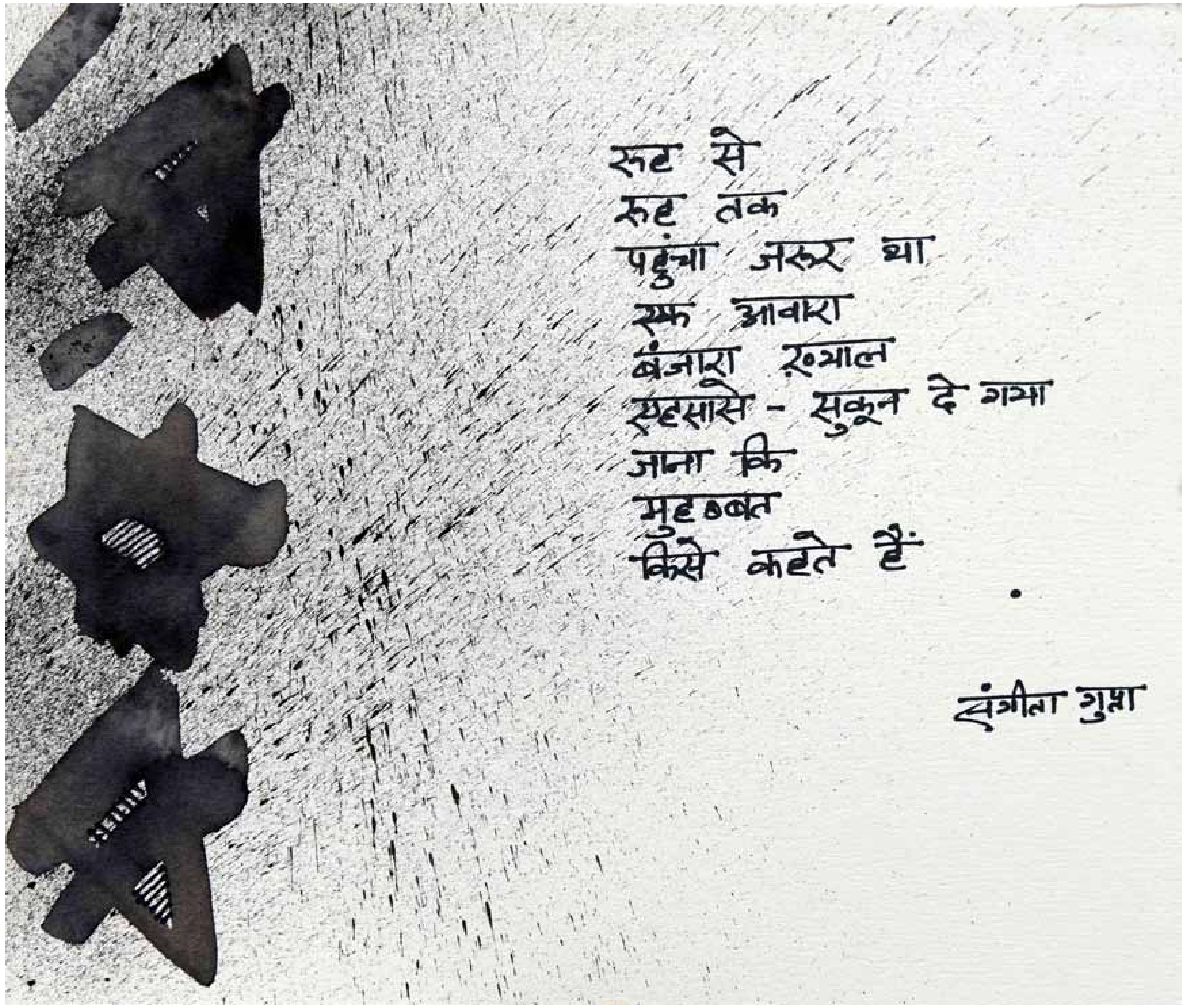
रूह से
रूह तक
पहुंचा जरूर था
एक आवारा
बंजारा ख्याल
एहसासे - सुकून दे गया
जाना कि
मुहब्बत
किसे कहते हैं
संगीता गुप्ता

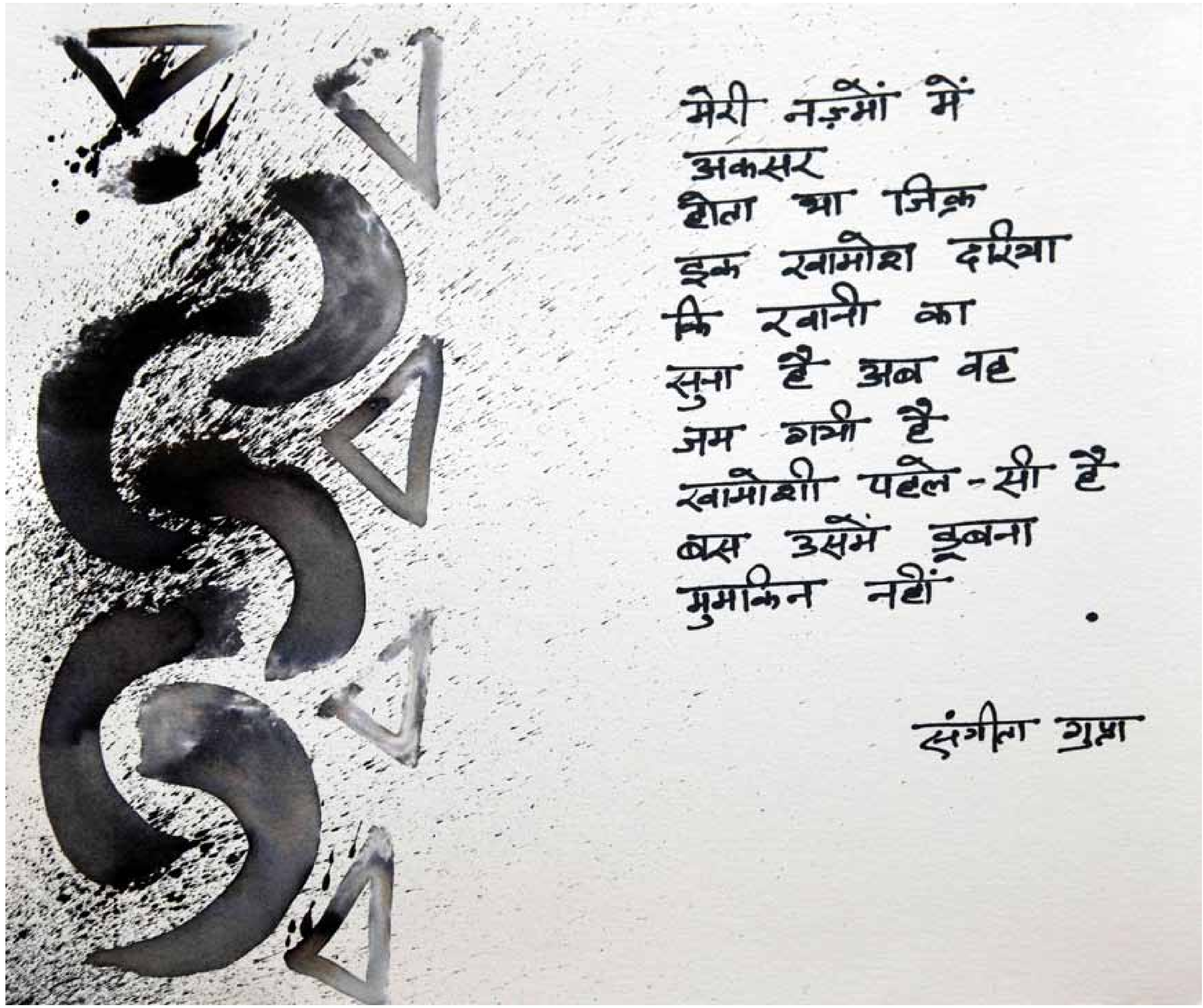
मेरी नज़्मों में
अकसर
होता था ज़िक्र
इक खामोश दरिया
कि रवानी का
सुना है अब वह
जम गयी है
खामोशी पहले-सी है
बस उसमें डूबना
मुमकिन नहीं
संगीता गुप्ता

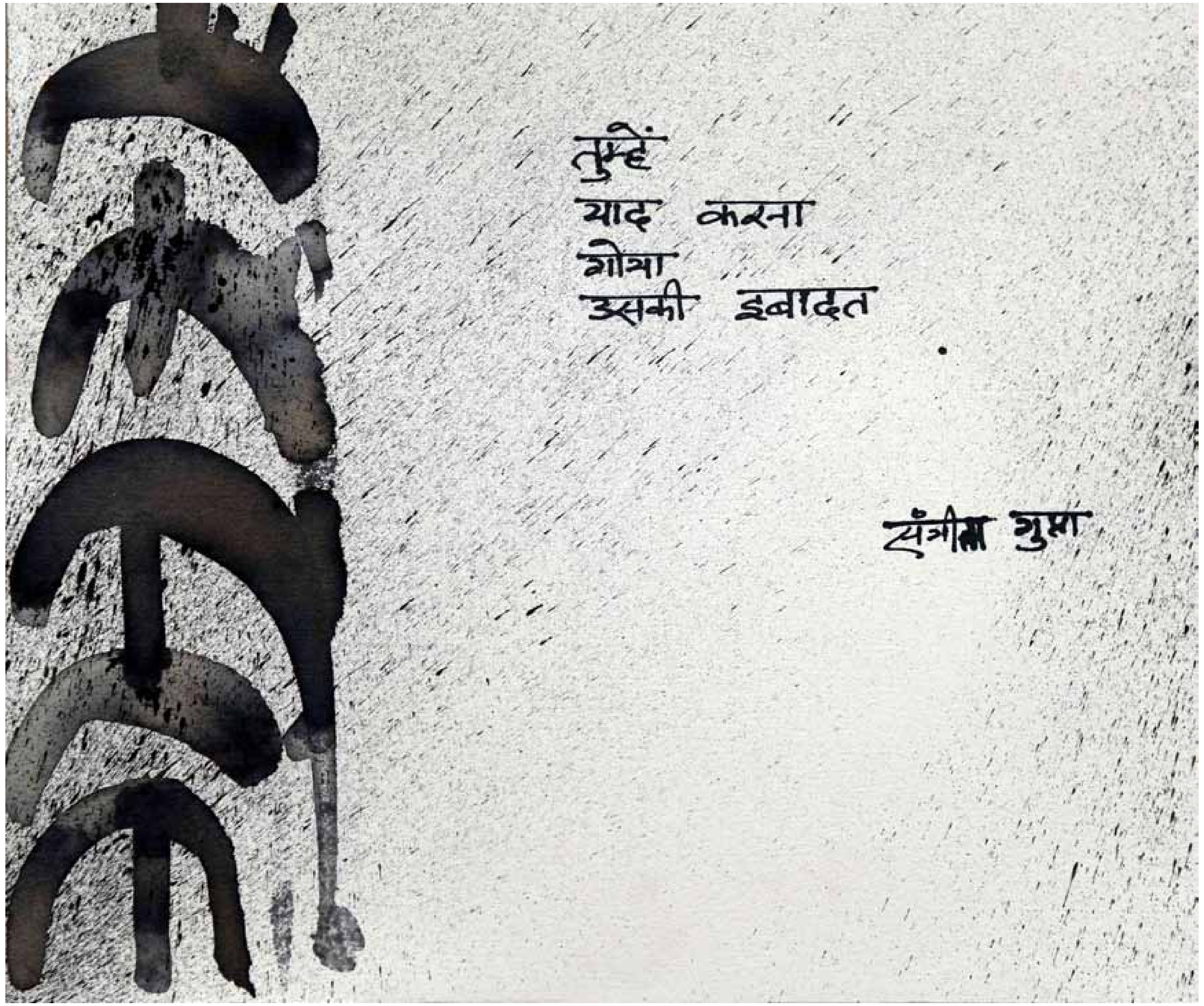
तुम्हें
याद करना
गोया
उसकी इबादत
संगीता गुप्ता

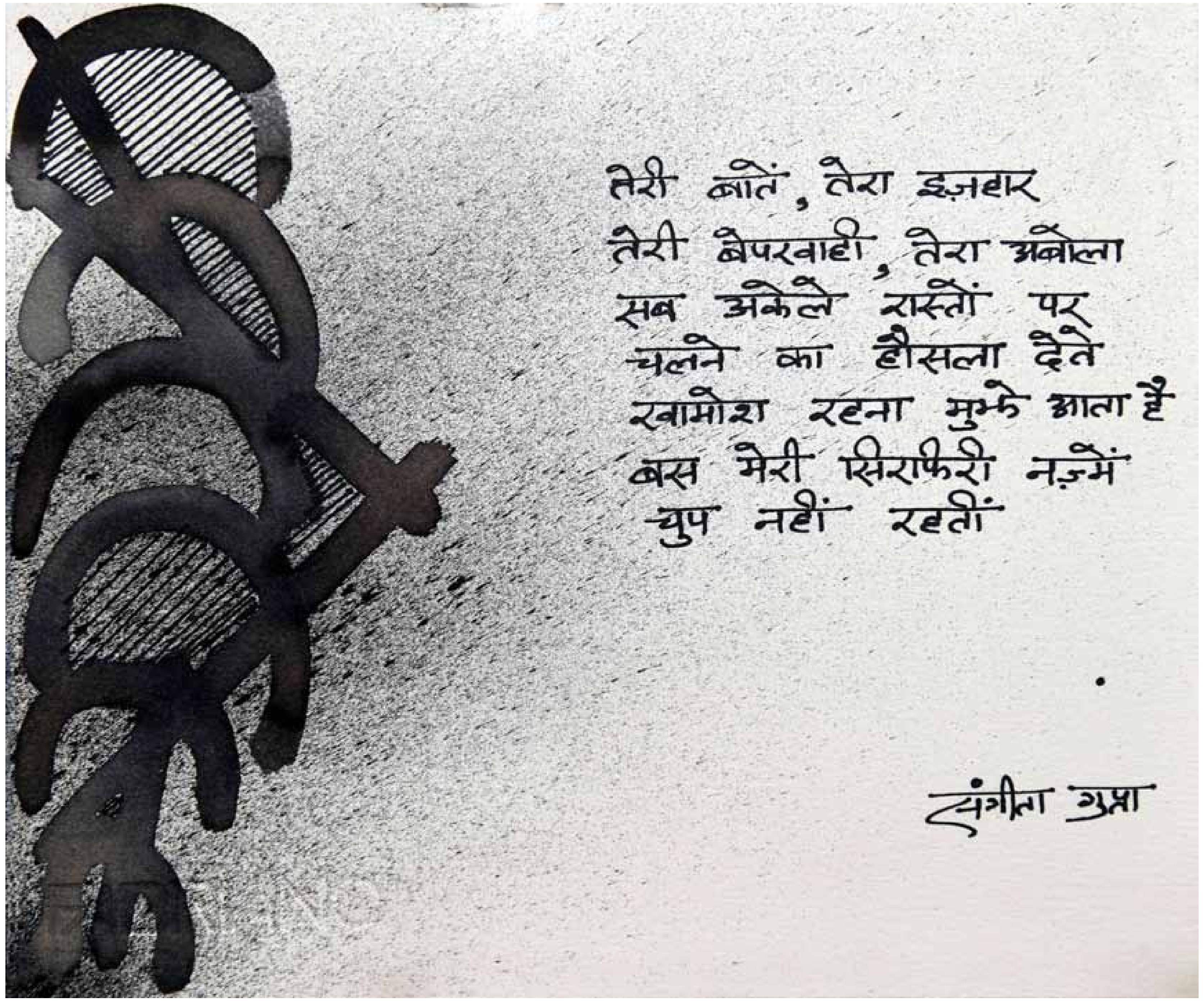
तेरी बातें, तेरा इज़हार
तेरी बेपरवाही, तेरा अबोला
सब अकेले रास्तों पर
चलने का हौसला देते
खामोश रहना मुझे आता है
बस मेरी सिरफिरी नज़्में
चुप नहीं रहतीं
संगीता गुप्ता

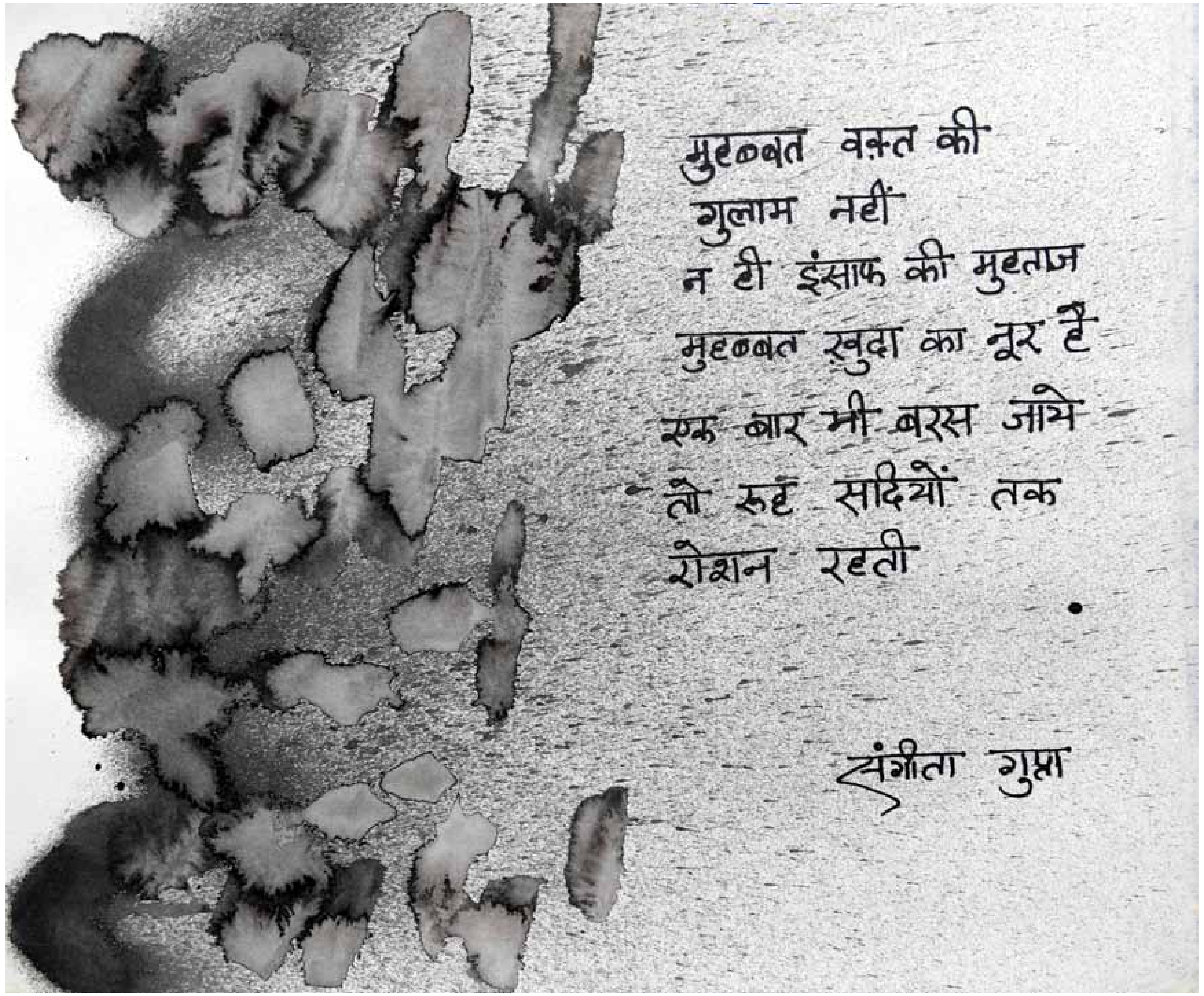
मुहब्बत वक़्त की
गुलाम नहीं
न ही इंसाफ की मुहताज
मुहब्बत ख़ुदा का नूर है
एक बार भी बरस जाये
तो रूह सदियों तक
रोशन रहती
संगीता गुप्ता

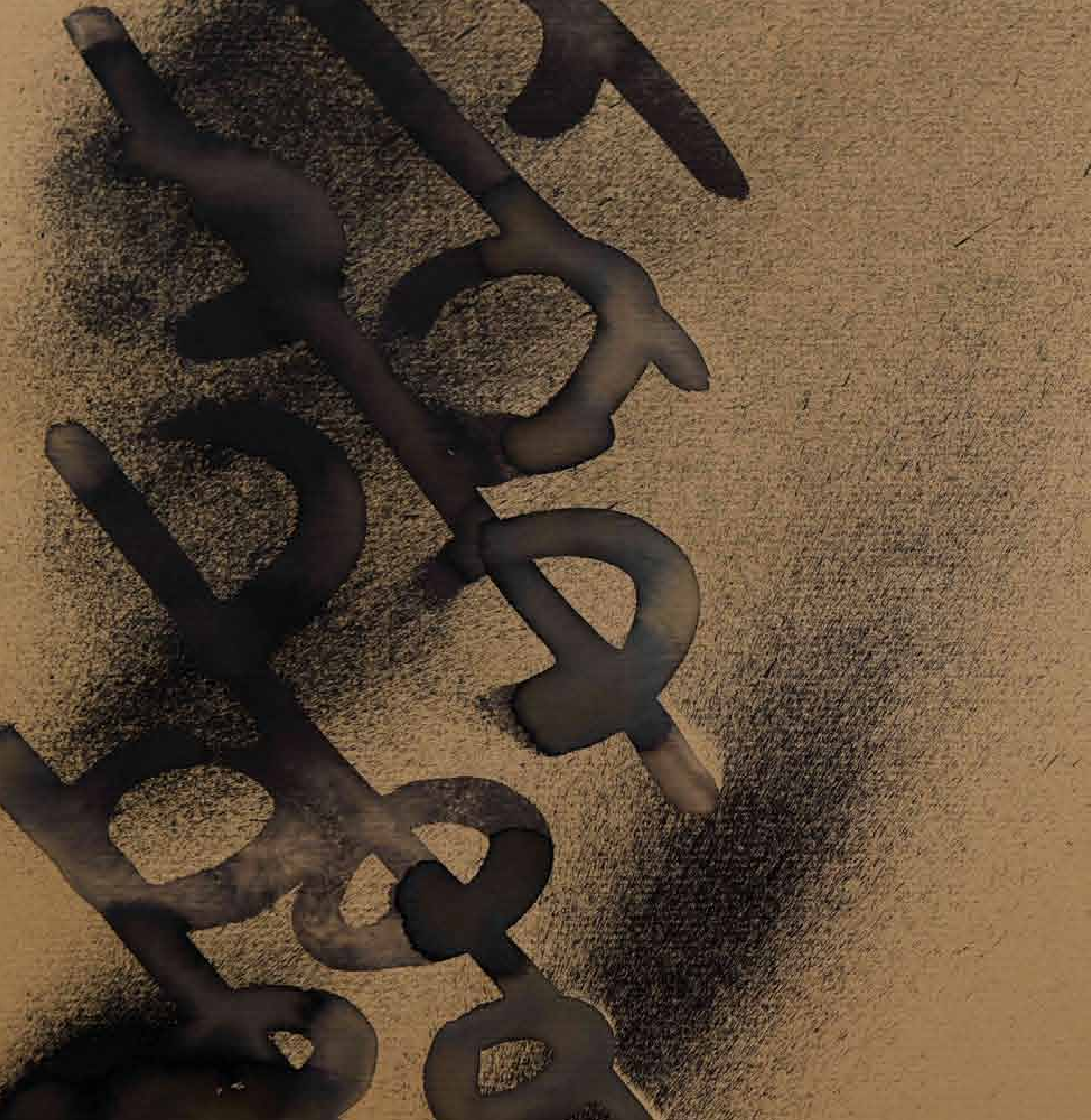

औरत

उसे देख
बार-बार, हर बार
यूं लगा
एक जमी हुई झील वह
लाख चाहे तब भी
ख़ुद तैर नहीं पायेगी उसमें
और
कोई दूसरा भी उसमें
कहां डूब पायेगा
•

संगीता गुप्ता

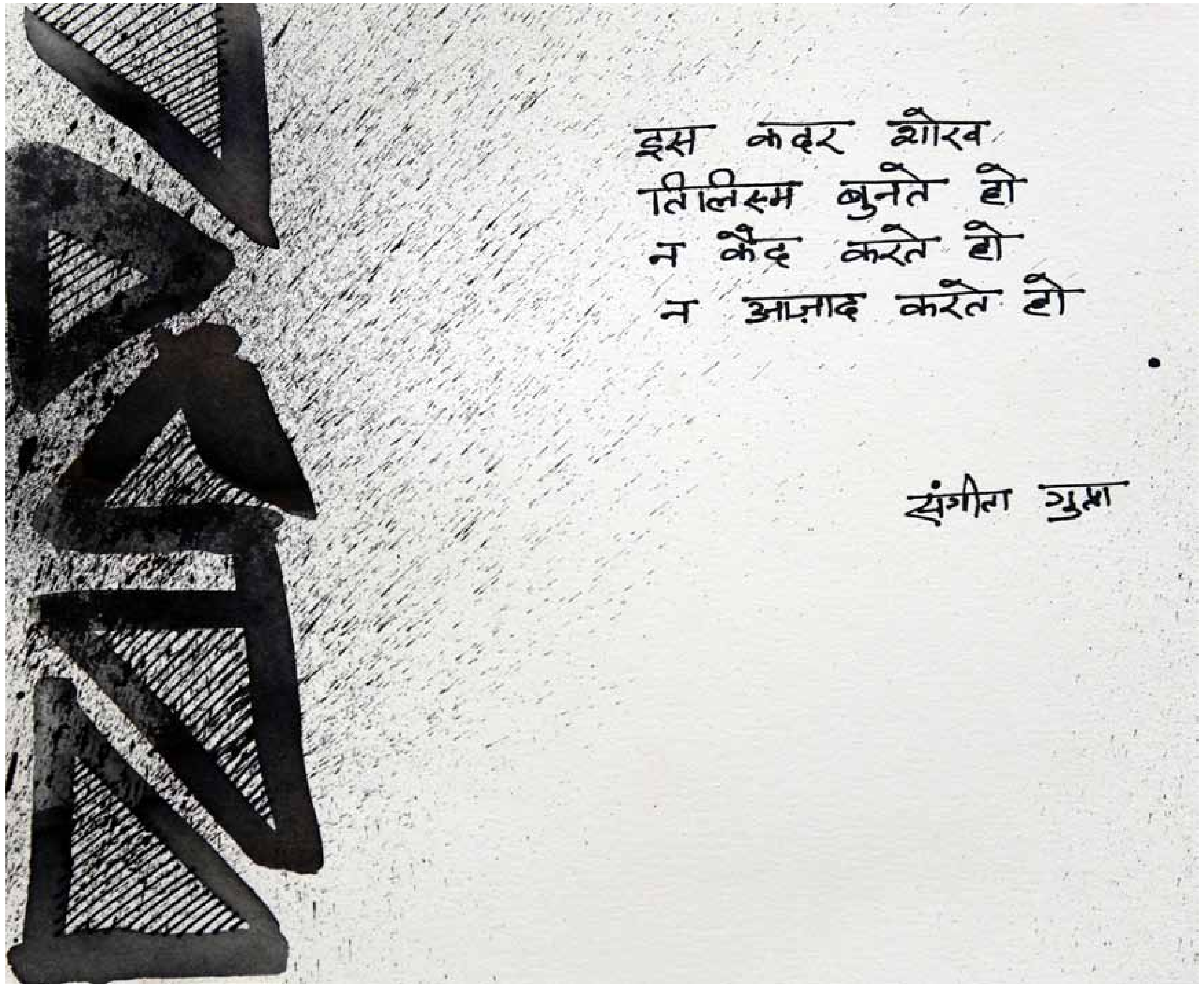
इस कदर शौरव
तिलिस्म बुनते हो
न कैद करते हो
न आज़ाद करते हो
संगीता गुप्ता

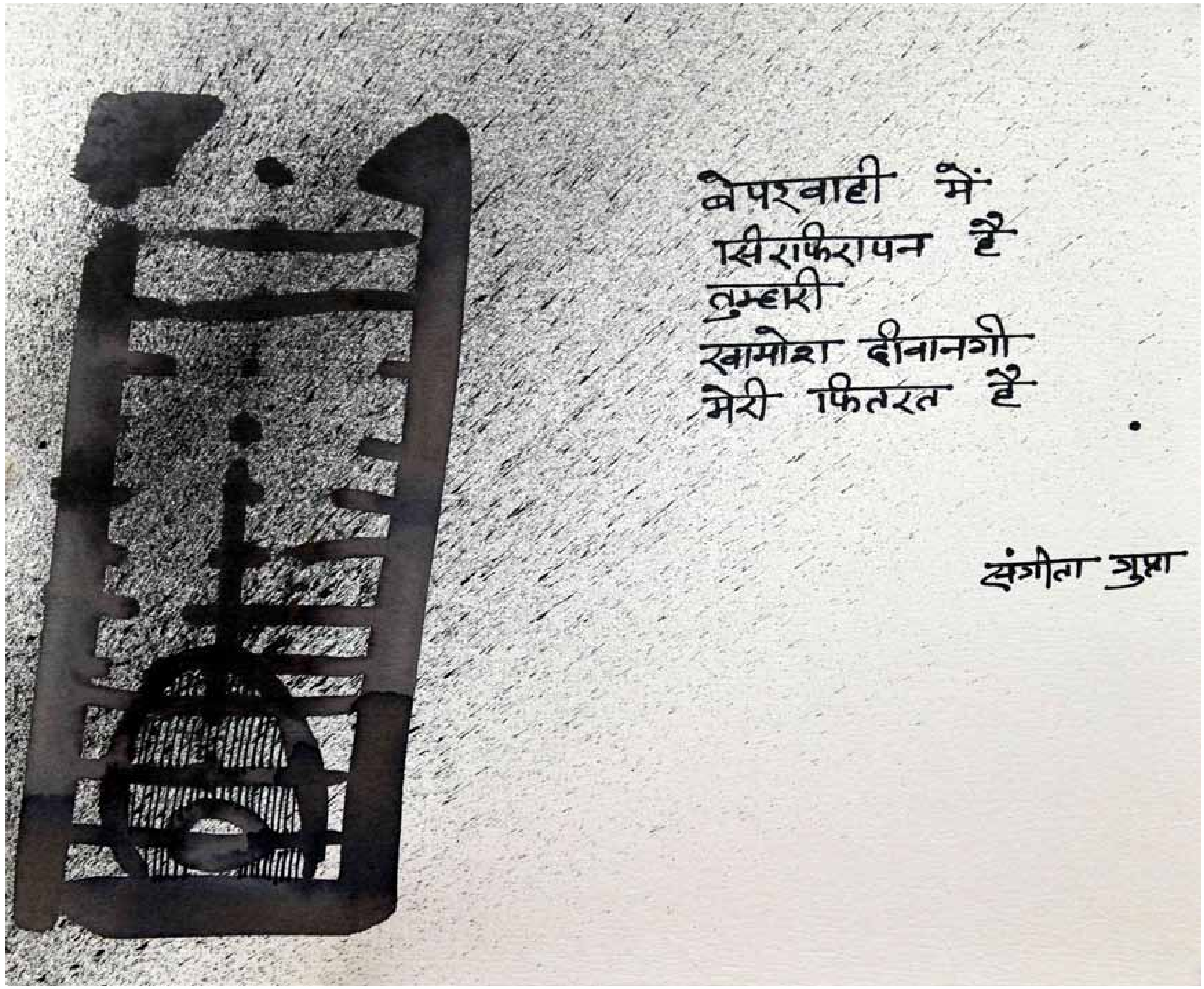
बेपरवाही में
सिराफिरापन है
तुम्हरी
खामोश दीवानगी
मेरी फितरत है
संगीता गुप्ता

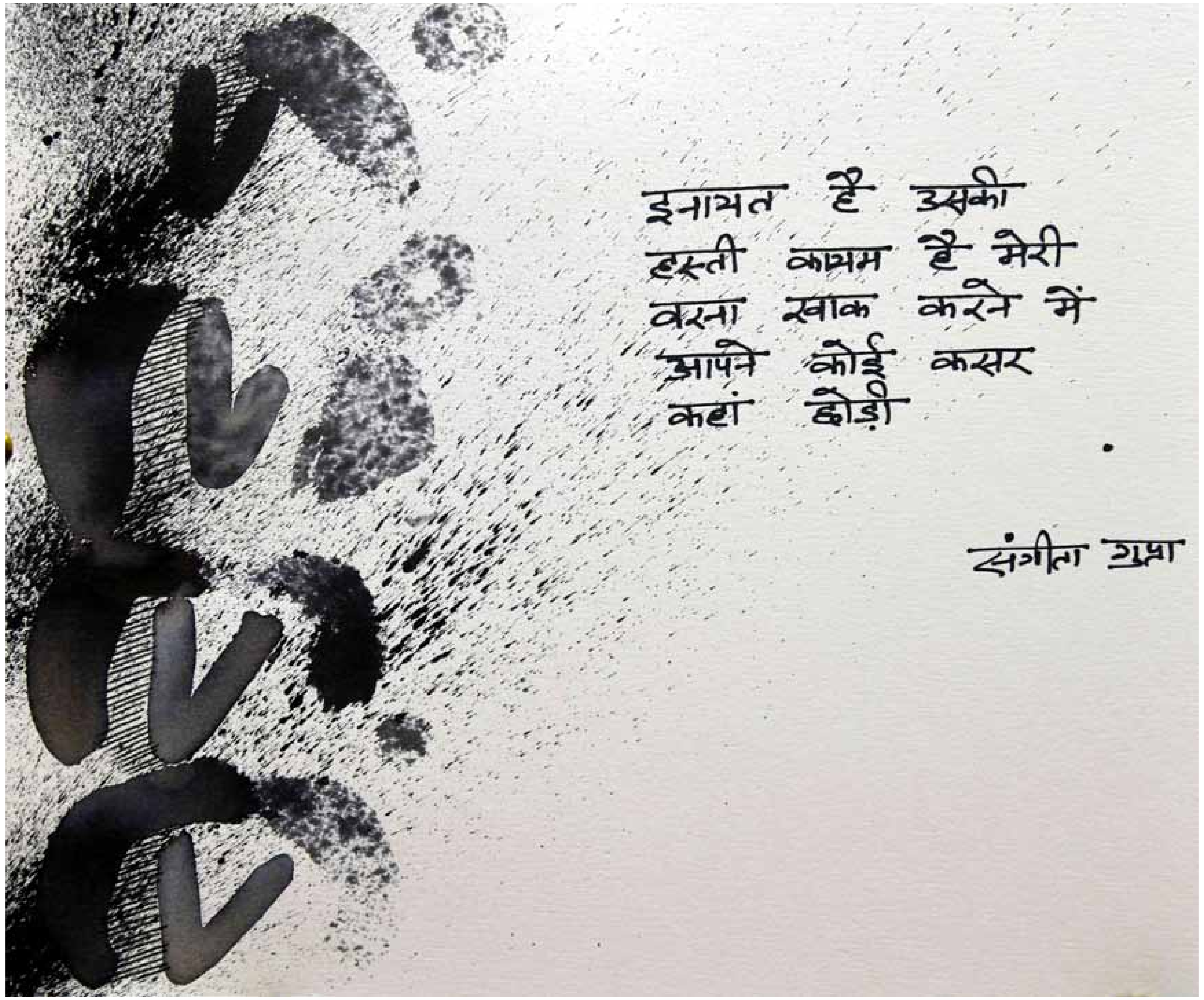
इनायत है उसकी
हस्ती कायम है मेरी
वरना खाक करने में
आपने कोई कसर
कहां छोड़ी
संगीता गुप्ता

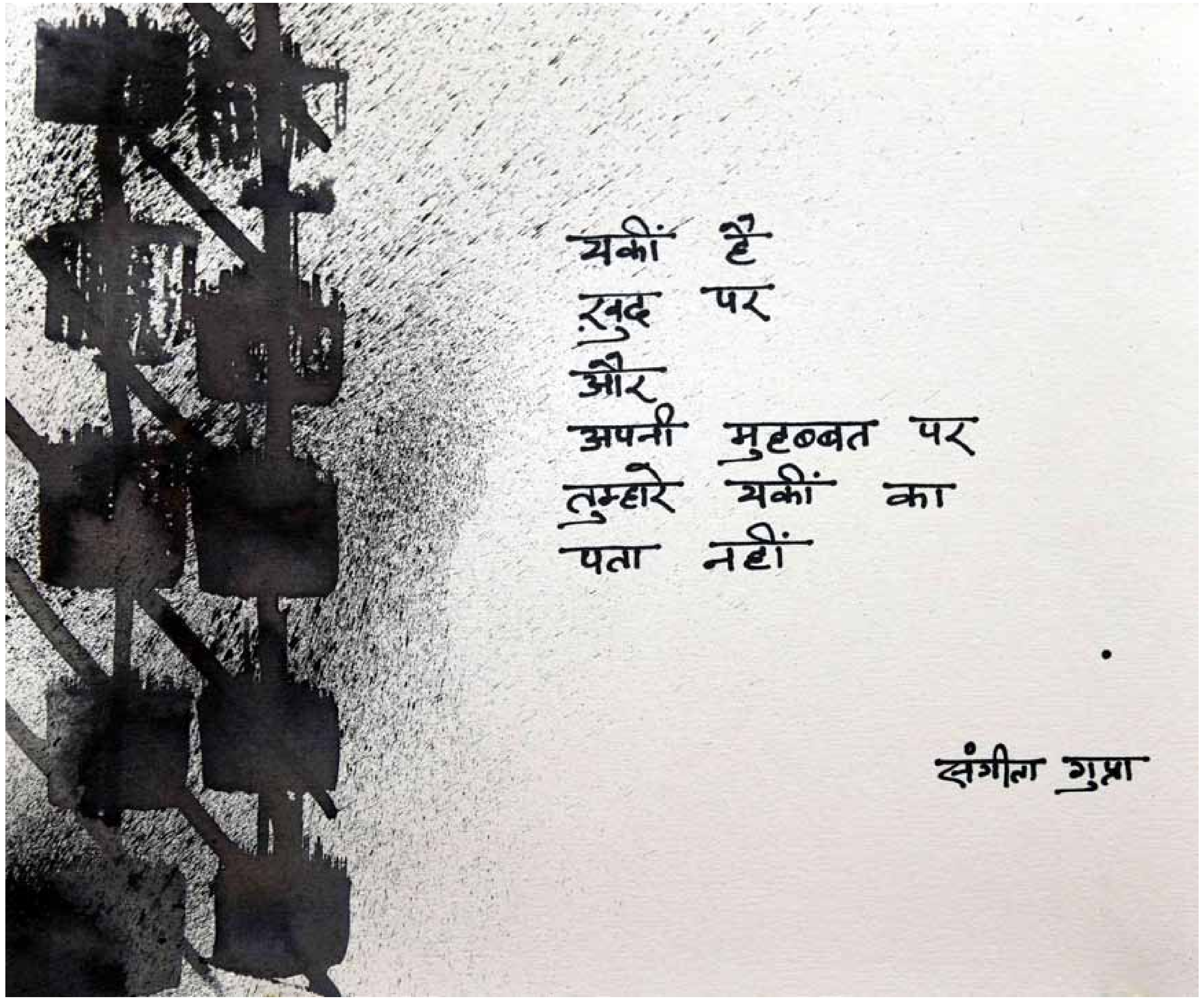
यकीं है
ख़ुद पर
और
अपनी मुहब्बत पर
तुम्हारे यकीं का
पता नहीं
संगीता गुप्ता

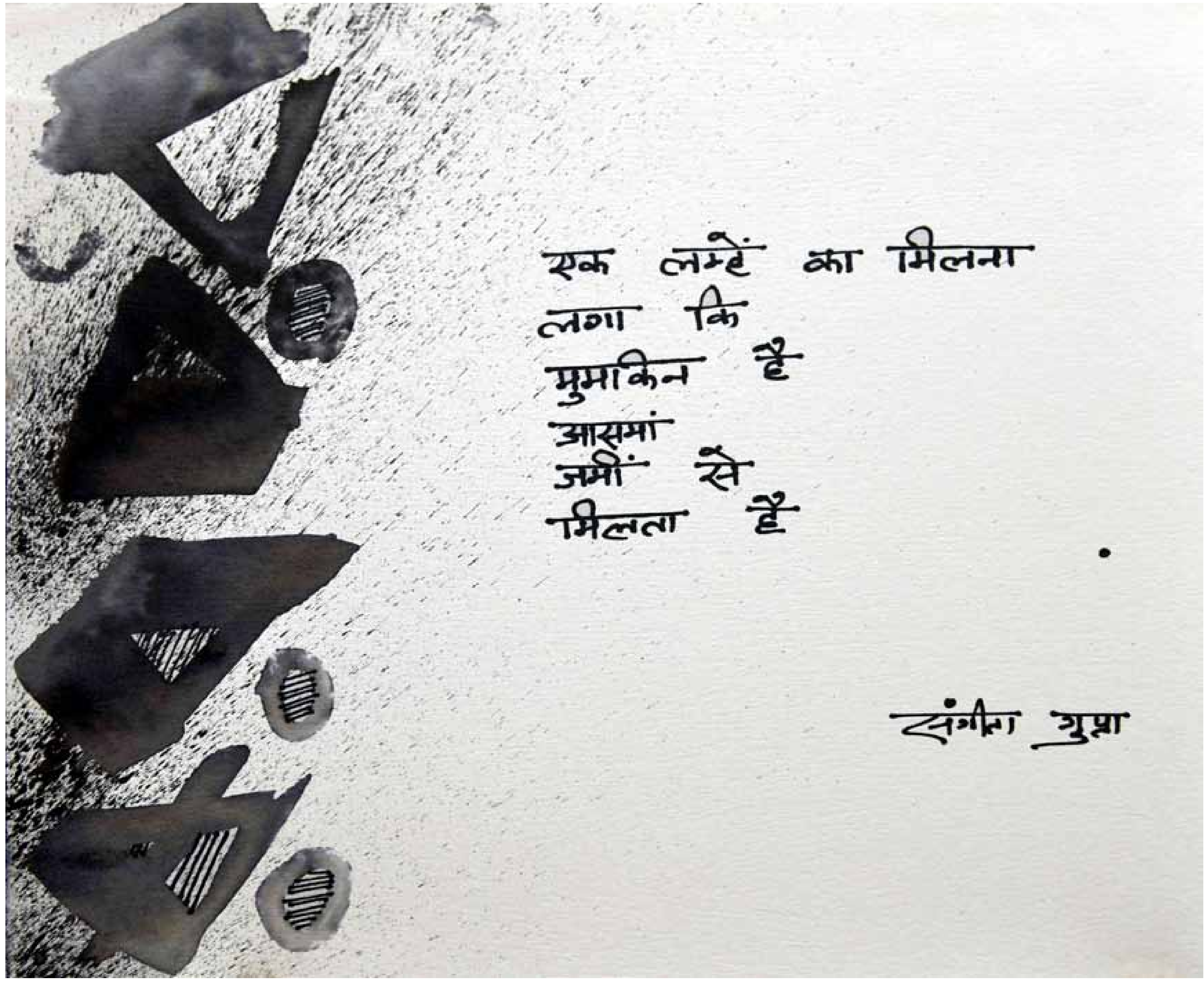
एक लम्हें का मिलना
लगा कि
मुमकिन है
आसमां
जमीं से
मिलता है
संगीता गुप्ता

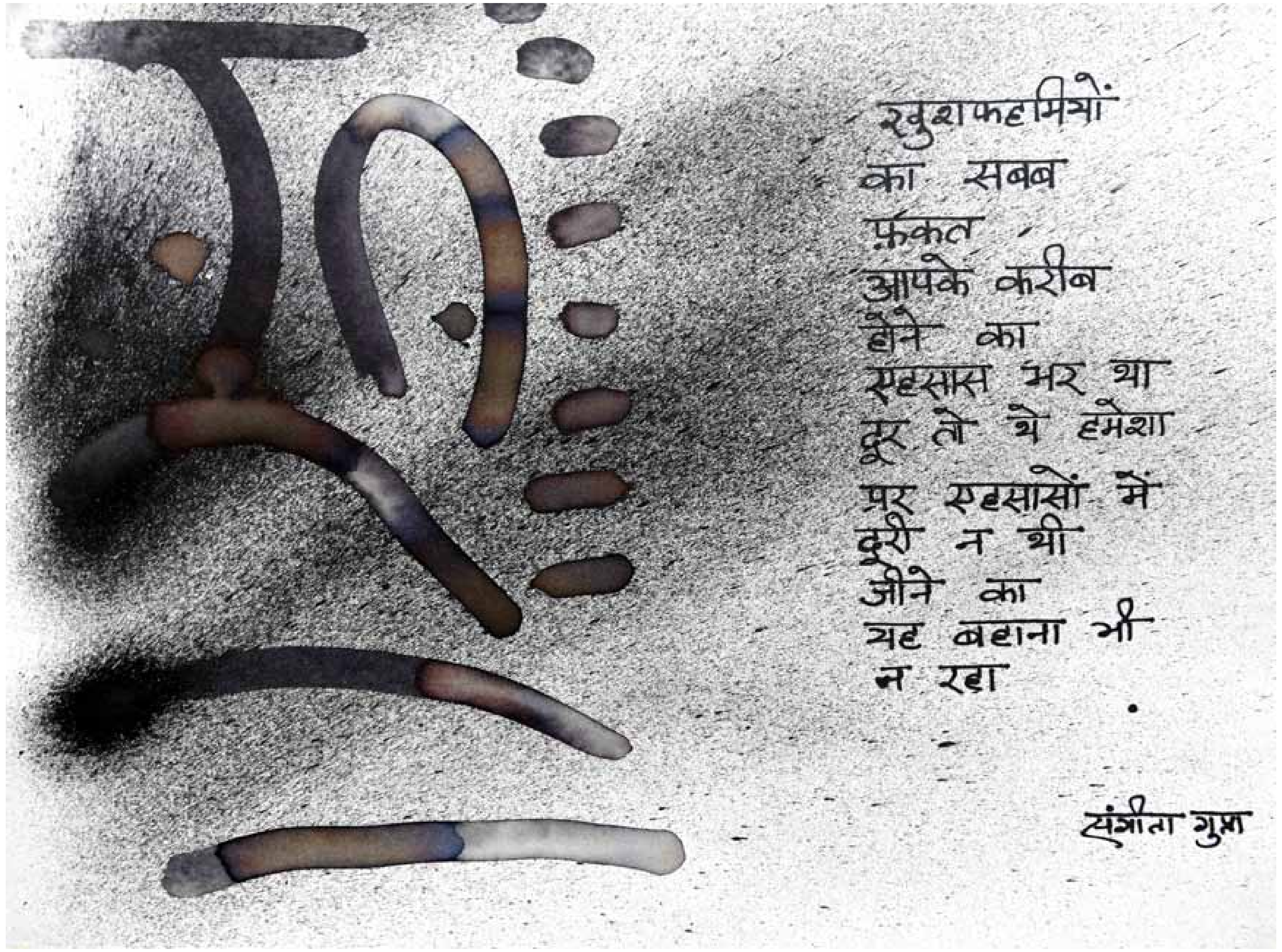
खुशफहमियों
का सबब
फ़कत
आपके करीब
होने का
एहसास भर था
दूर तो थे हमेशा
पर एहसासों में
दूरी न थी
जीने का
यह बहाना भी
न रहा
संगीता गुप्ता

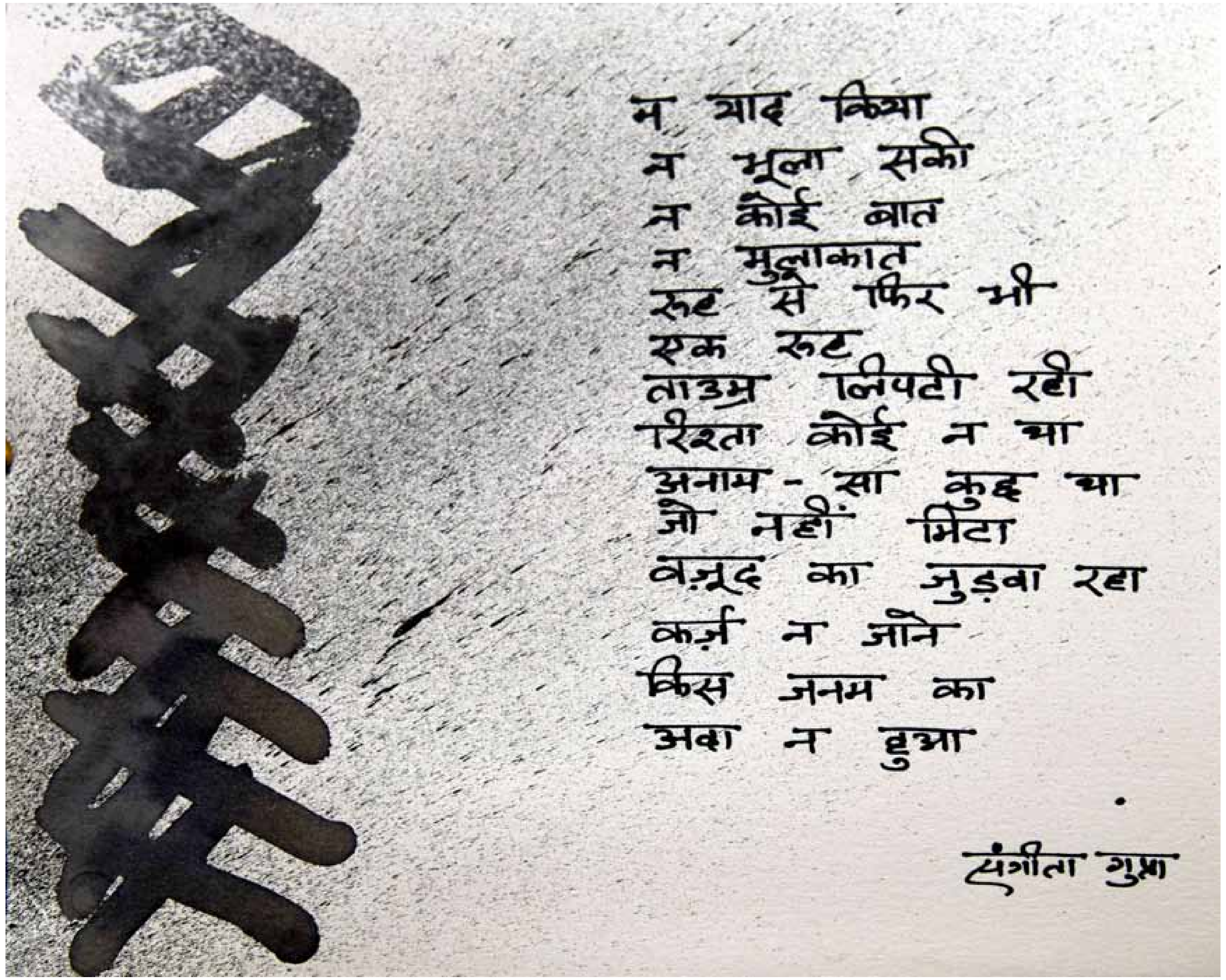
न याद किया
न भुला सकी
न कोई बात
न मुलाकात
रूह से फिर भी
एक रूह
ताउम्र लिपटी रही
रिश्ता कोई न था
अनाम - सा कुछ था
जो नहीं मिटा
वजूद का जुड़वा रहा
कर्ज़ न जाने
किस जनम का
अदा न हुआ
संगीता गुप्ता

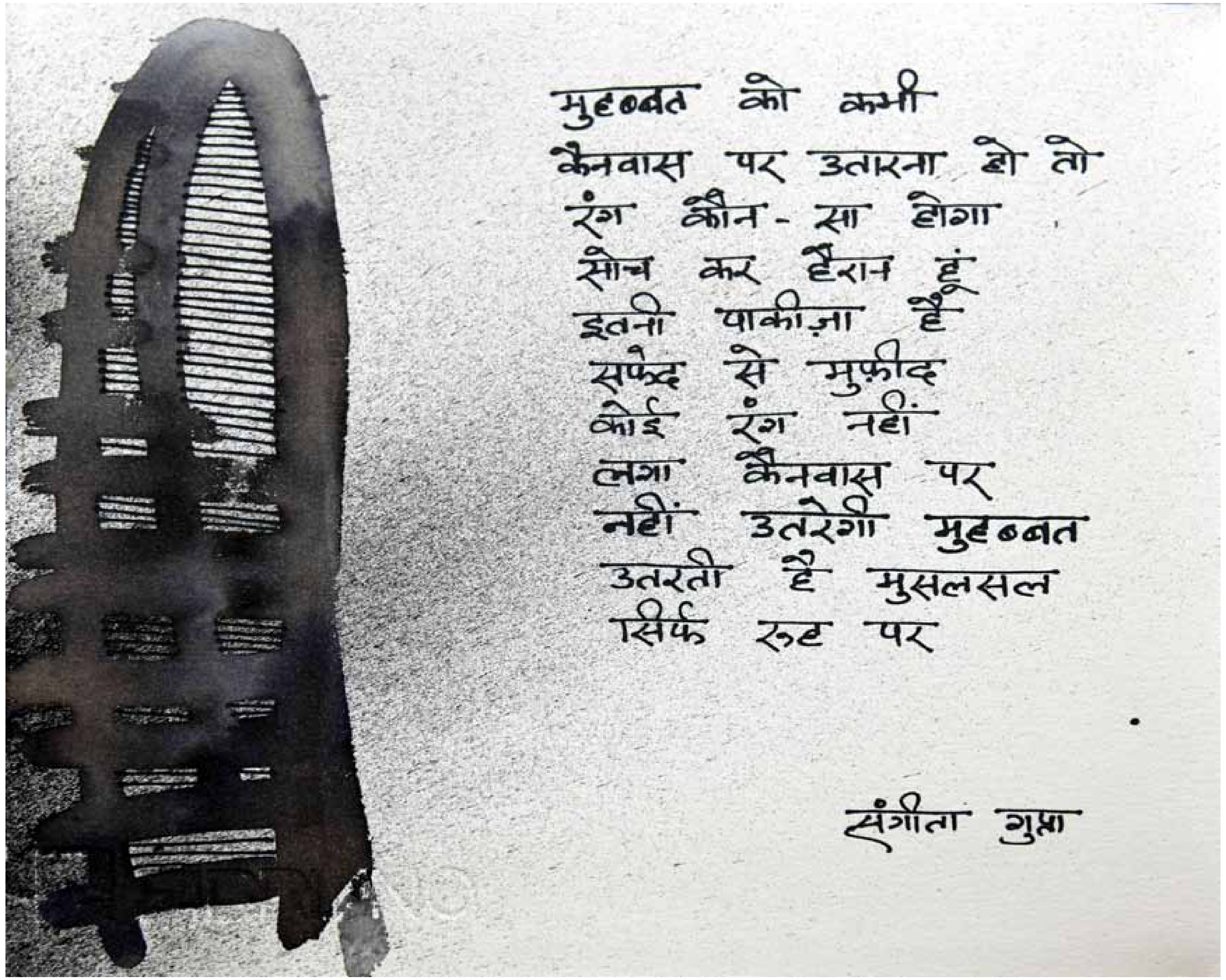
मुहब्बत को कभी
कैनवास पर उतारना हो तो
रंग कौन - सा होगा
सोच कर हैरान हूं
इतनी पाकीज़ा है
सफेद से मुफ़ीद
कोई रंग नहीं
लगा कैनवास पर
नहीं उतरेगी मुहब्बत
उतरती है मुसलसल
सिर्फ रूह पर
संगीता गुप्ता

अपने आपको
मिटा देगी
इस हठ से
बांट दिया
स्वयं को
असंख्य टुकड़ो में
खंडो में बंटी वह
पूर्ण हुई

संगीता गुप्ता

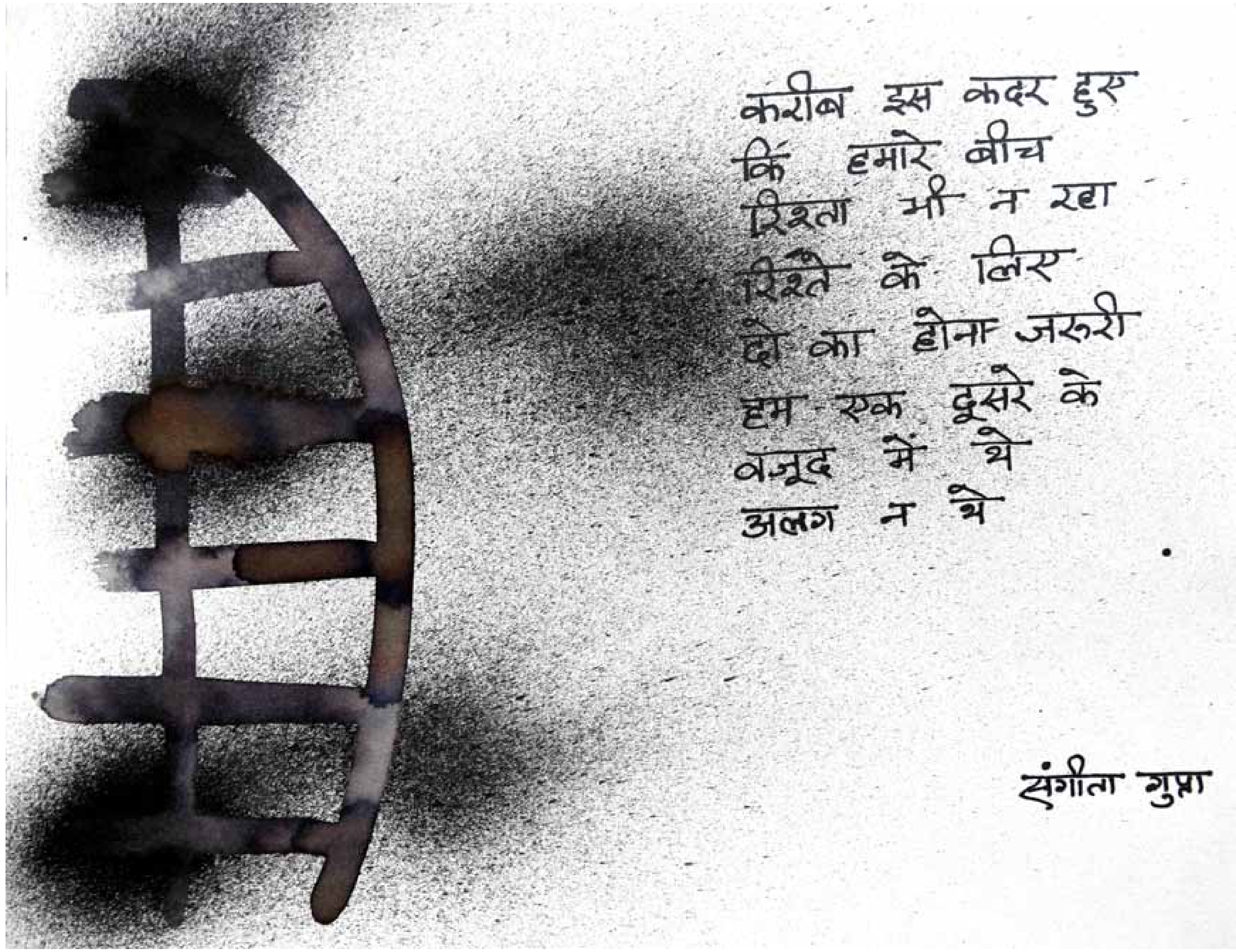
करीब इस कदर हुए
कि हमारे बीच
रिश्ता भी न रहा
रिश्ते के लिए
दो का होना जरूरी
हम एक दूसरे के
वजूद में थे
अलग न थे
संगीता गुप्ता

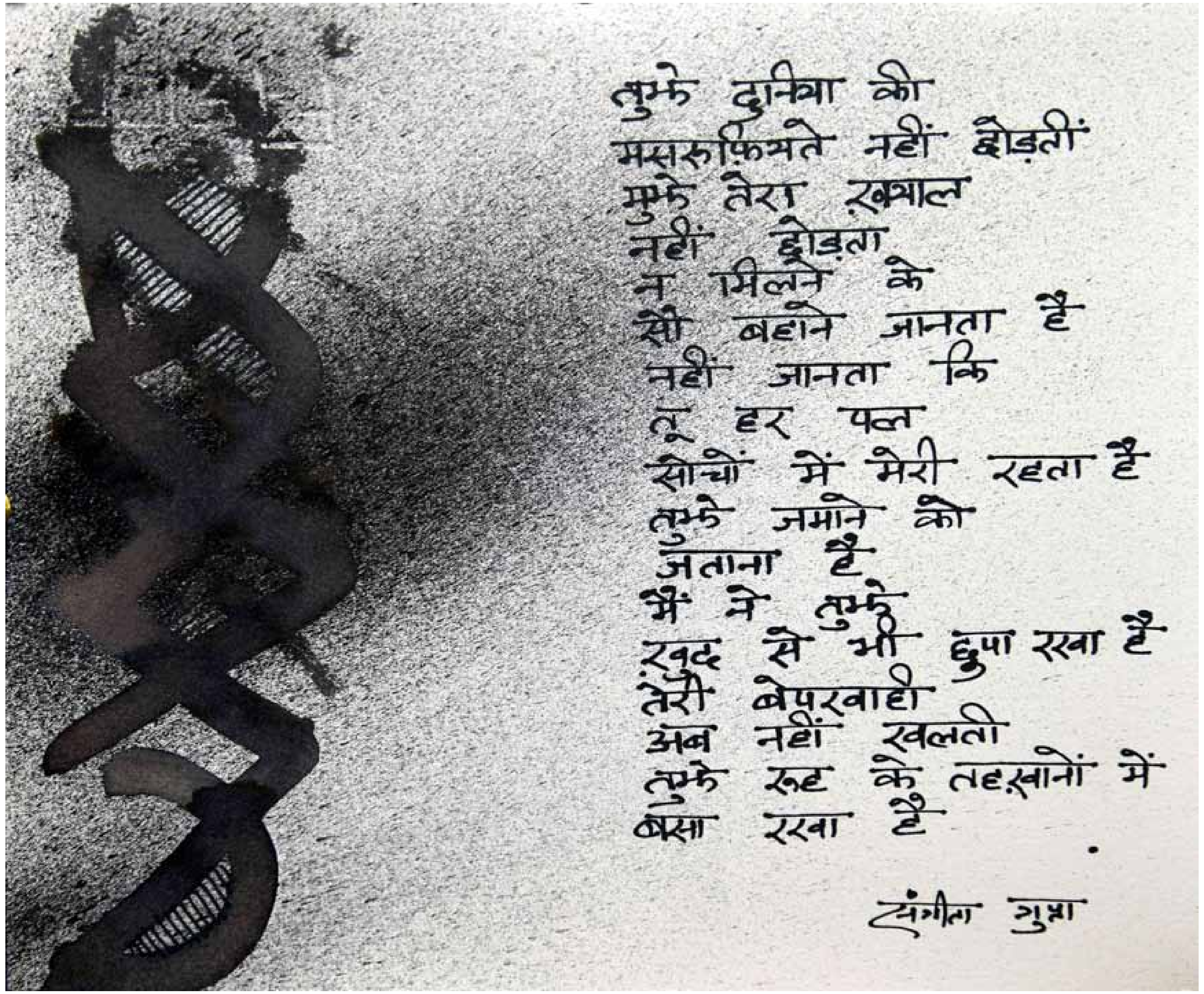
तुझे दुनिया की
मसरूफ़ियतें नहीं छोड़तीं
मुझे तेरा ख़याल
नहीं छोड़ता
न मिलने के
सौ बहाने जानता है
नहीं जानता कि
तू हर पल
सोचों में मेरी रहता है
तुझे ज़माने को
जताना है
मैं ने तुझे
खुद से भी छुपा रखा है
तेरी बेपरवाही
अब नहीं खलती
तुझे रूह के तहख़ानों में
बसा रखा है
संगीता गुप्ता

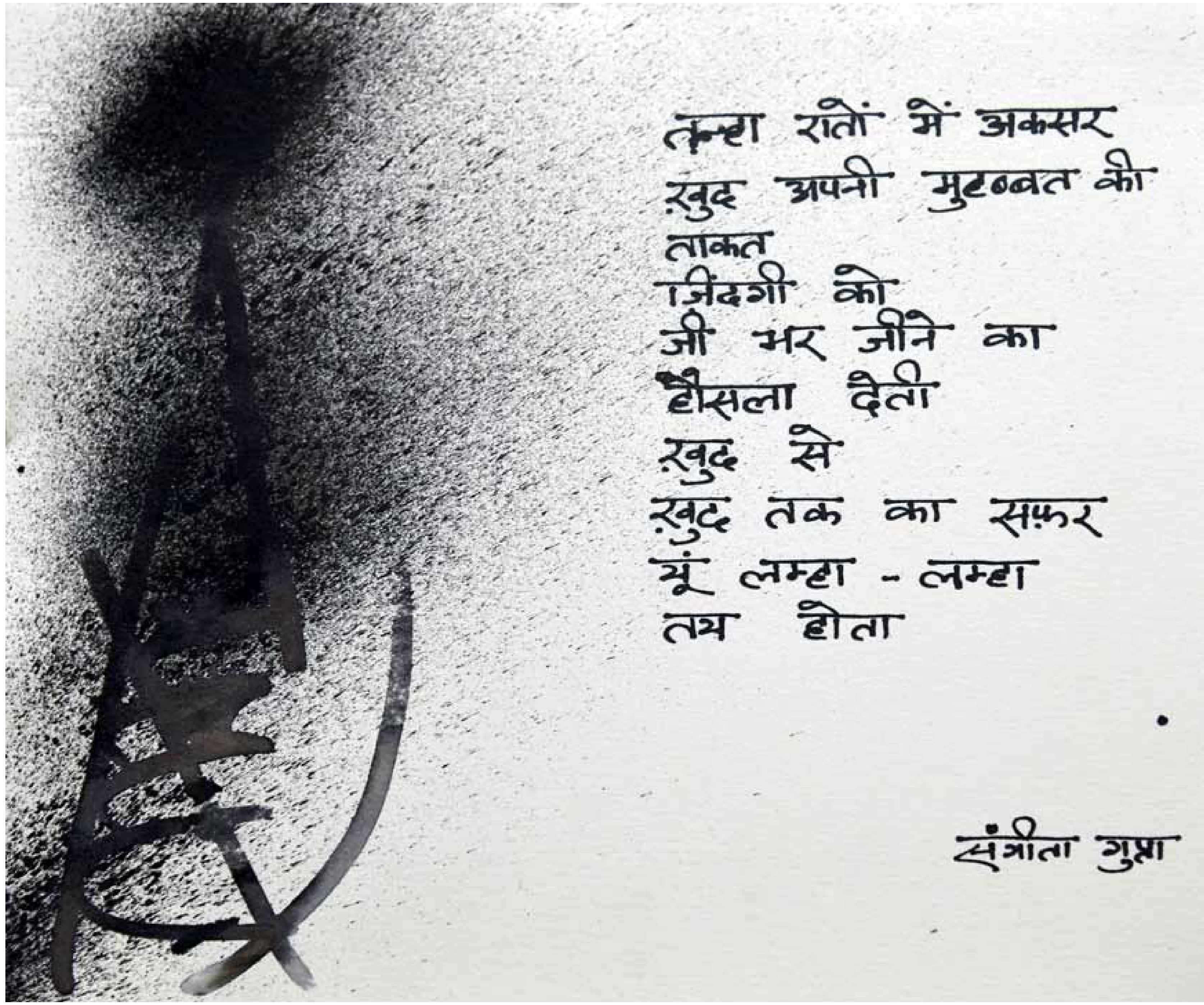
तन्हा रातों में अकसर
ख़ुद अपनी मुहब्बत की
ताक़त
ज़िंदगी को
जी भर जीने का
हौसला देती
ख़ुद से
ख़ुद तक का सफ़र
यूं लम्हा - लम्हा
तय होता
संगीता गुप्ता

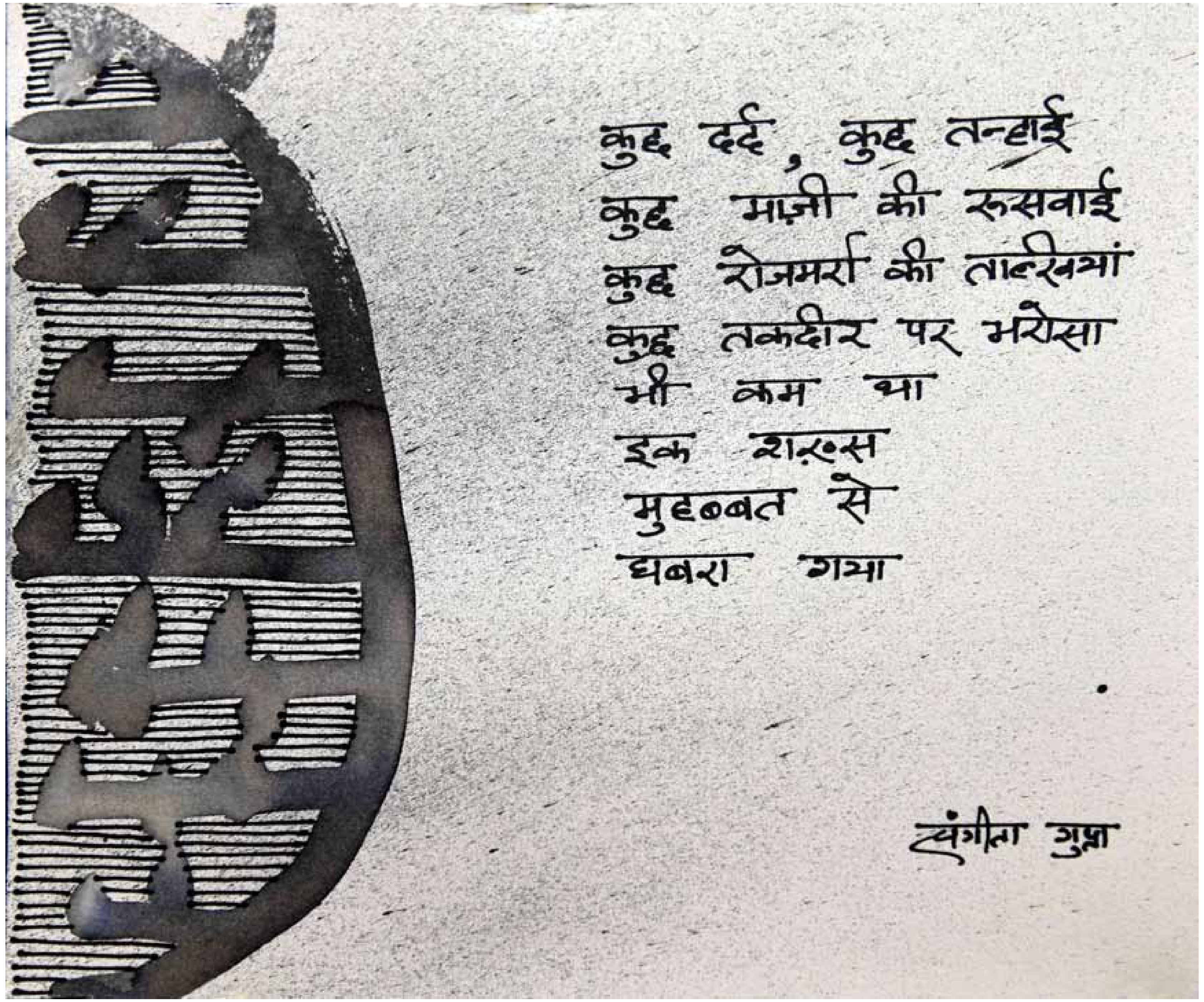
कुछ दर्द, कुछ तन्हाई
कुछ माज़ी की रुसवाई
कुछ रोजमर्रा की तल्ख़ियां
कुछ तकदीर पर भरोसा
भी कम था
इक शख़्स
मुहब्बत से
घबरा गया
संगीता गुप्ता

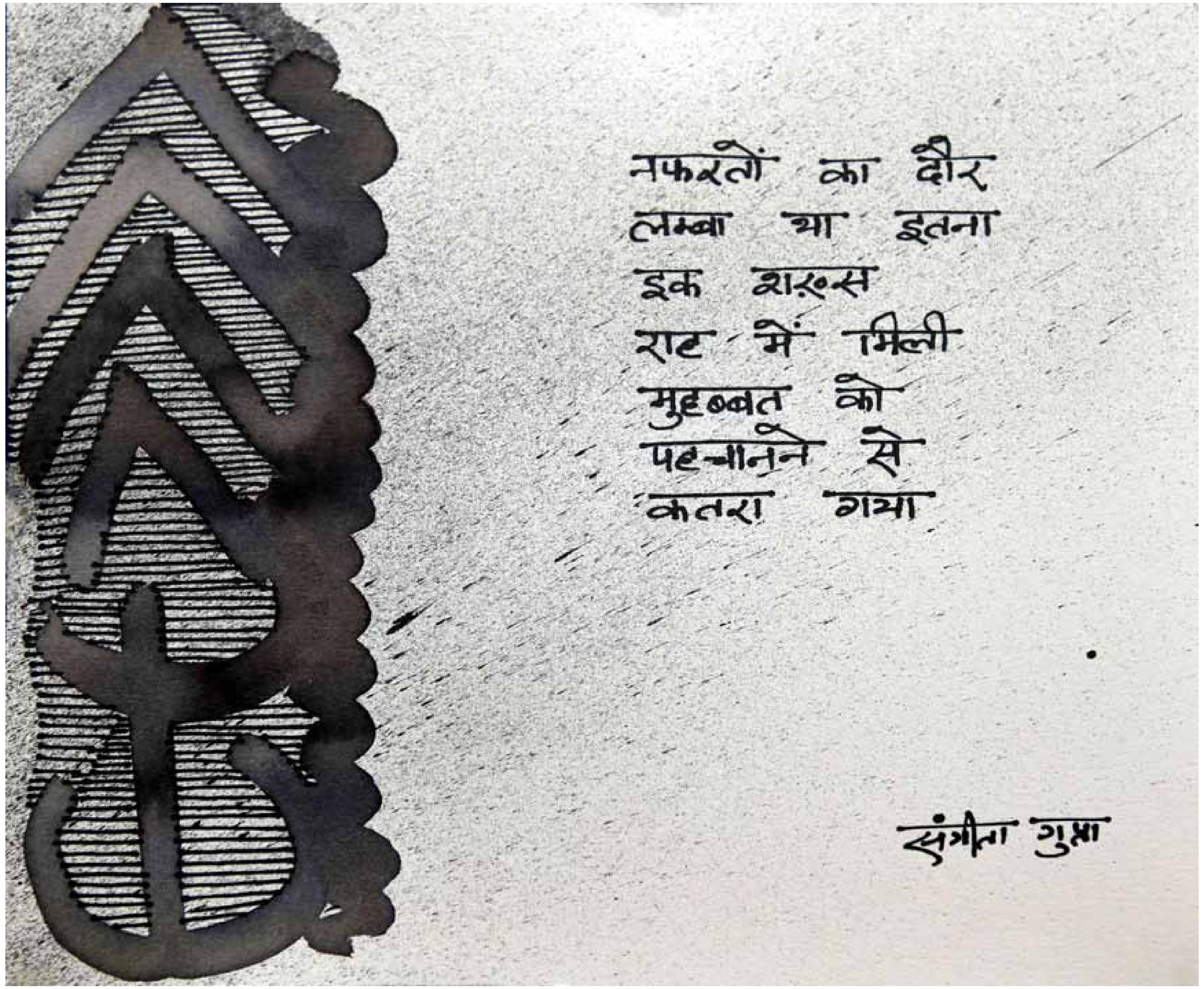
नफरतों का दौर
लम्बा था इतना
इक शख़्स
रात में मिली
मुहब्बत को
पहचानने से
कतरा गया
संगीता गुप्ता

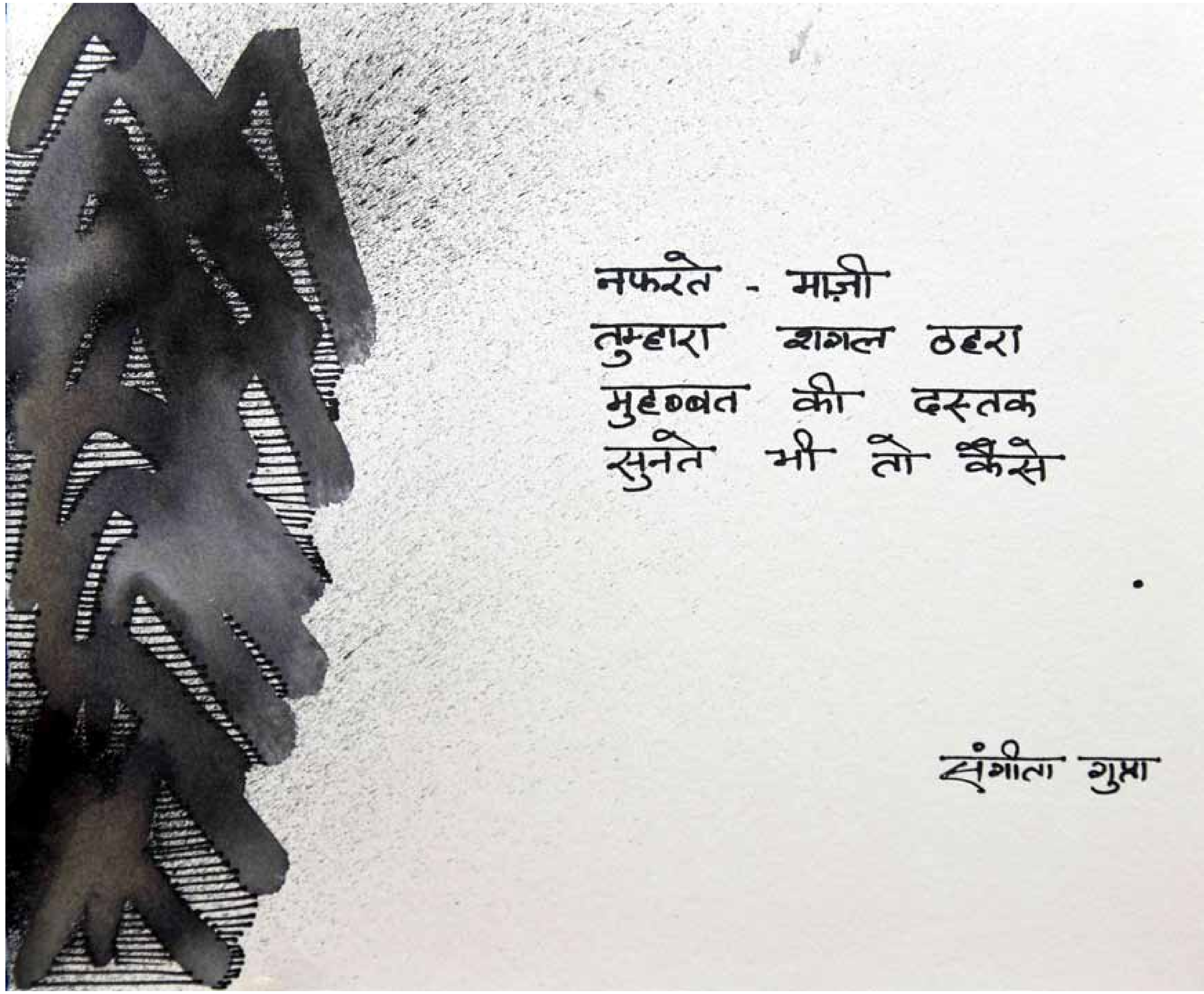
नफरते - माज़ी
तुम्हारा शगल ठहरा
मुहब्बत की दस्तक
सुनते भी तो कैसे
संगीता गुप्ता

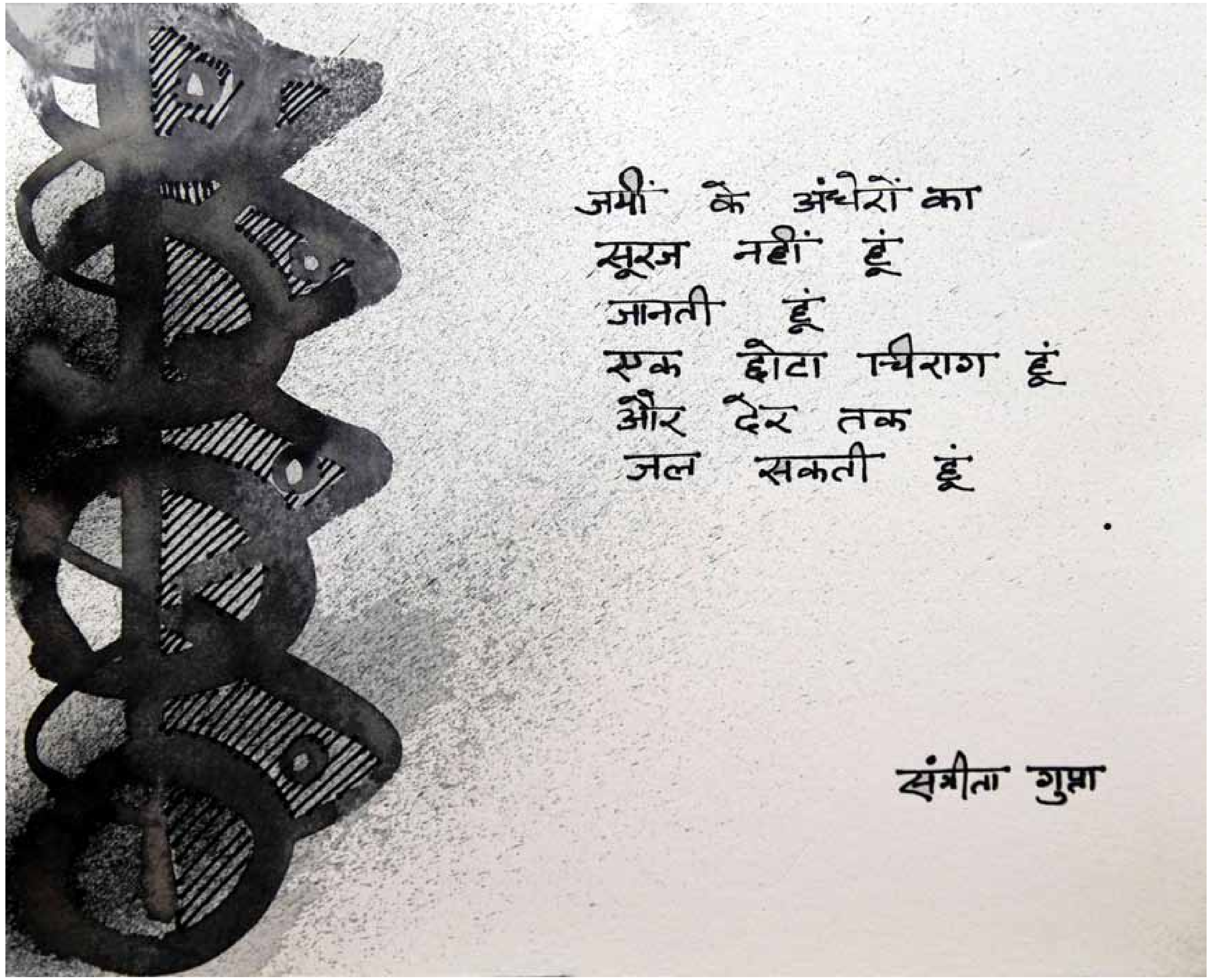
ज़मीं के अंधेरों का
सूरज नहीं हूं
जानती हूं
एक छोटा चिराग हूं
और देर तक
जल सकती हूं
संगीता गुप्ता

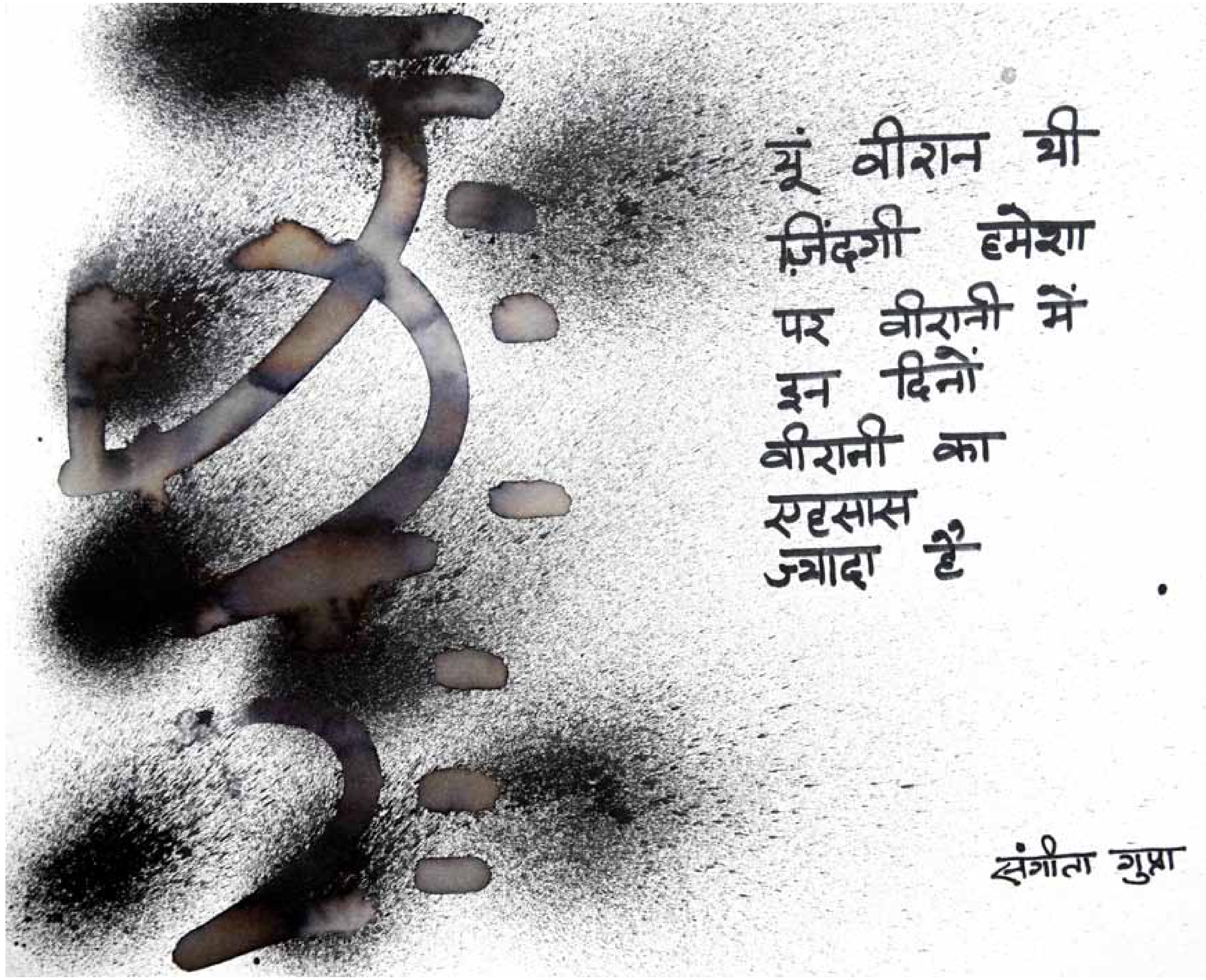
यूं वीरान थी
ज़िंदगी हमेशा
पर वीरानी में
इन दिनों
वीरानी का
एहसास
ज़्यादा है
संगीता गुप्ता

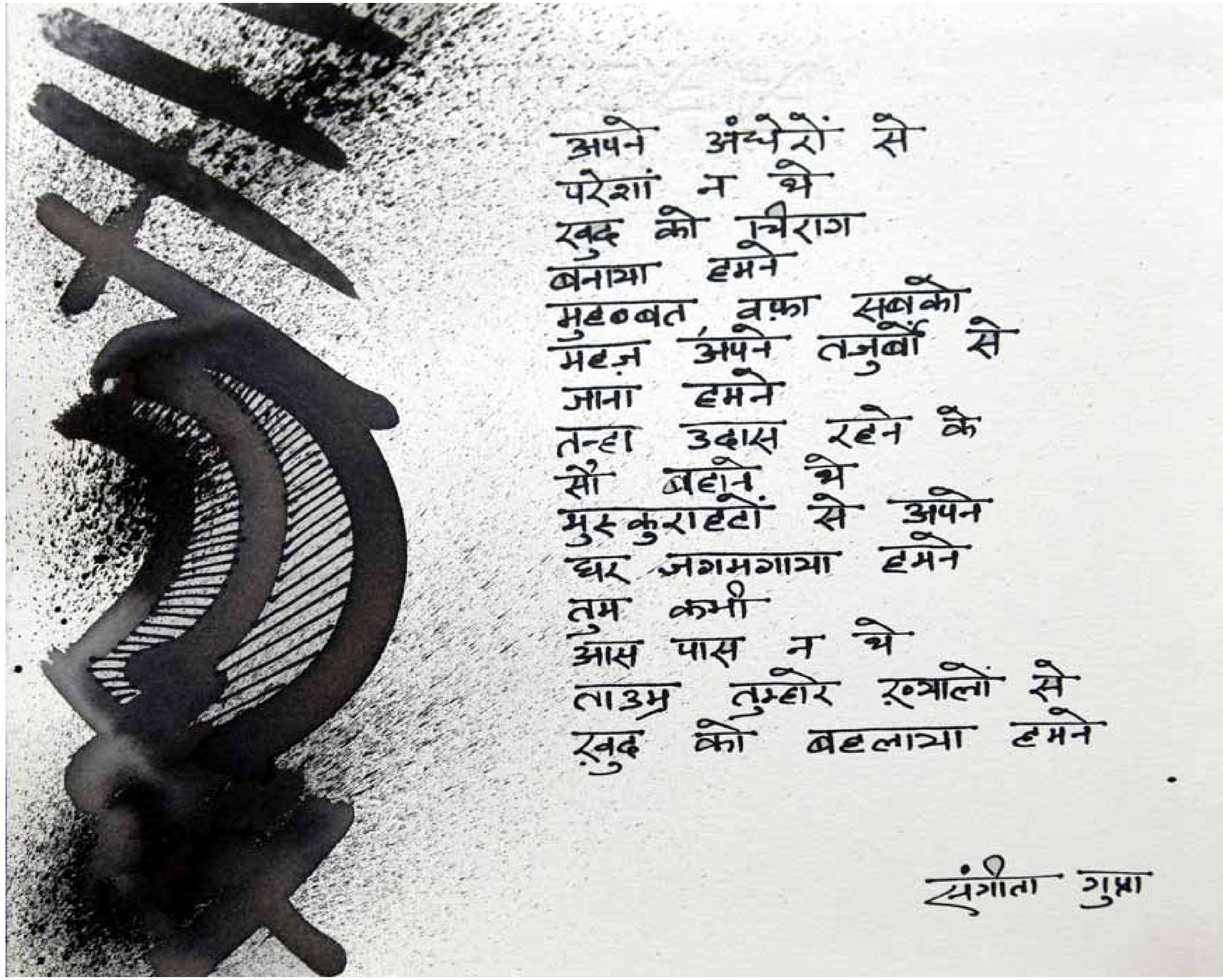
अपने अंधेरों से
परेशां न थे
खुद को चिराग
बनाया हमने
मुहब्बत वफ़ा सबको
महज़ अपने तजुर्बों से
जाना हमने
तन्हा उदास रहने के
सौ बहाने थे
मुस्कुराहटों से अपने
घर जगमगाया हमने
तुम कभी
आस पास न थे
ताउम्र तुम्हारे ख्यालों से
खुद को बहलाया हमने
संगीता गुप्ता

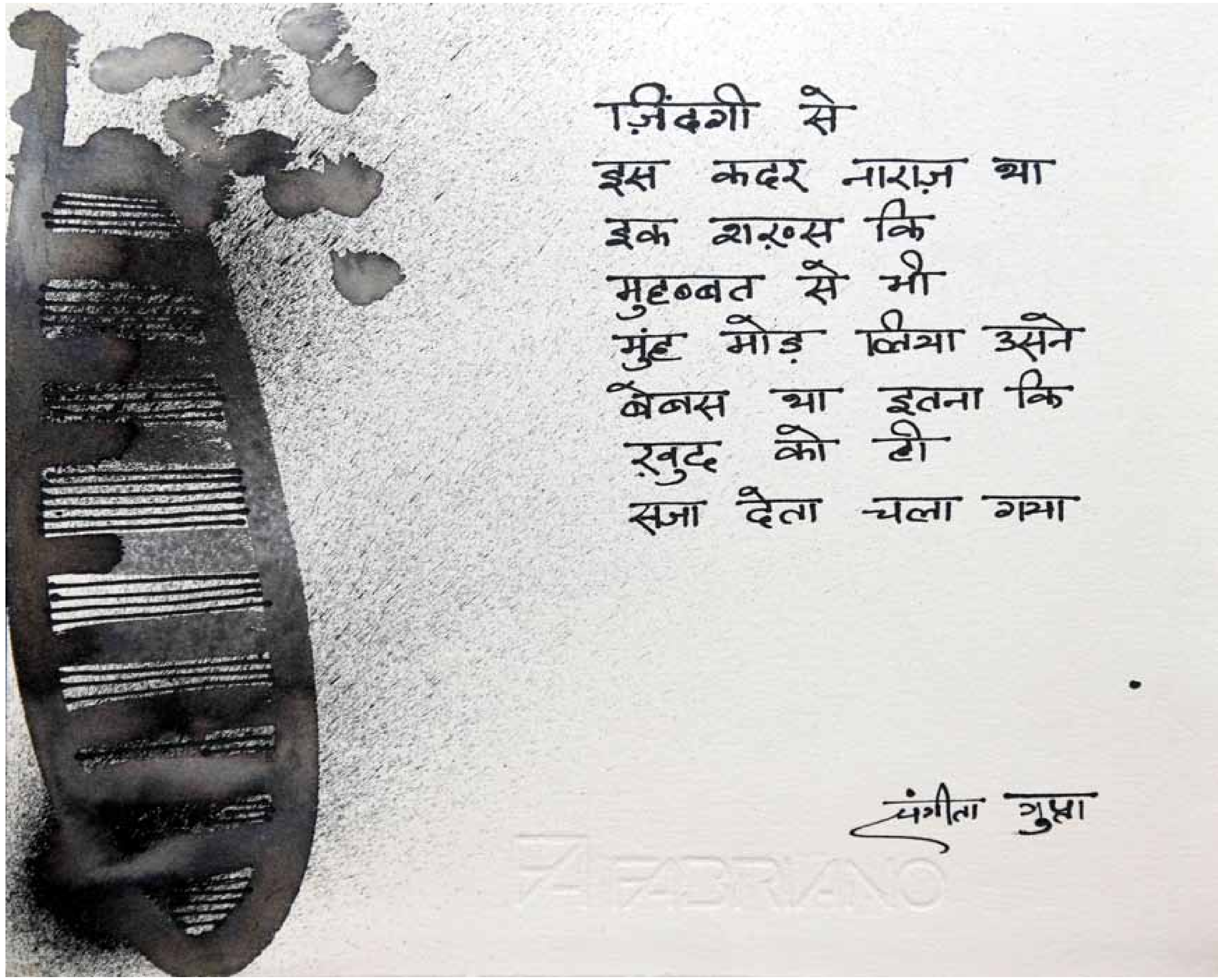
ज़िंदगी से
इस कदर नाराज़ था
इक शख्स कि
मुहब्बत से भी
मुंह मोड़ लिया उसने
बेबस था इतना कि
खुद को ही
सजा देता चला गया
संगीता गुप्ता
FABRIANO

मौन
क्या कुछ नहीं कहता
शब्द और भाषा के बिना

उपस्थिति भी क्या जरूरी है

सुने
कहे
हुए बिना
प्रेम को
प्रेम होने दो

संगीता गुप्ता

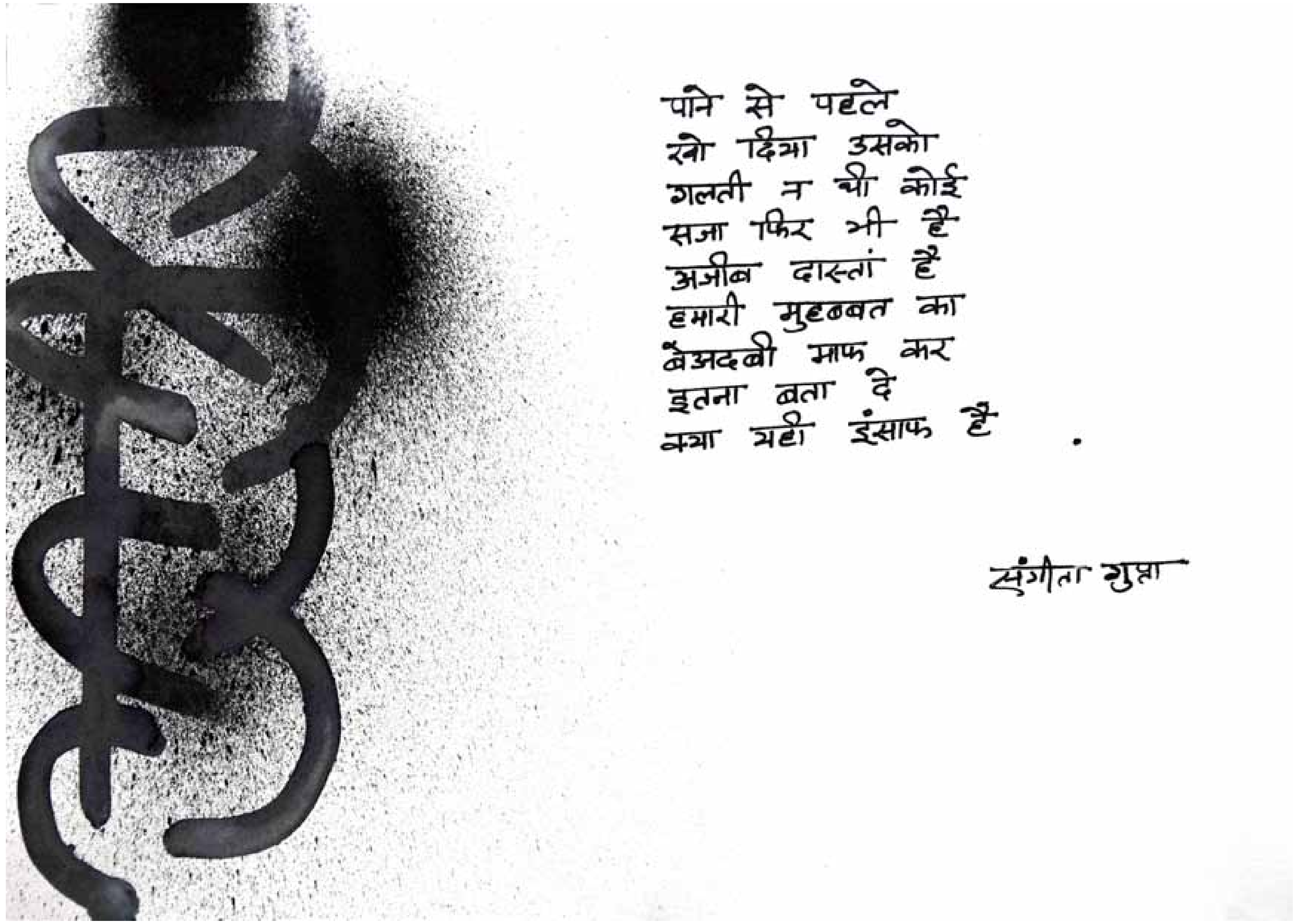
पाने से पहले
खो दिया उसको
गलती न थी कोई
सजा फिर भी है
अजीब दास्तां है
हमारी मुहब्बत का
बेअदबी माफ कर
इतना बता दे
क्या यही इंसाफ है ।
संगीता गुप्ता

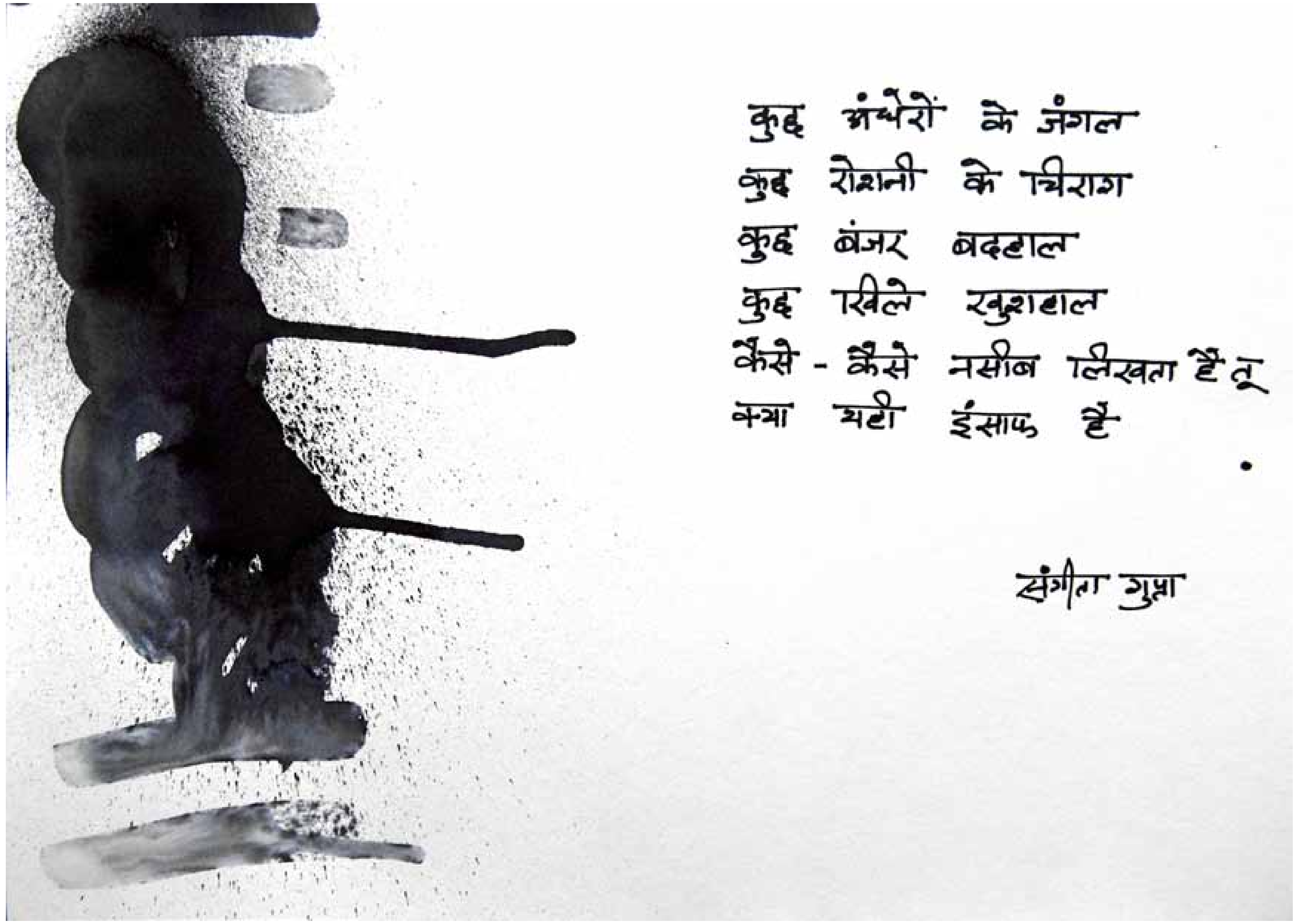
कुछ अंधेरों के जंगल
कुछ रोशनी के चिराग
कुछ बंजर बदहाल
कुछ खिले खुशहाल
कैसे - कैसे नसीब लिखता है तू
क्या यही इंसाफ है ।
संगीता गुप्ता

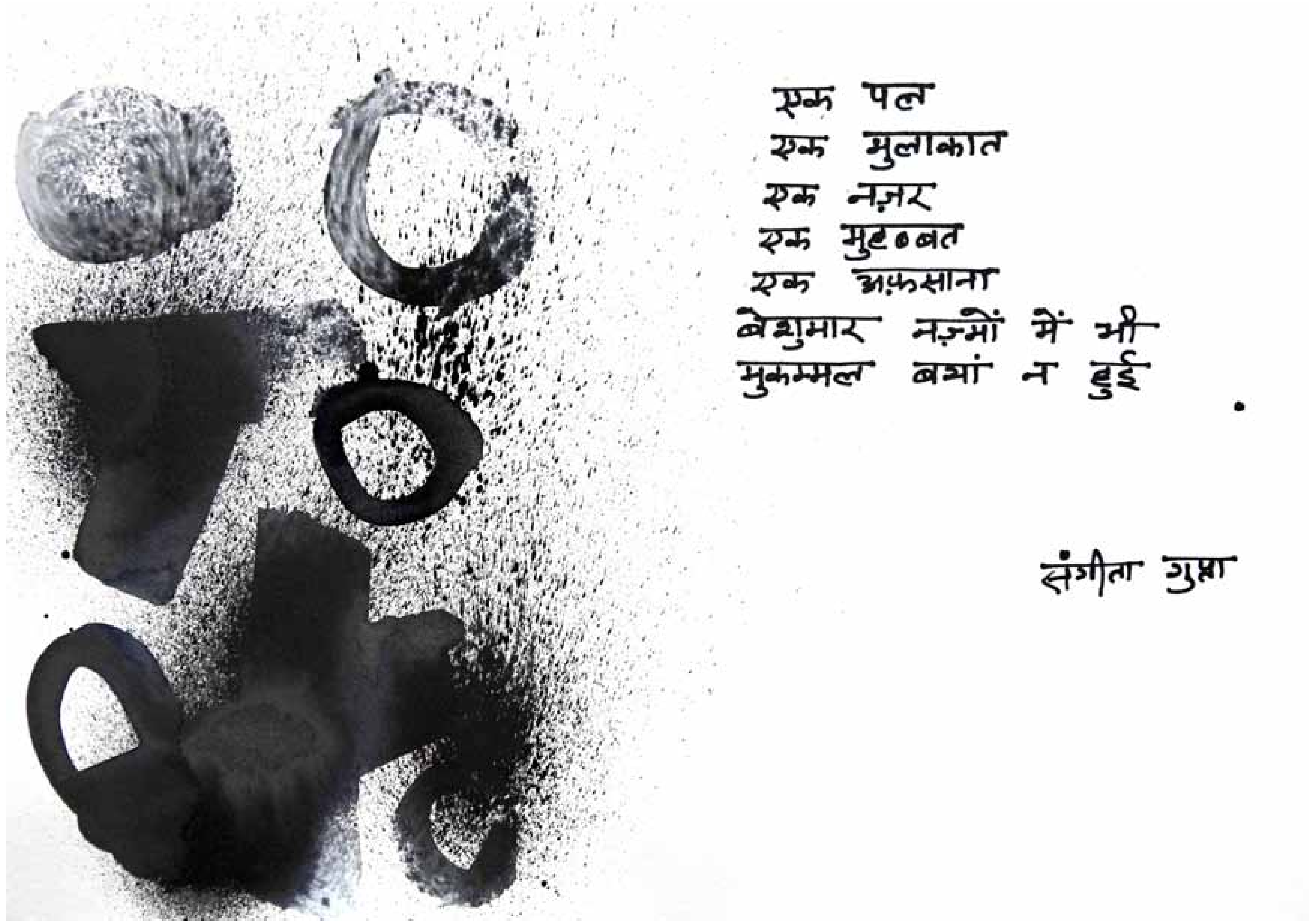
एक पल
एक मुलाकात
एक नज़र
एक मुहब्बत
एक अफ़साना
बेशुमार नज़्मों में भी
मुकम्मल बयां न हुई
संगीता गुप्ता

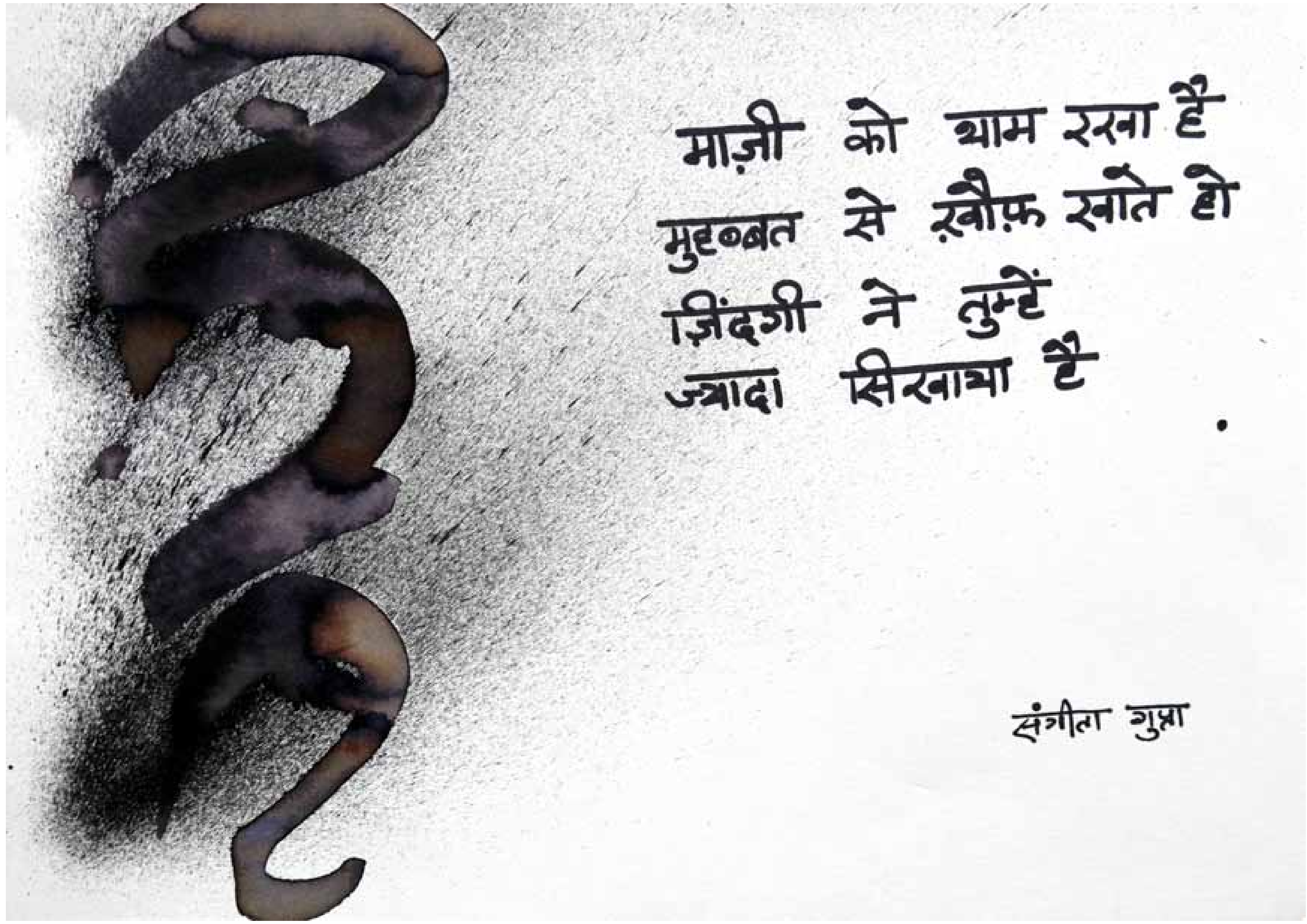
माज़ी को थाम रखा है
मुहब्बत से ख़ौफ़ खाते हो
ज़िंदगी ने तुम्हें
ज़्यादा सिखाया है
संगीता गुप्ता

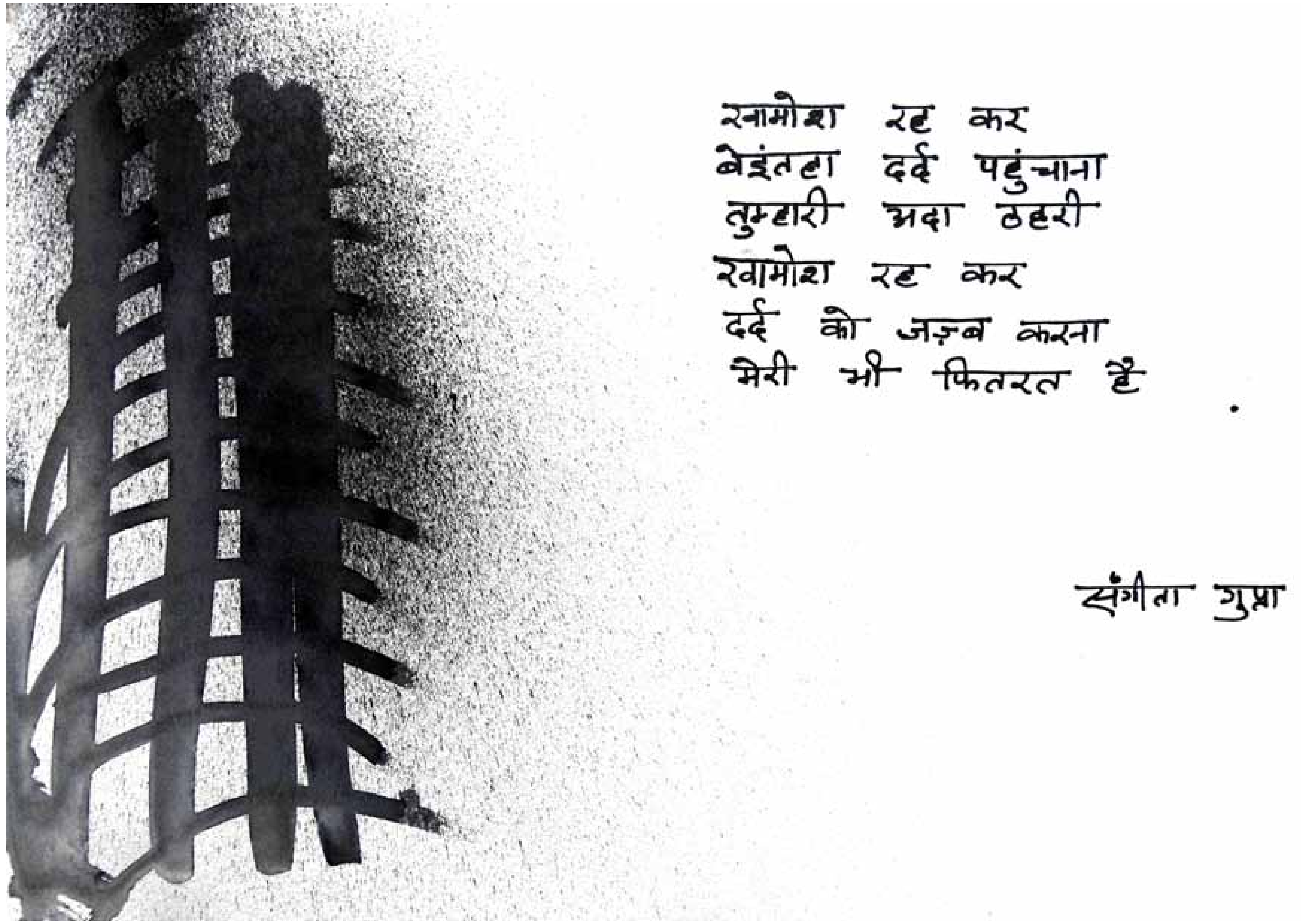
खामोश रह कर
बेइंतहा दर्द पहुंचाना
तुम्हारी अदा ठहरी
खामोश रह कर
दर्द को जज़्ब करना
मेरी भी फितरत है
संगीता गुप्ता

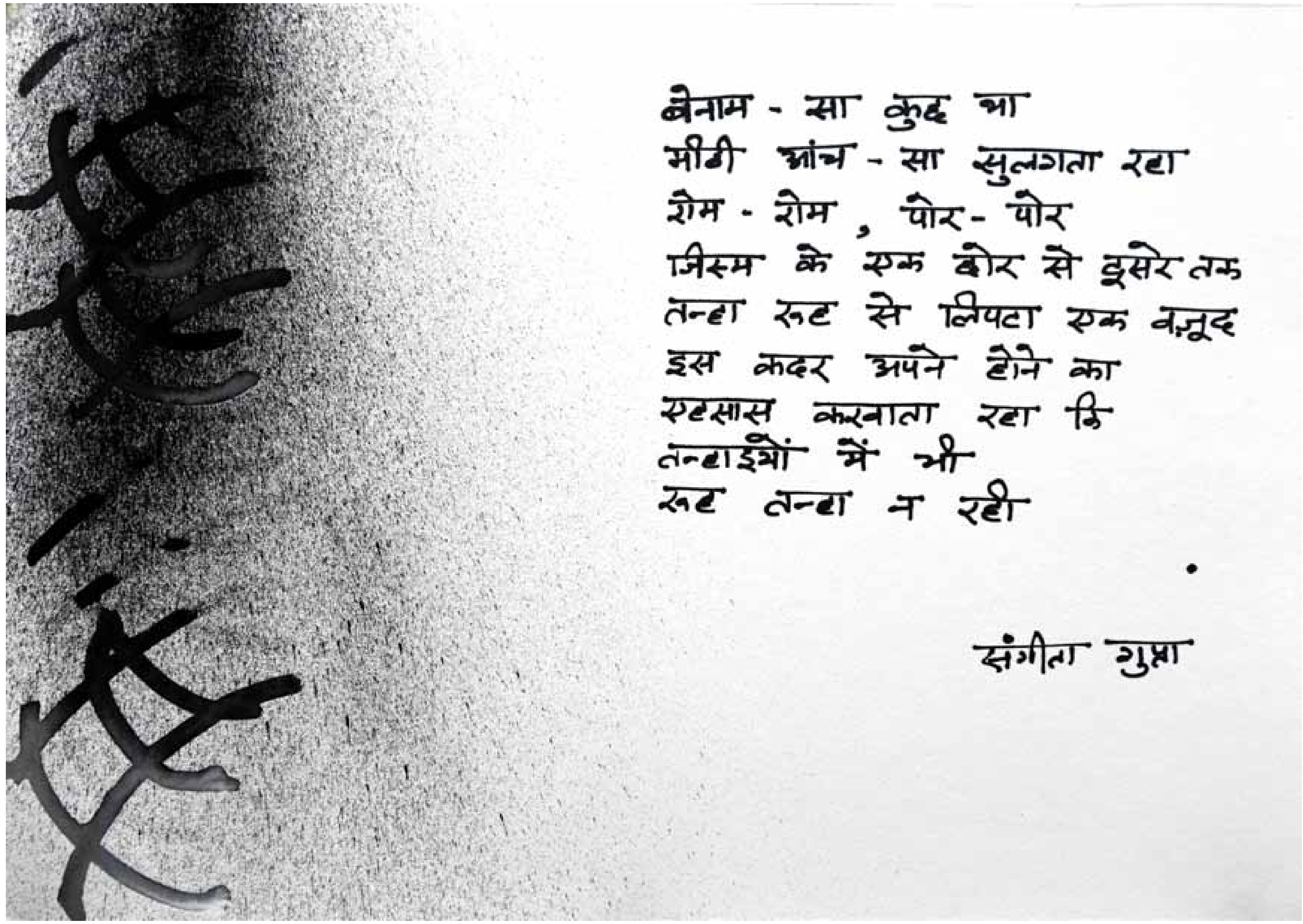
बेनाम - सा कुछ था
मीठी आंच - सा सुलगता रहा
रोम - रोम , पोर - पोर
जिस्म के एक छोर से दूसरे तक
तन्हा रूह से लिपटा एक वजूद
इस कदर अपने होने का
एहसास करवाता रहा कि
तन्हाइयों में भी
रूह तन्हा न रही
संगीता गुप्ता

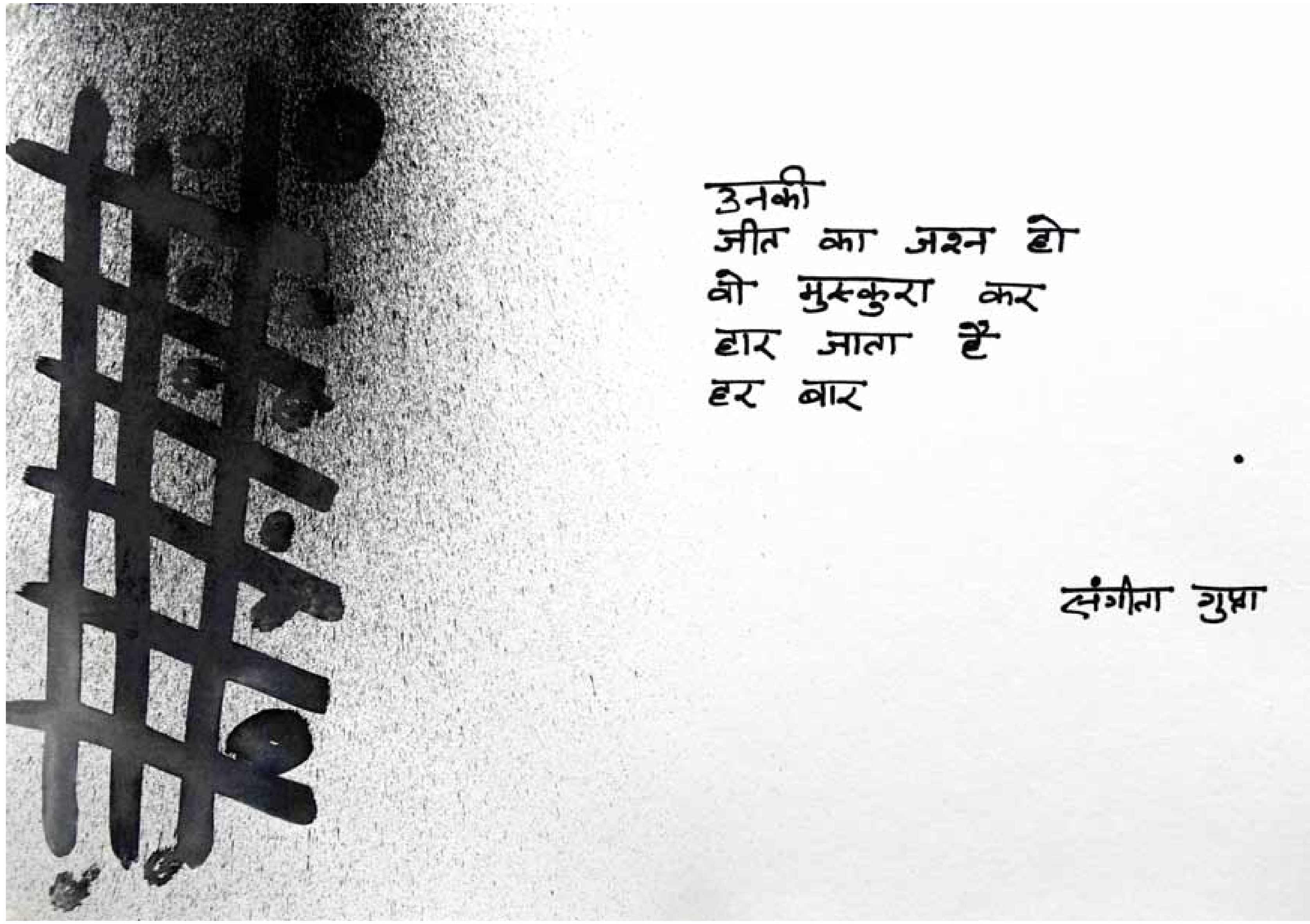
उनकी
जीत का जश्न हो
वो मुस्कुरा कर
हार जाता है
हर बार
संगीता गुप्ता

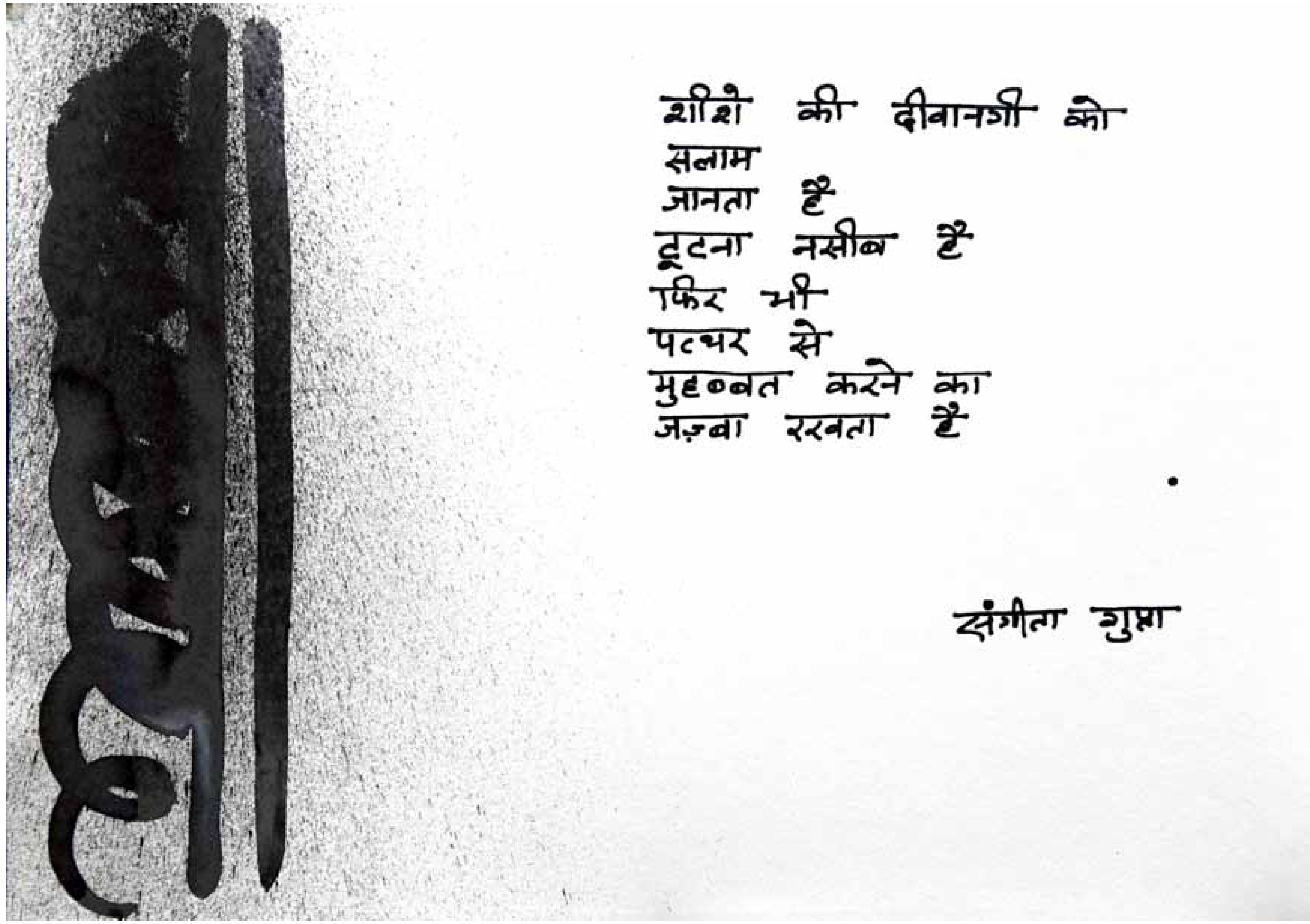
शीशे की दीवानगी को
सलाम
जानता है
टूटना नसीब है
फिर भी
पत्थर से
मुहब्बत करने का
जज़्बा रखता है
संगीता गुप्ता

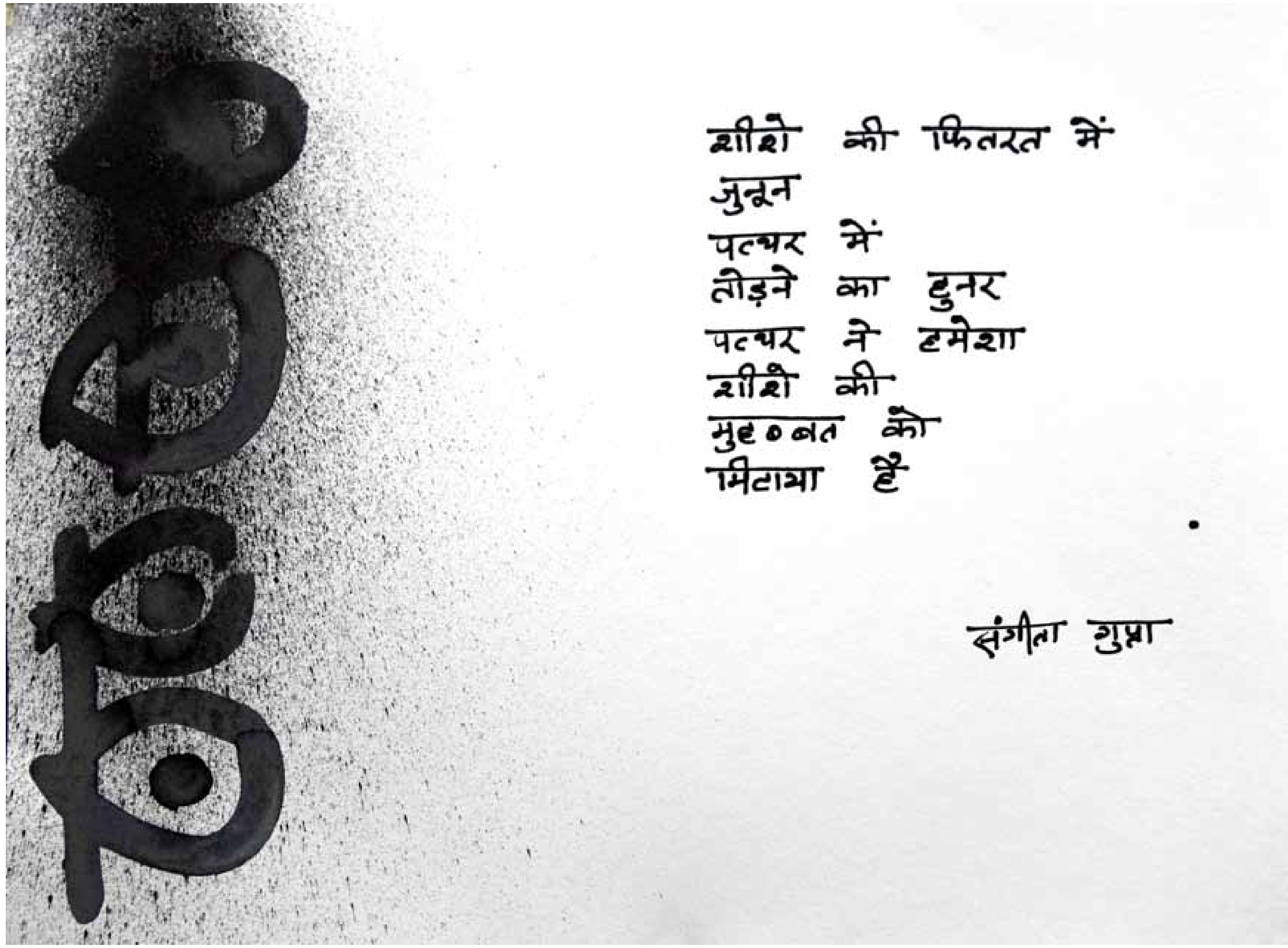
शीशे की फितरत में
जुनून
पत्थर में
तोड़ने का हुनर
पत्थर ने हमेशा
शीशे की
मुहब्बत को
मिटाया है
संगीता गुप्ता

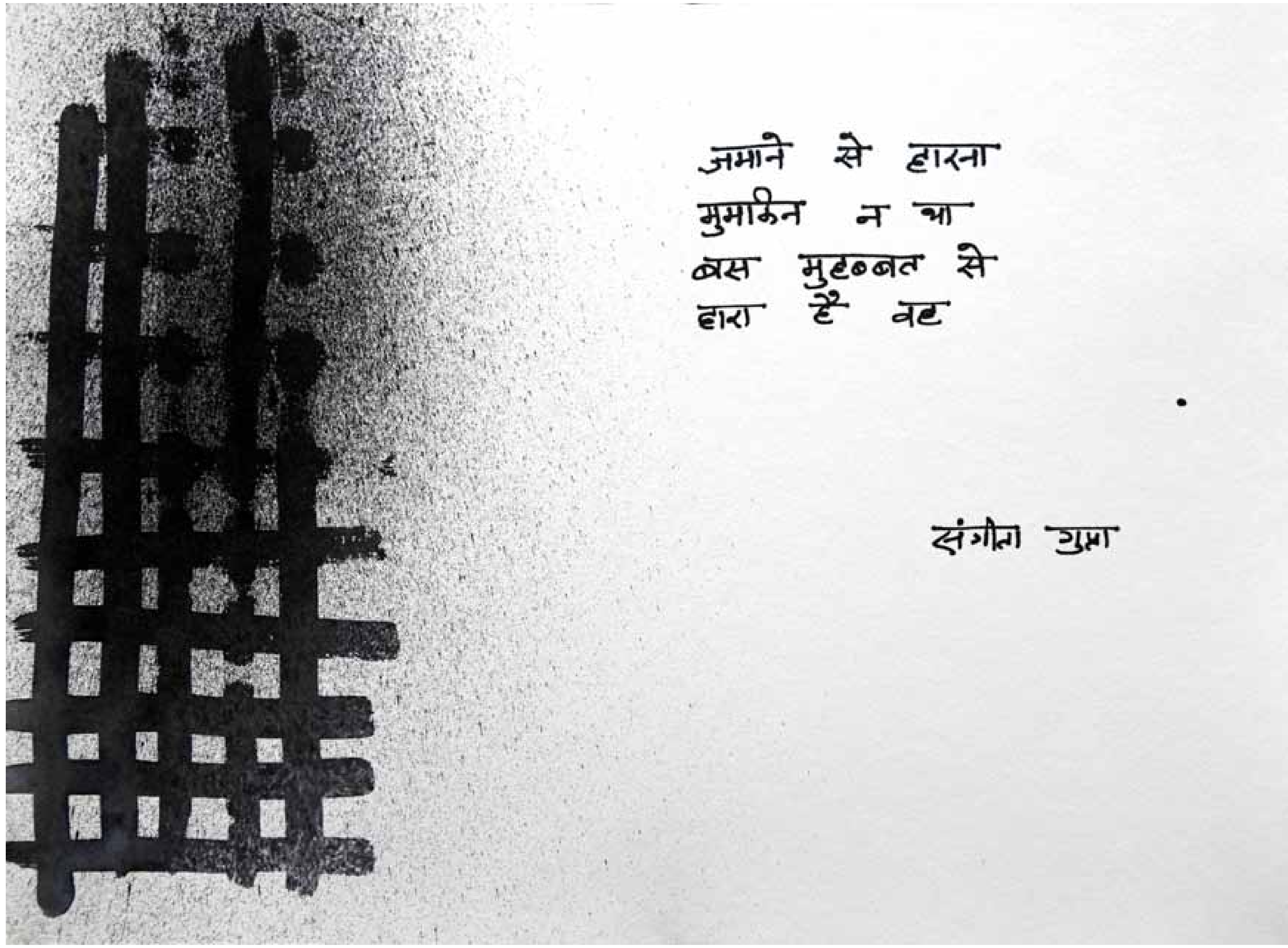
जमाने से हारना
मुमकिन न था
बस मुहब्बत से
हारा है वह
संगीता गुप्ता

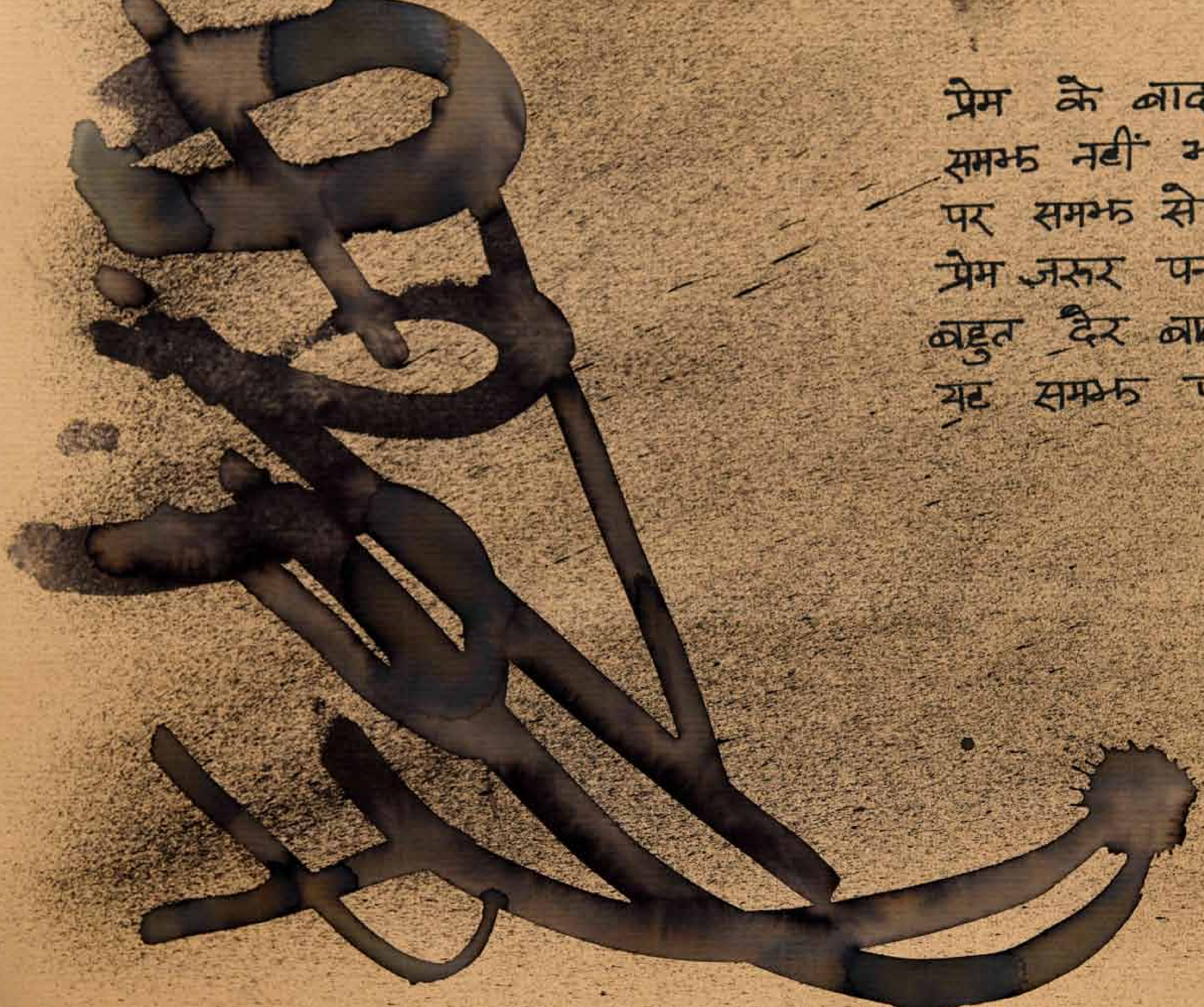

प्रेम के बाद
समझ नहीं भी पनपती
पर समझ से
प्रेम जरूर पनपता है
बहुत देर बाद वह
यह समझ पायी है

संगीता गुप्ता

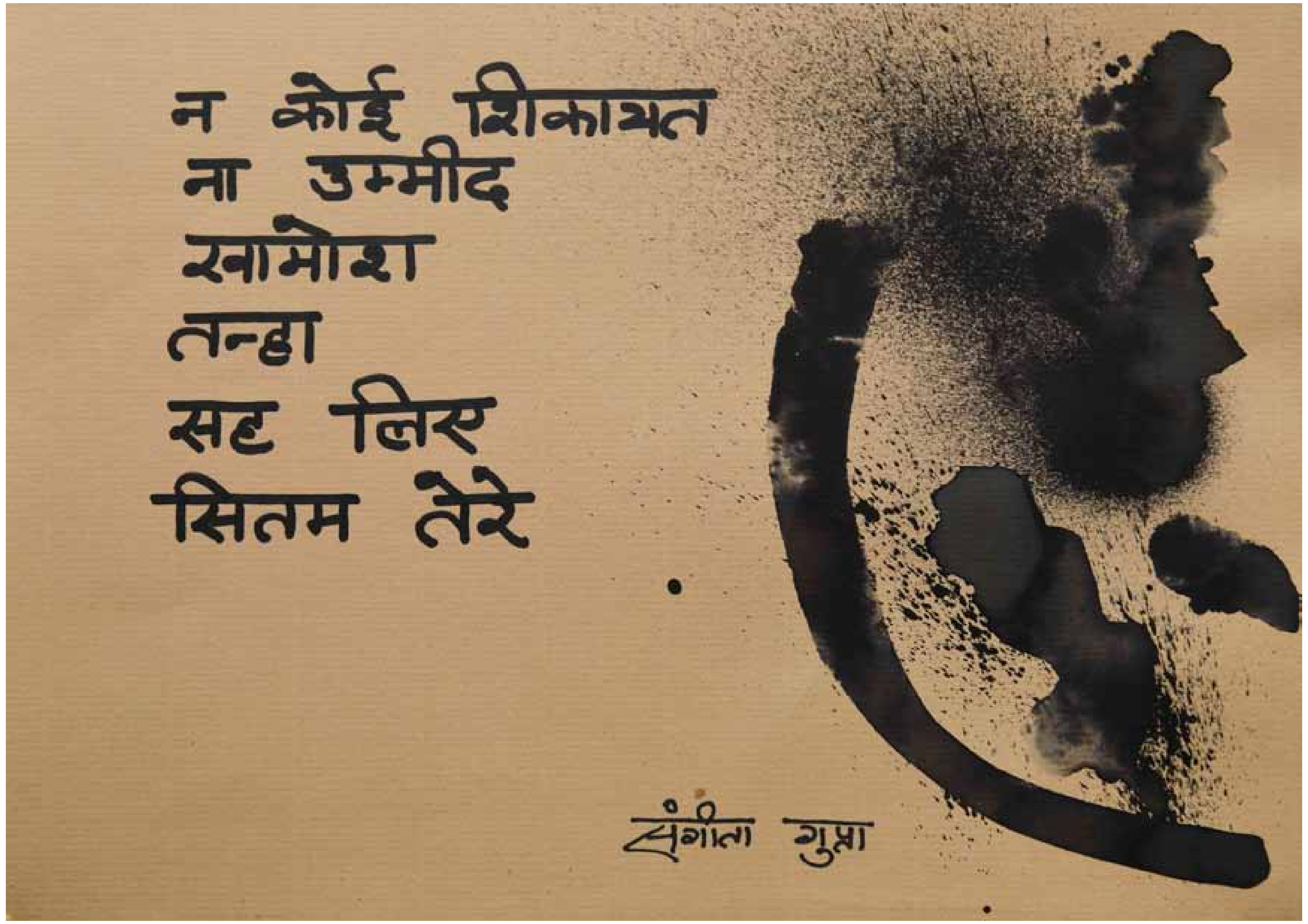
न कोई शिकायत
ना उम्मीद
खामोश
तन्हा
सह लिए
सितम तेरे
संगीता गुप्ता

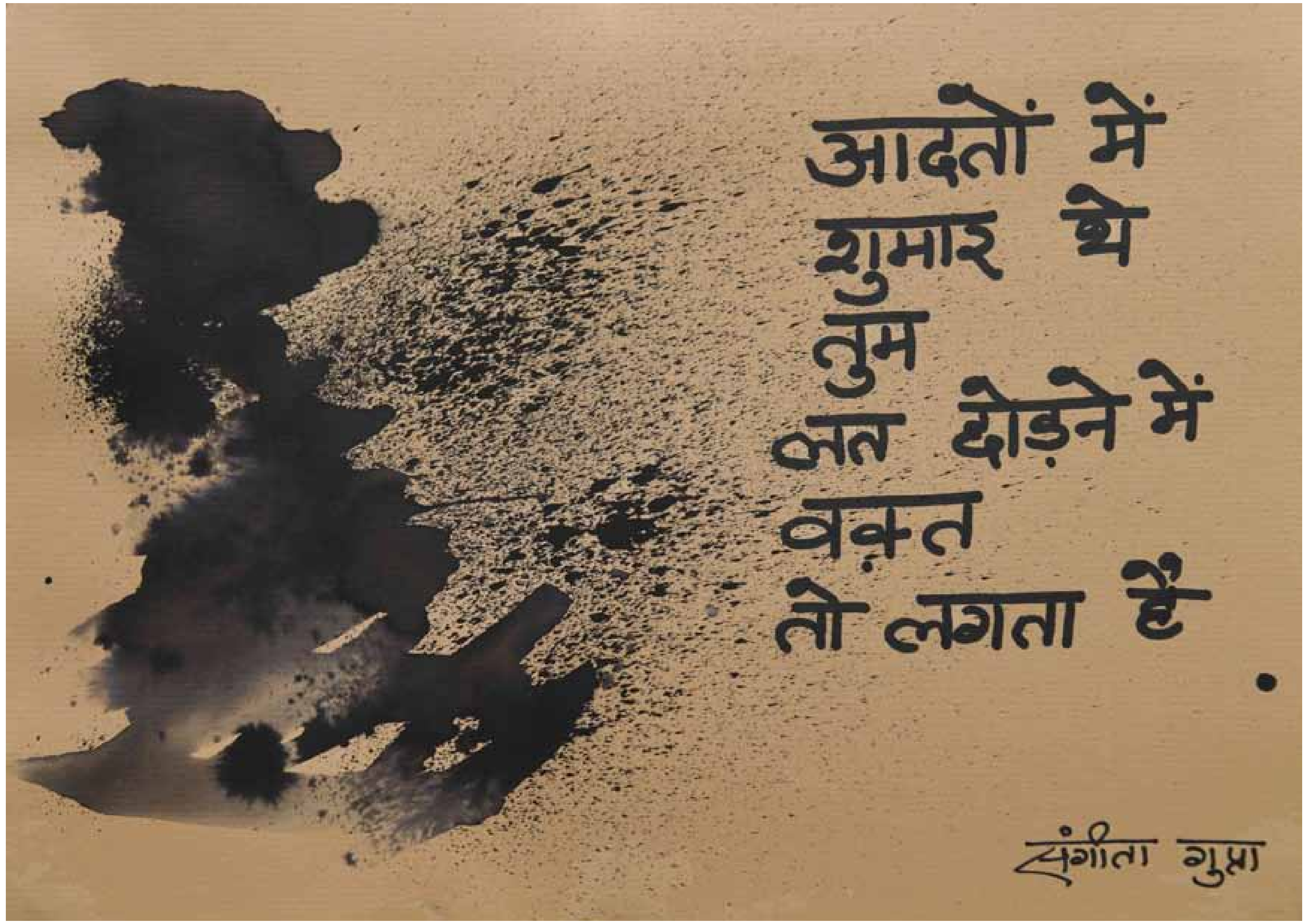
आदतों में
शुमार थे
तुम
लत छोड़ने में
वक़्त
तो लगता है
संगीता गुप्ता

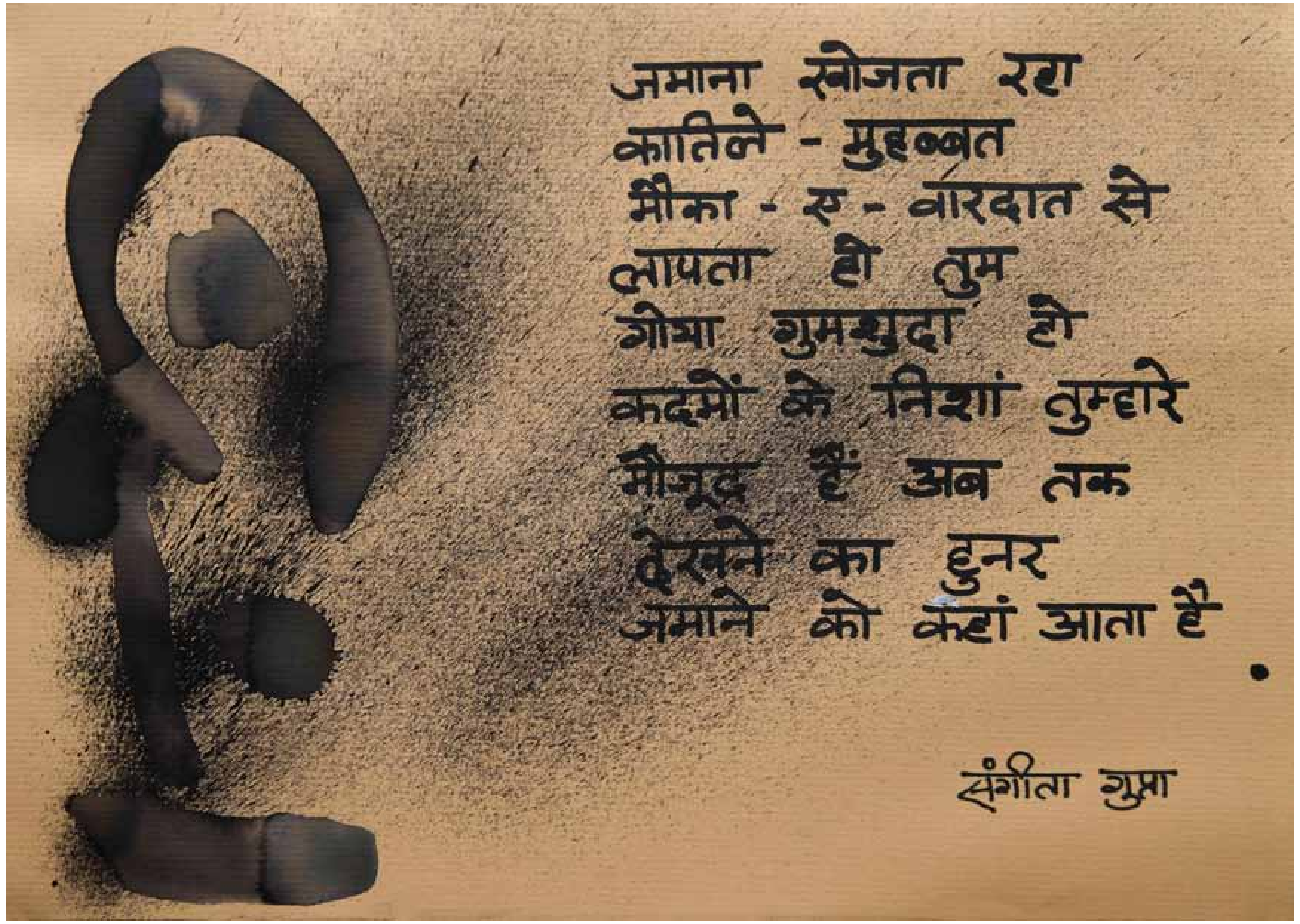
जमाना खोजता रहा
कातिले - मुहब्बत
मौका - ए - वारदात से
लापता हो तुम
गोया गुमशुदा हो
कदमों के निशां तुम्हारे
मौजूद हैं अब तक
देखने का हुनर
जमाने को कहां आता है
संगीता गुप्ता

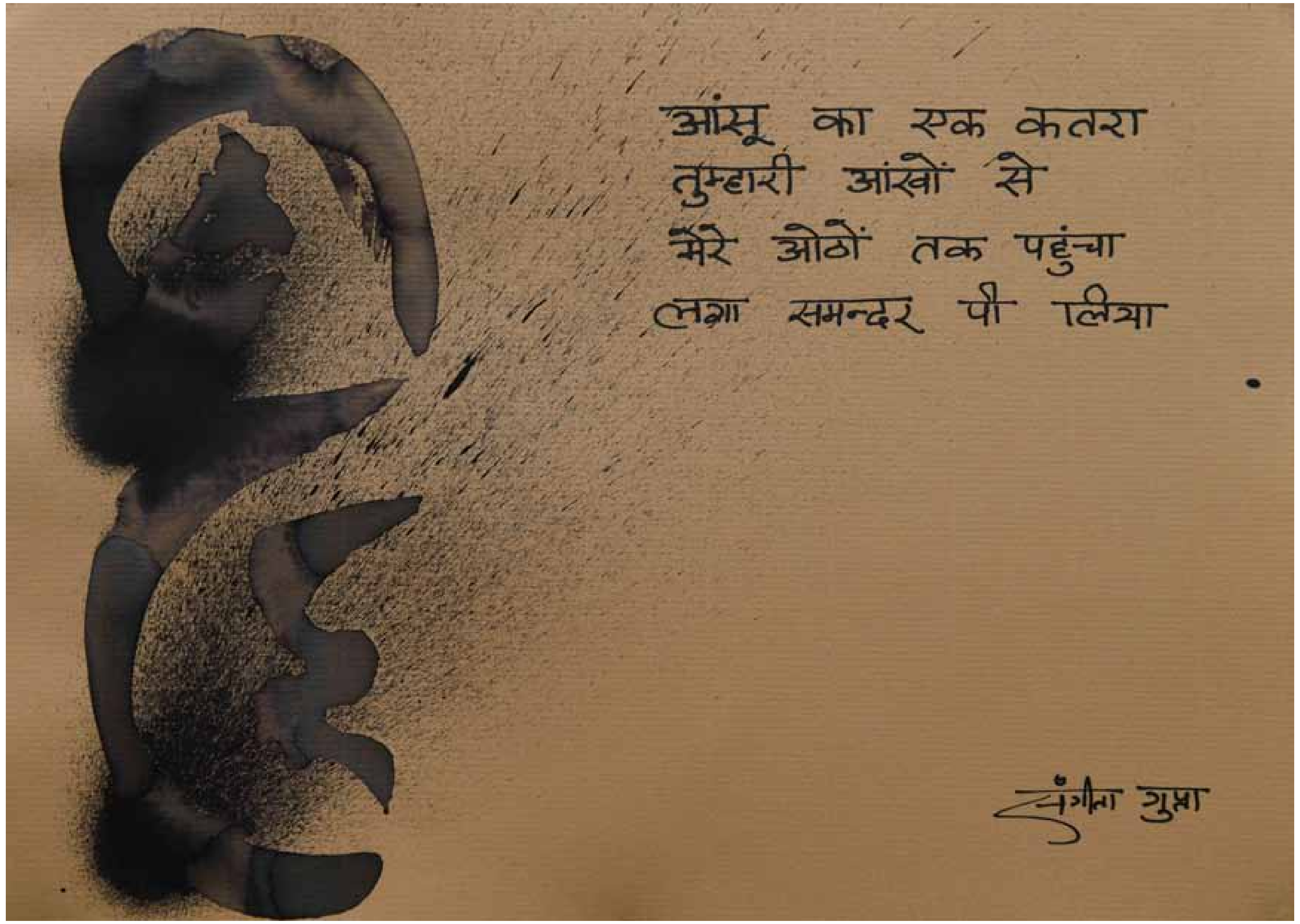
आंसू का एक कतरा
तुम्हारी आंखों से
मेरे ओठों तक पहुंचा
लगा समन्दर पी लिया
संगीता गुप्ता

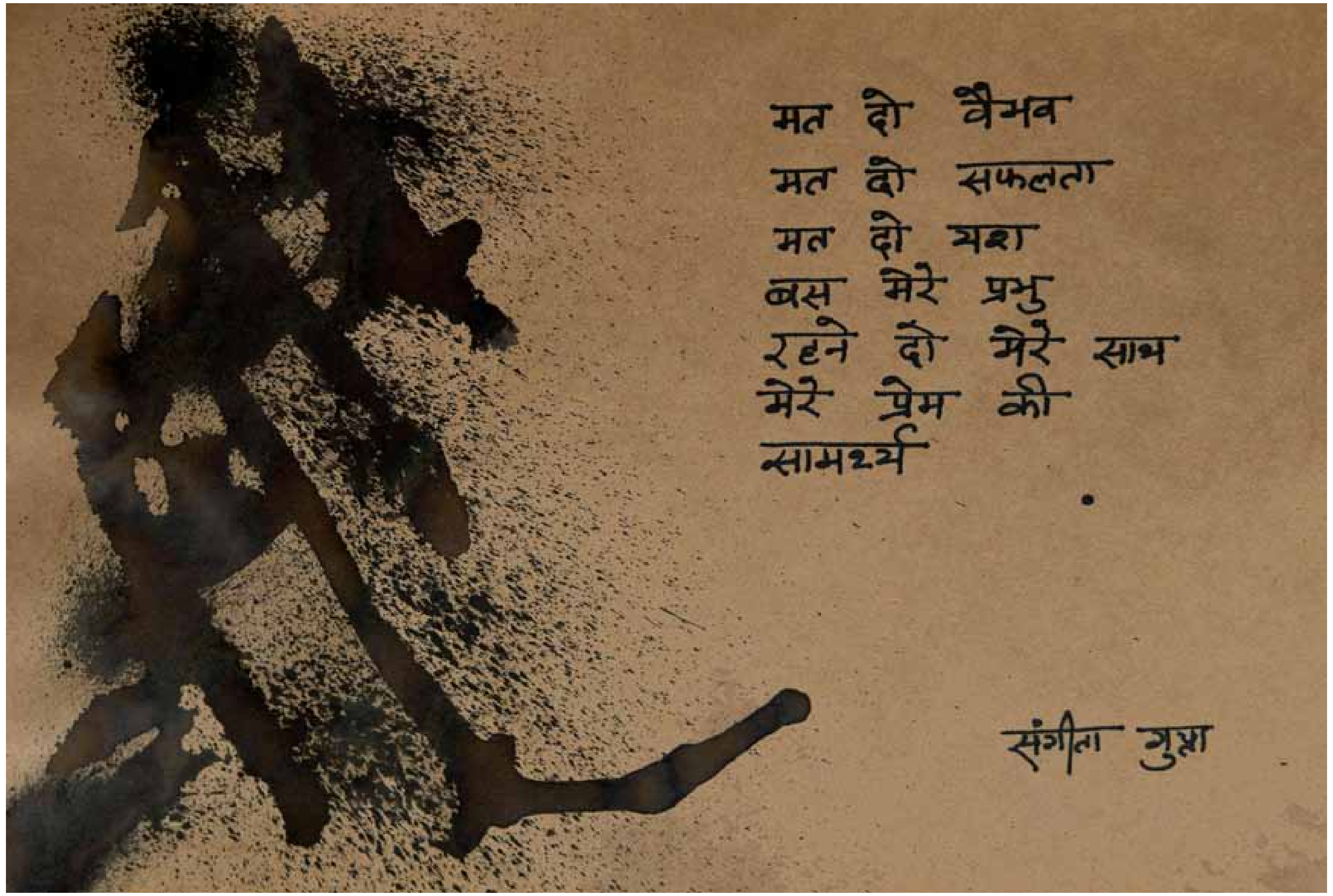
मत दो वैभव
मत दो सफलता
मत दो यश
बस मेरे प्रभु
रहने दो मेरे साथ
मेरे प्रेम की
सामर्थ्य
संगीता गुप्ता

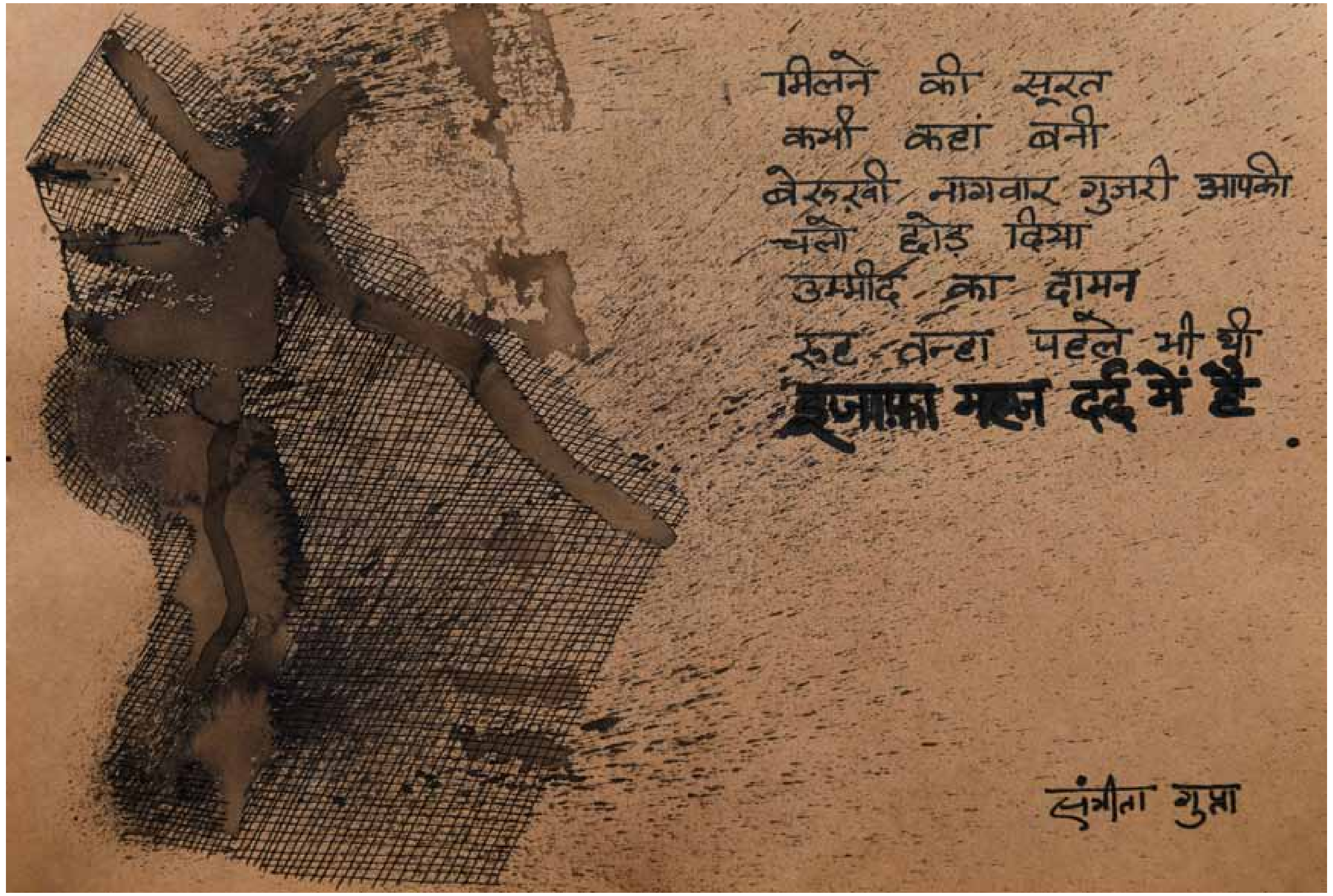
मिलने की सूरत
कभी कहां बनी
बेरुख़ी नागवार गुजरी आपकी
चलो छोड़ दिया
उम्मीद का दामन
रूह तन्हा पहले भी थी
इज़ाफ़ा महज़ दर्द में है
संगीता गुप्ता

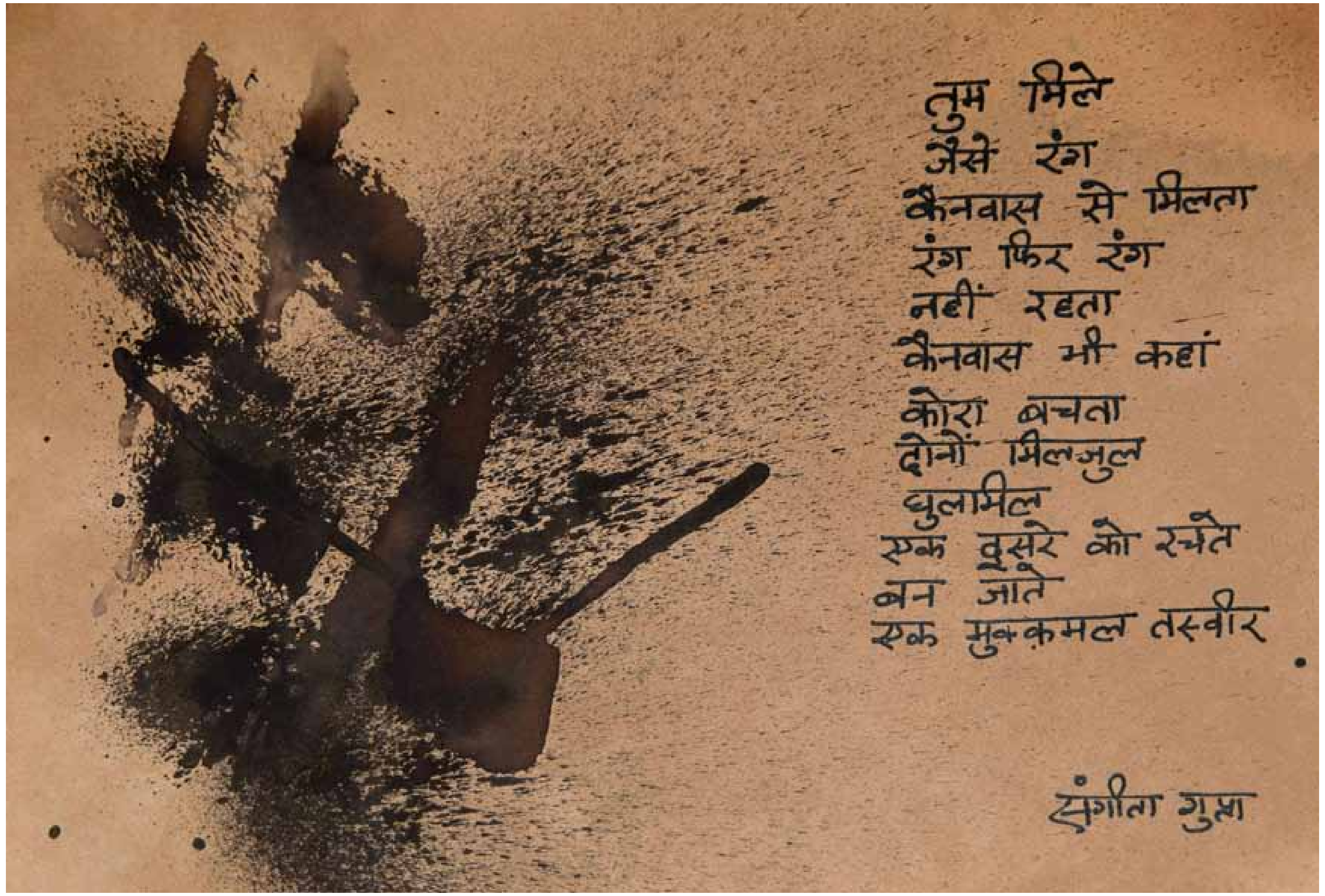
तुम मिले
जैसे रंग
कैनवास से मिलता
रंग फिर रंग
नहीं रहता
कैनवास भी कहां
कोरा बचता
दोनों मिलजुल
घुलमिल
एक दूसरे को रचते
बन जाते
एक मुकम्मल तस्वीर
संगीता गुप्ता

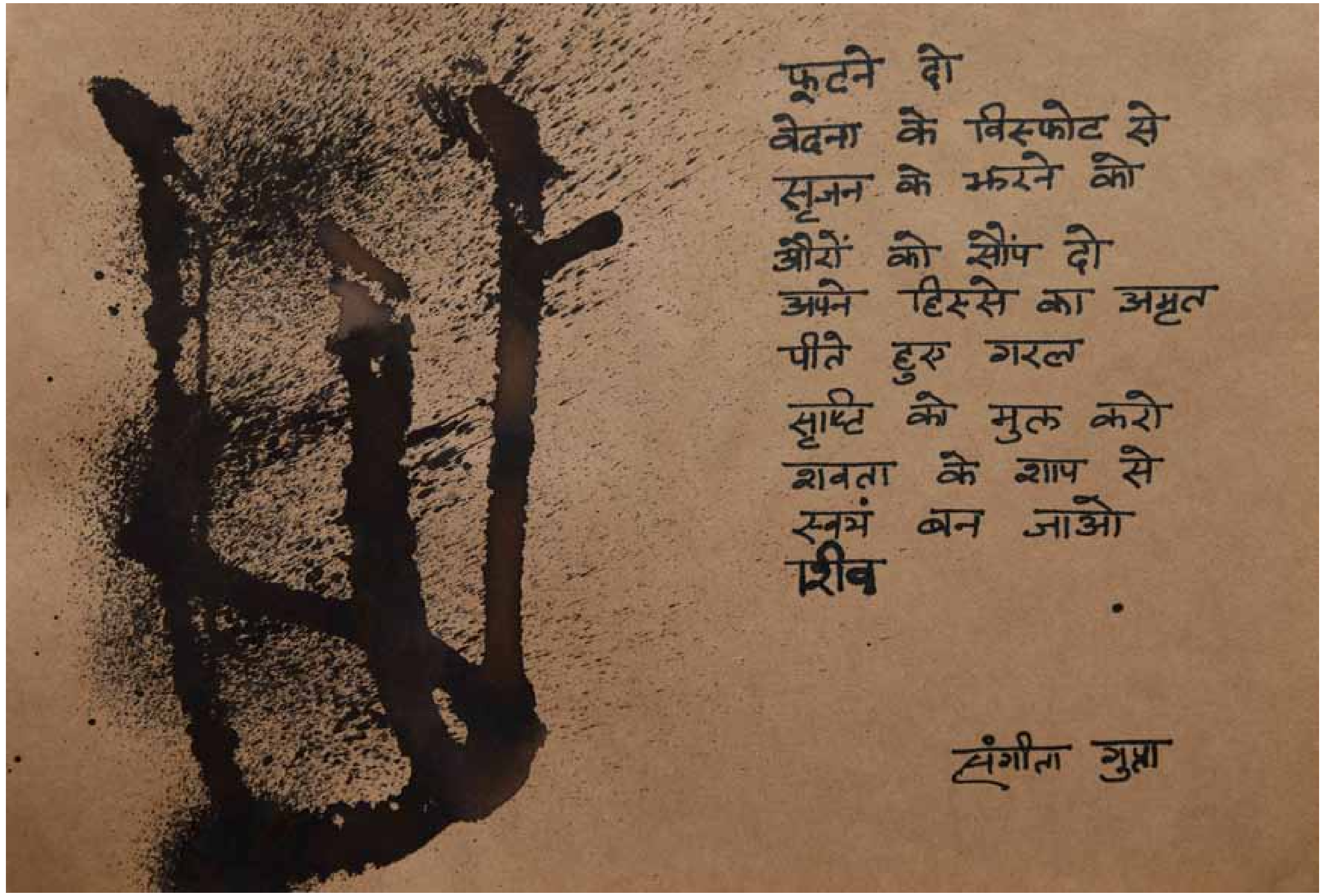
फूटने दो
वेदना के विस्फोट से
सृजन के झरने को
औरों को सौंप दो
अपने हिस्से का अमृत
पीते हुए गरल
सृष्टि को मुक्त करो
शवता के शाप से
स्वयं बन जाओ
शिव
संगीता गुप्ता

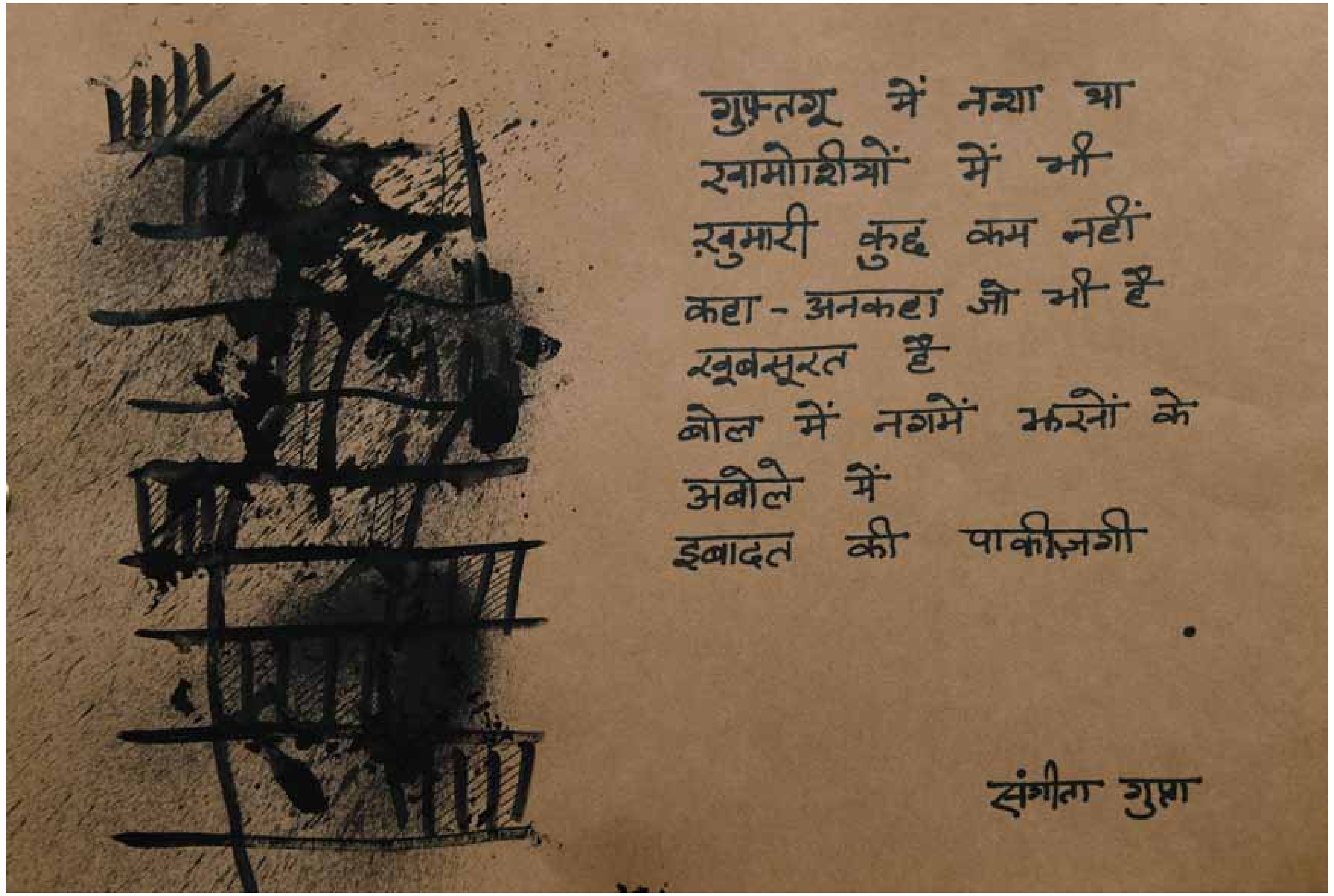
गुफ़्तगू में नशा था
खामोशियों में भी
ख़ुमारी कुछ कम नहीं
कहा - अनकहा जो भी है
खूबसूरत है
बोल में नगमें झरनों के
अबोले में
इबादत की पाकीज़गी
संगीता गुप्ता

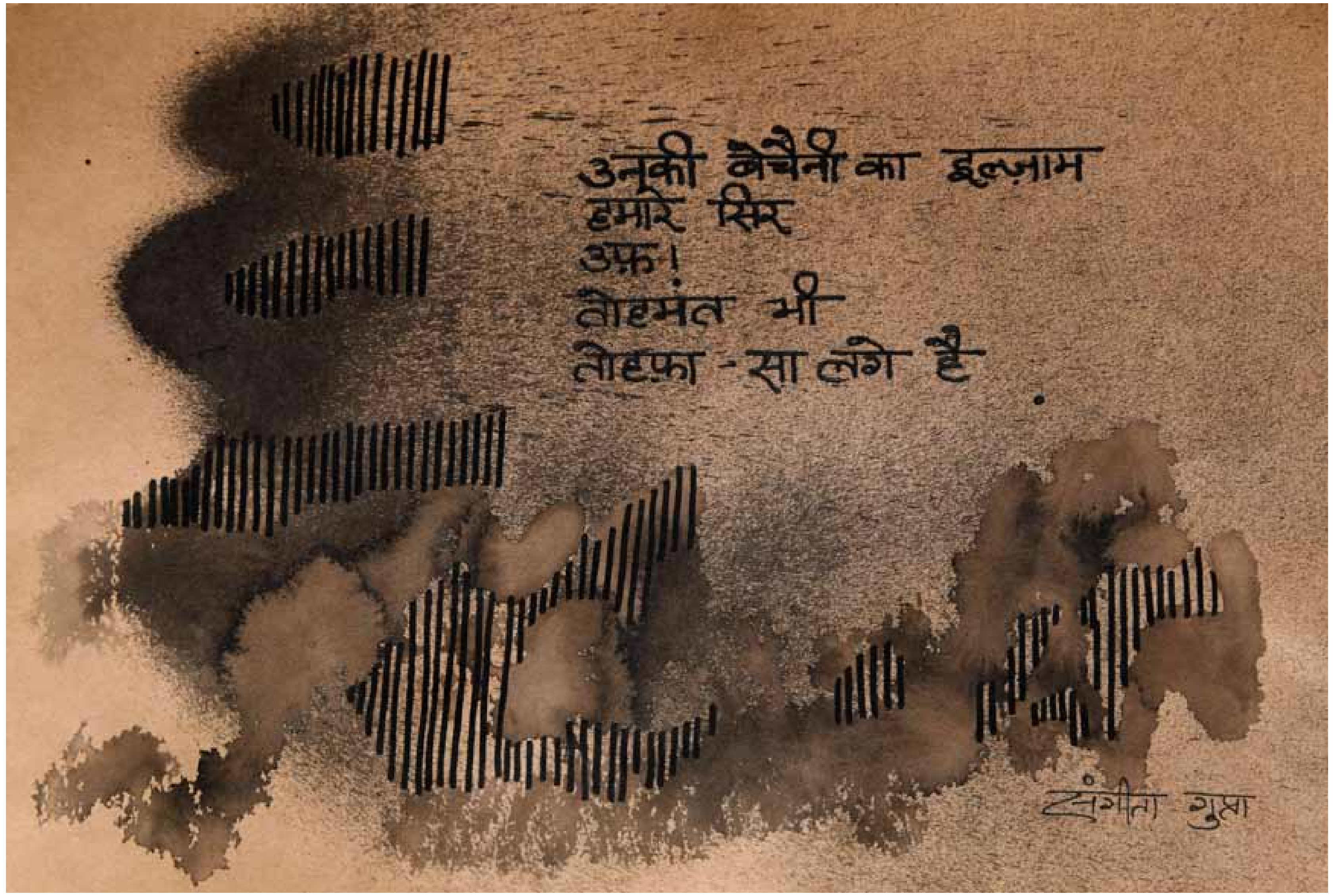
उनकी बेचैनी का इल्ज़ाम
हमारे सिर
उफ़!
तोहमत भी
तोहफ़ा - सा लगे है
संगीता गुप्ता

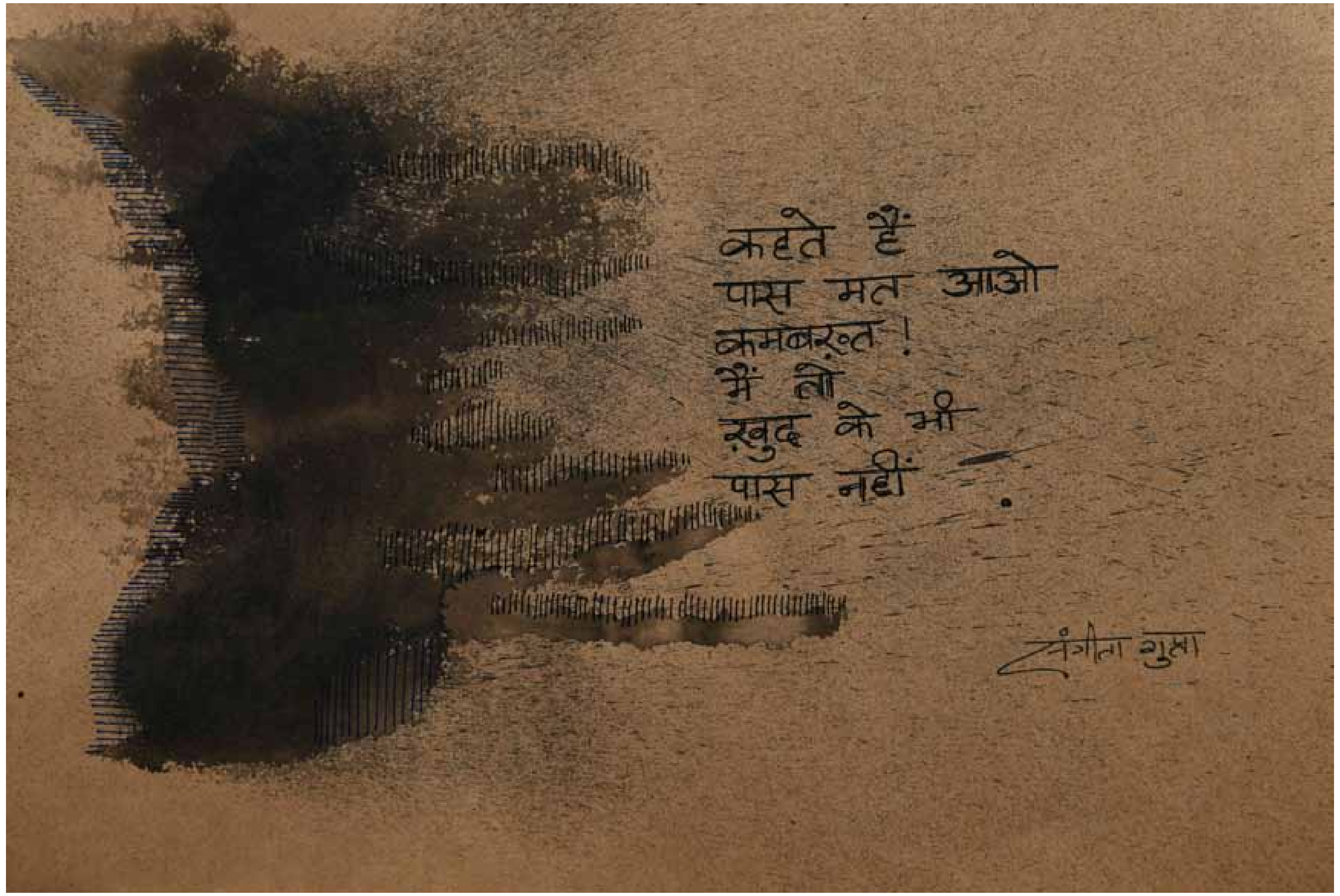
कहते हैं
पास मत आओ
कमबख़्त !
मैं तो
ख़ुद के भी
पास नहीं
संगीता गुप्ता

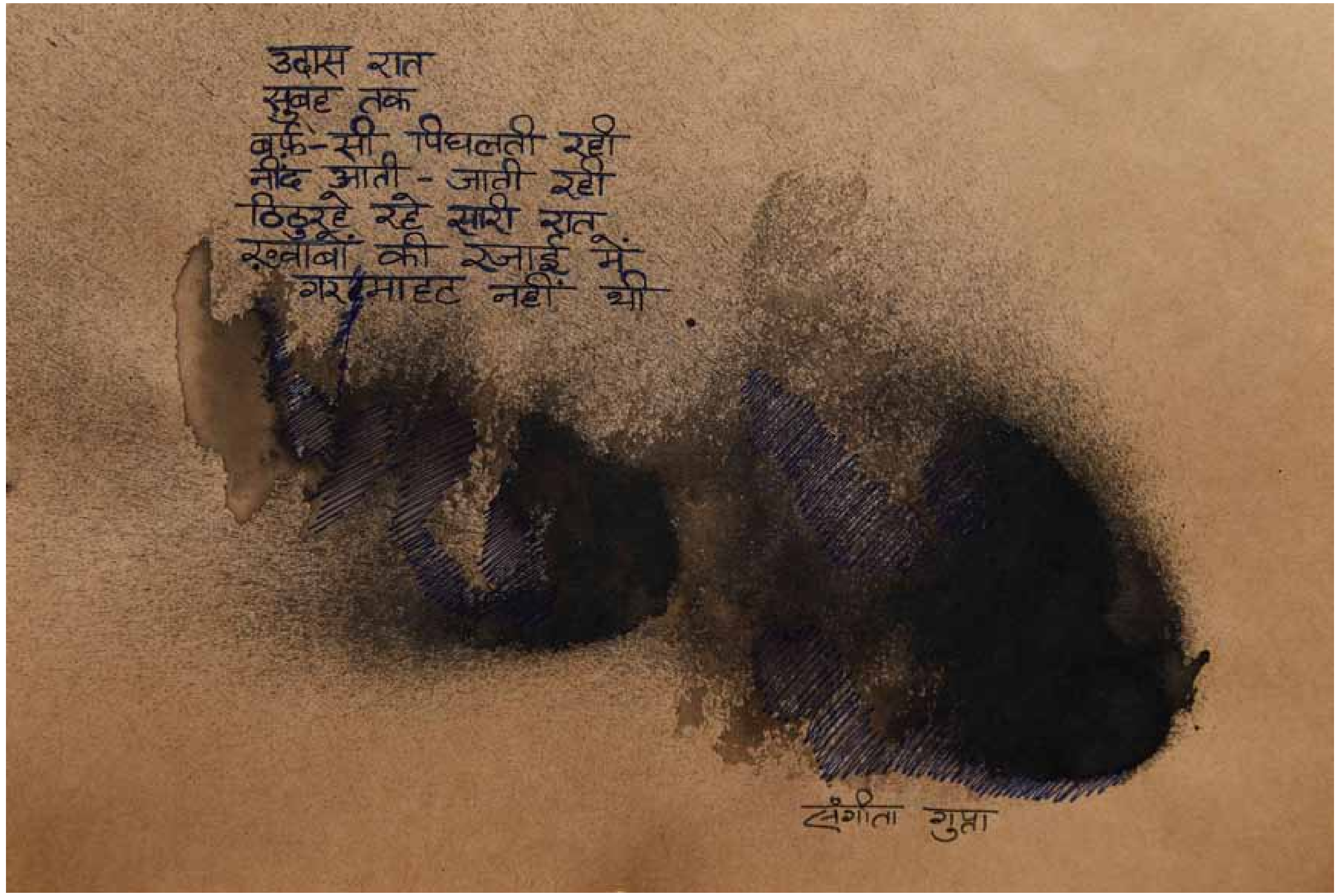
उदास रात
सुबह तक
बर्फ़-सी पिघलती रही
नींद आती - जाती रही
ठिठुरते रहे सारी रात
ख़्वाबों की रजाई में
गरमाहट नहीं थी
संगीता गुप्ता

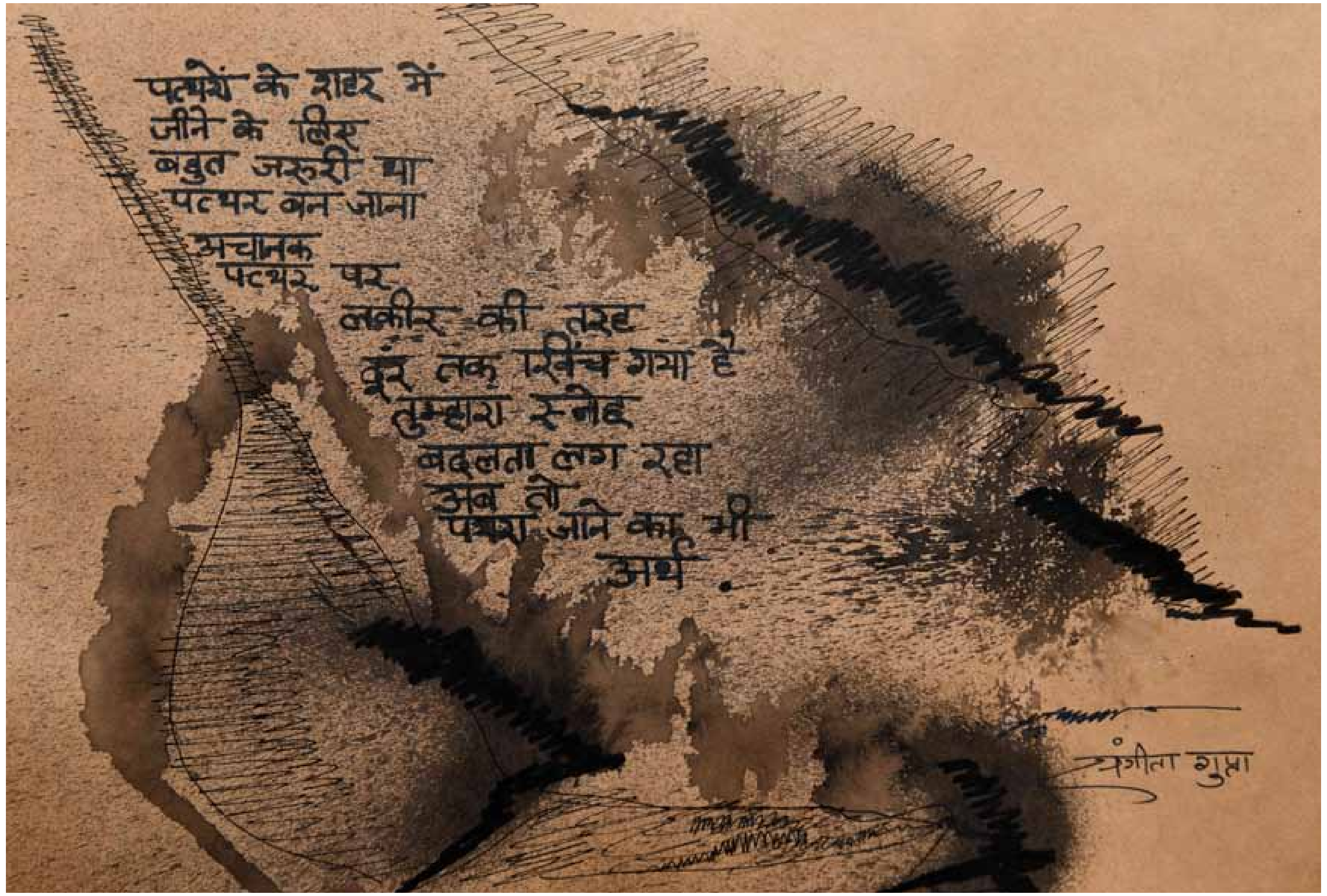
पत्थरों के शहर में
जीने के लिए
बहुत जरूरी था
पत्थर बन जाना
अचानक
पत्थर पर
लकीर की तरह
दूर तक खिंच गया है
तुम्हारा स्नेह
बदलता लग रहा
अब तो
पथरा जाने का भी
अर्थ
संगीता गुप्ता

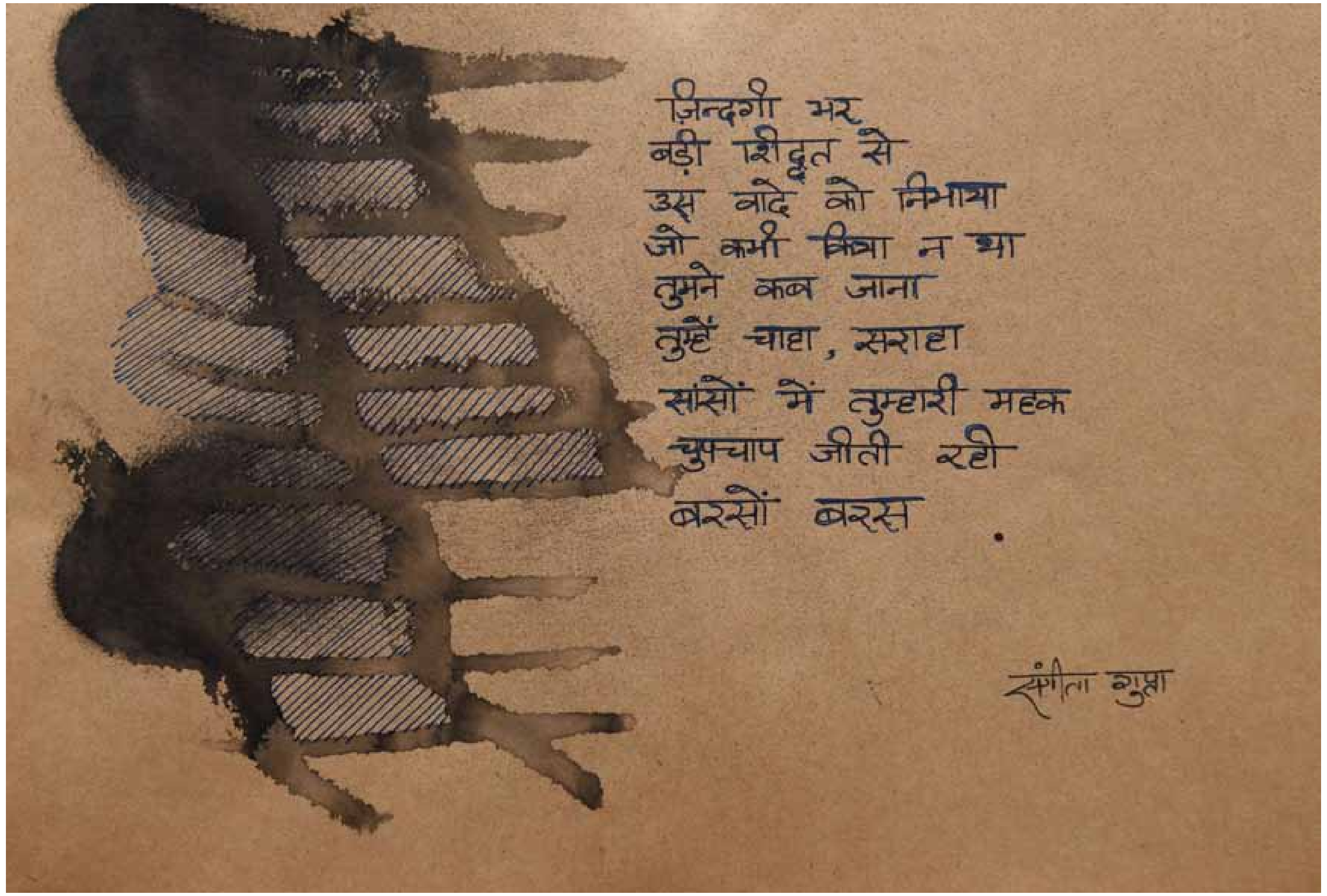
ज़िन्दगी भर
बड़ी शिद्दत से
उस वादे को निभाया
जो कभी किया न था
तुमने कब जाना
तुम्हें चाहा, सराहा
साँसों में तुम्हारी महक
चुपचाप जीती रही
बरसों बरस
संगीता गुप्ता

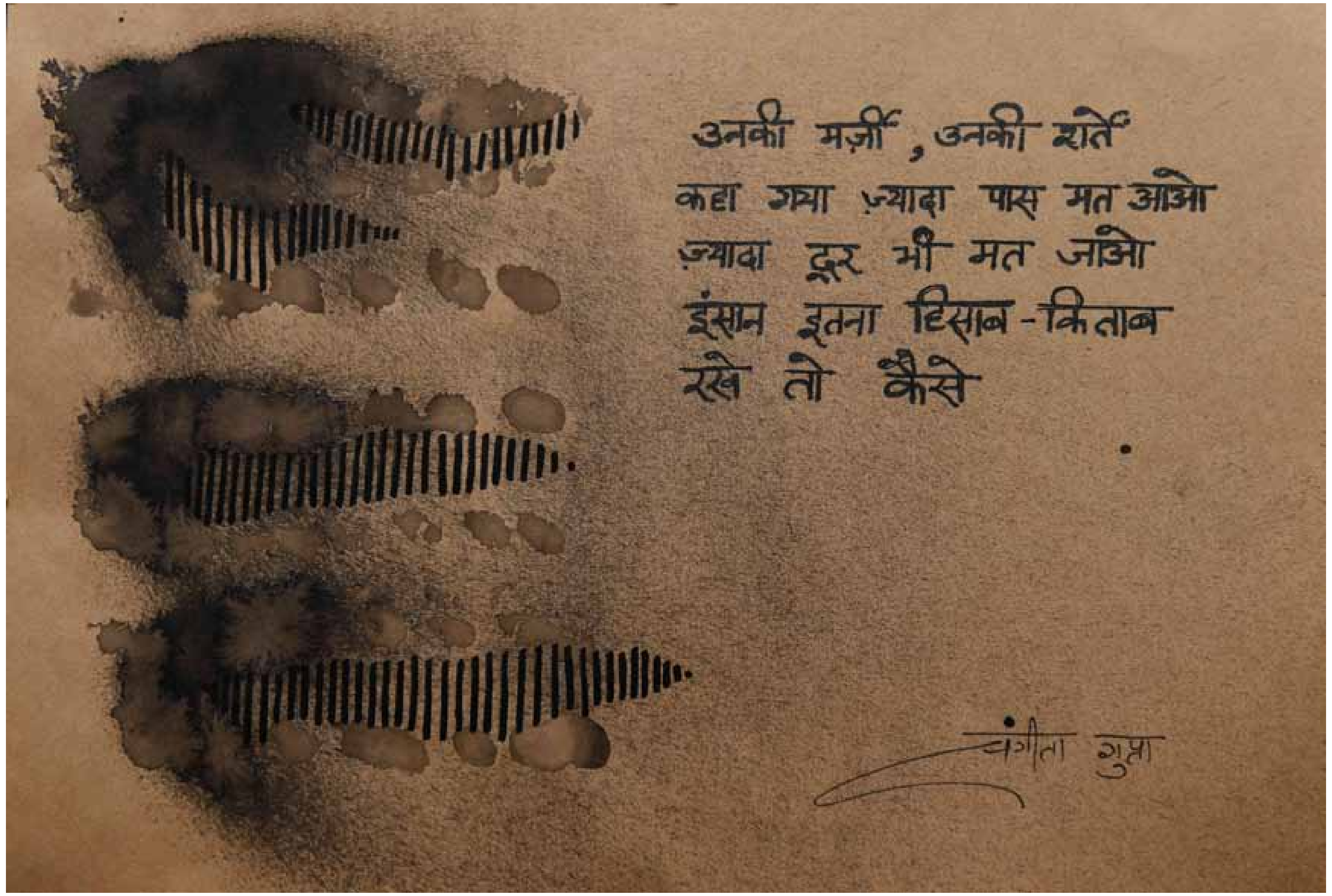
उनकी मर्ज़ी, उनकी शर्तें
कहा गया ज़्यादा पास मत आओ
ज़्यादा दूर भी मत जाओ
इंसान इतना हिसाब-किताब
रखे तो कैसे
संगीता गुप्ता

जीवन का अद्भुत रस
घूंट - घूंट पीना
हर पल हर क्षण जीना
संगीता गुप्ता

तुम क्या मेरे पास आओगे
दूर जाओगे
मैं खुद अपने पास नहीं
तुम क्या याद करोगे
भूल जाओगे मुझे
मैंने खुद को भूला रखा है
मुझे खोजने की
जहमत मत उठाना
मुझे खुद
ठिकाना मालूम नहीं अपना.

संगीता गुप्ता

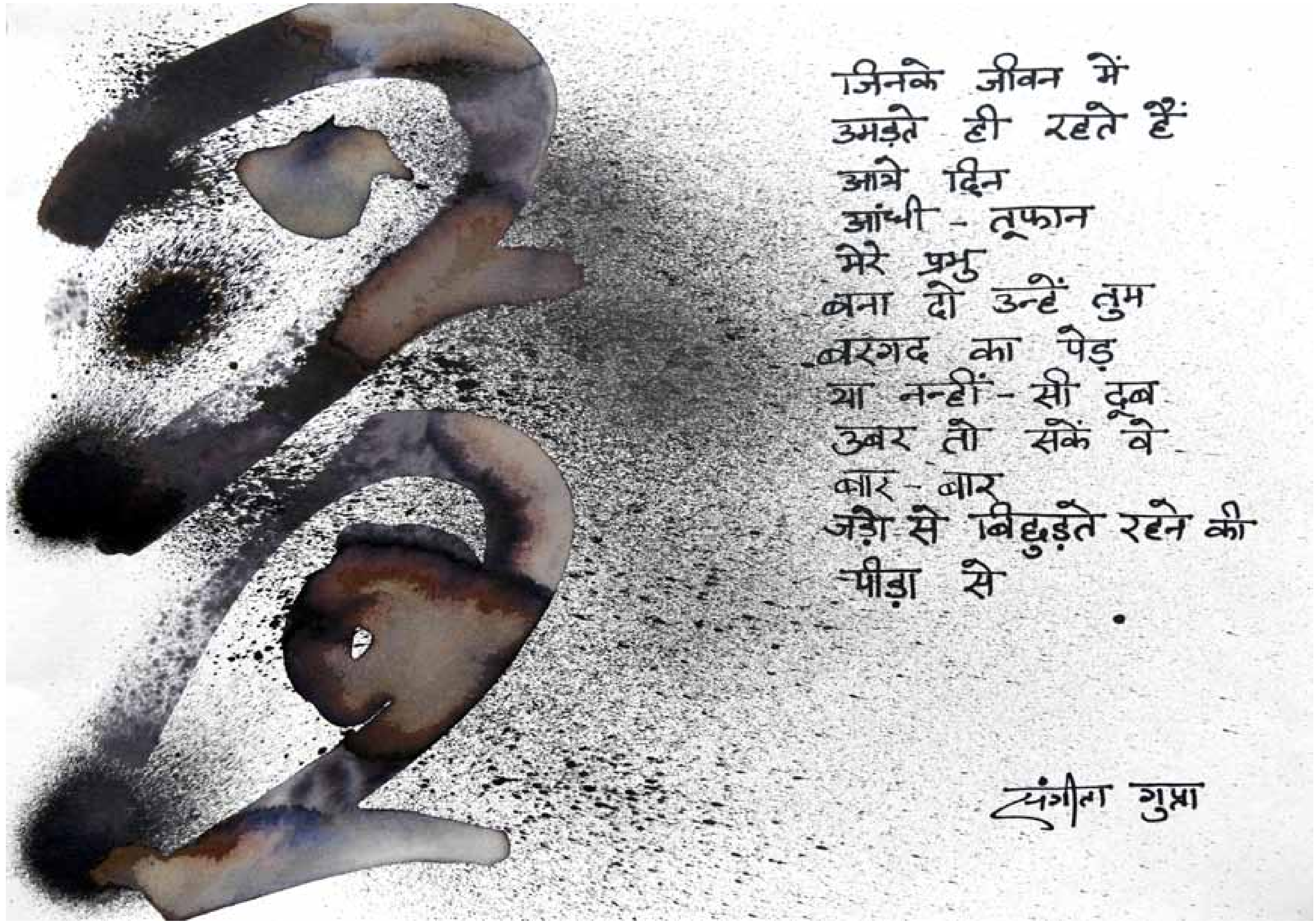
जिनके जीवन में
उखड़ते ही रहते हैं
आये दिन
आंधी - तूफान
मेरे प्रभु
बना दो उन्हें तुम
बरगद का पेड़
या नन्हीं - सी दूब
उबर तो सकें वे
बार - बार
जड़ों से बिछुड़ते रहने की
पीड़ा से
संगीता गुप्ता

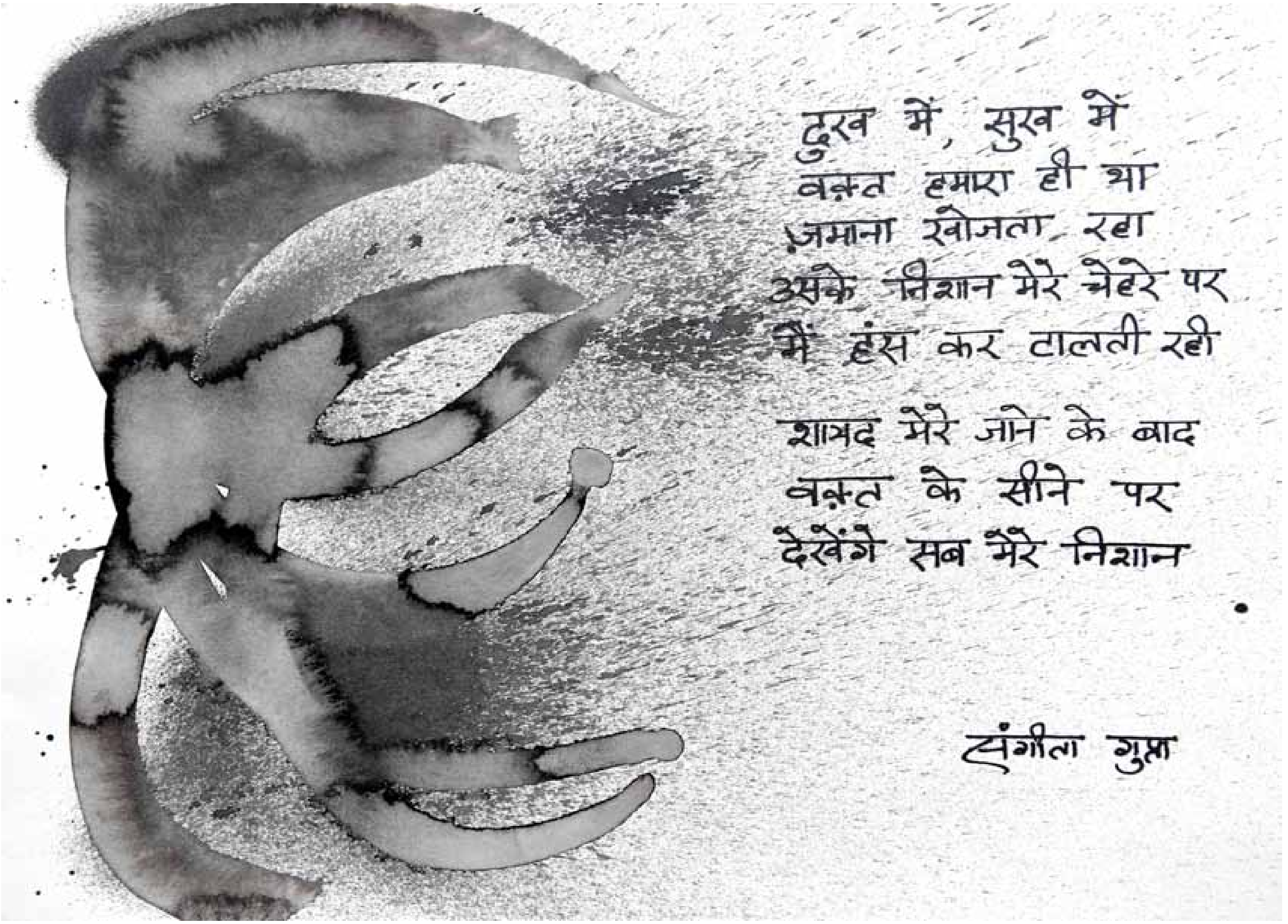
दुख में, सुख में
वक़्त हमारा ही था
जमाना खोजता रहा
उसके निशान मेरे चेहरे पर
मैं हंस कर टालती रही
शायद मेरे जाने के बाद
वक़्त के सीने पर
देखेंगे सब मेरे निशान
संगीता गुप्ता

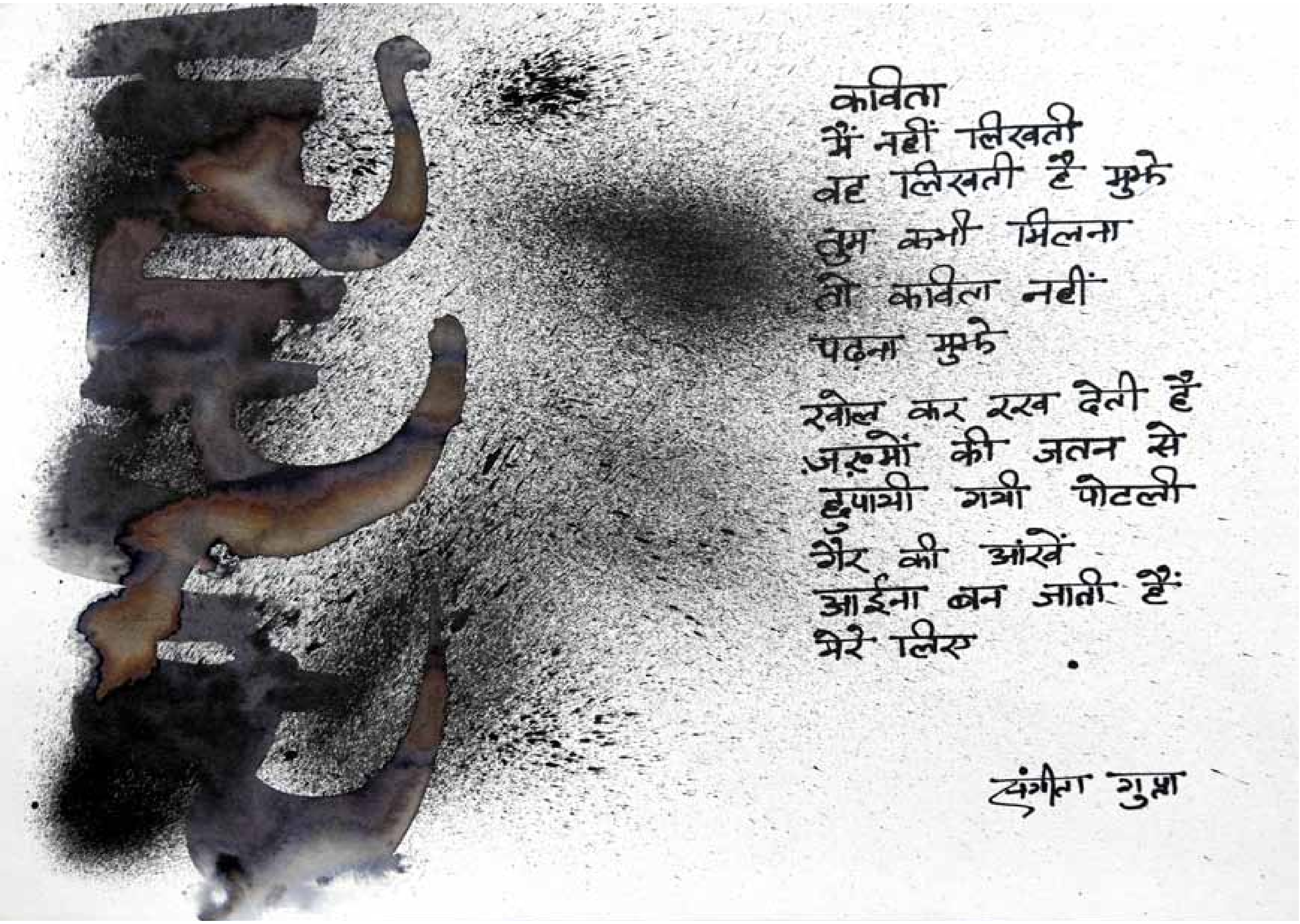
कविता
मैं नहीं लिखती
वह लिखती है मुझे
तुम कभी मिलना
तो कविता नहीं
पढ़ना मुझे
खोल कर रख देती है
ज़ख्मों की जतन से
छुपायी गयी पोटली
गैर की आंखें
आईना बन जाती हैं
मेरे लिए
संगीता गुप्ता

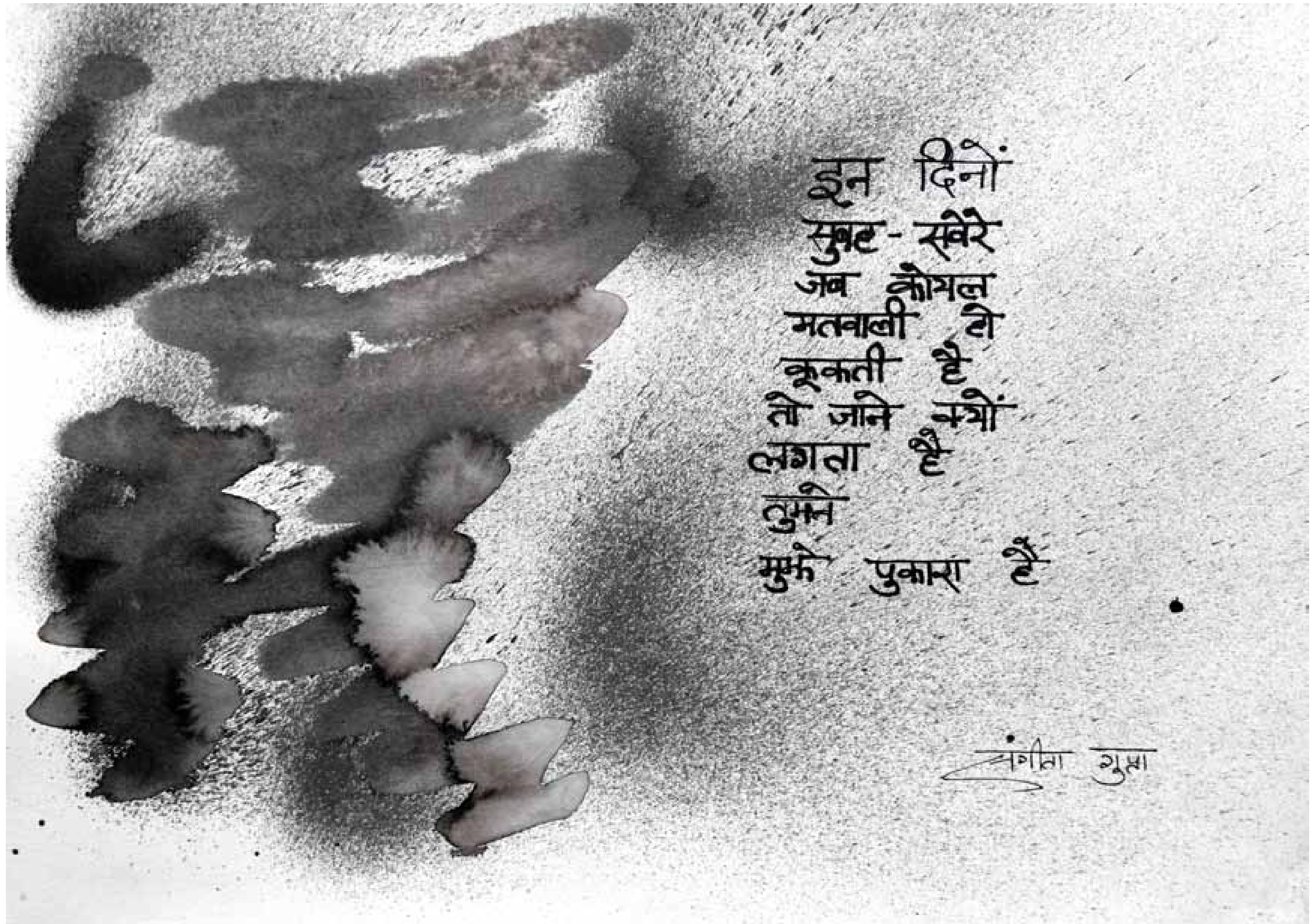
इन दिनों
सुबह-सवेरे
जब कोयल
मतवाली हो
कूकती है
तो जाने क्यों
लगता है
तुमने
मुझे पुकारा है
संगीता गुप्ता

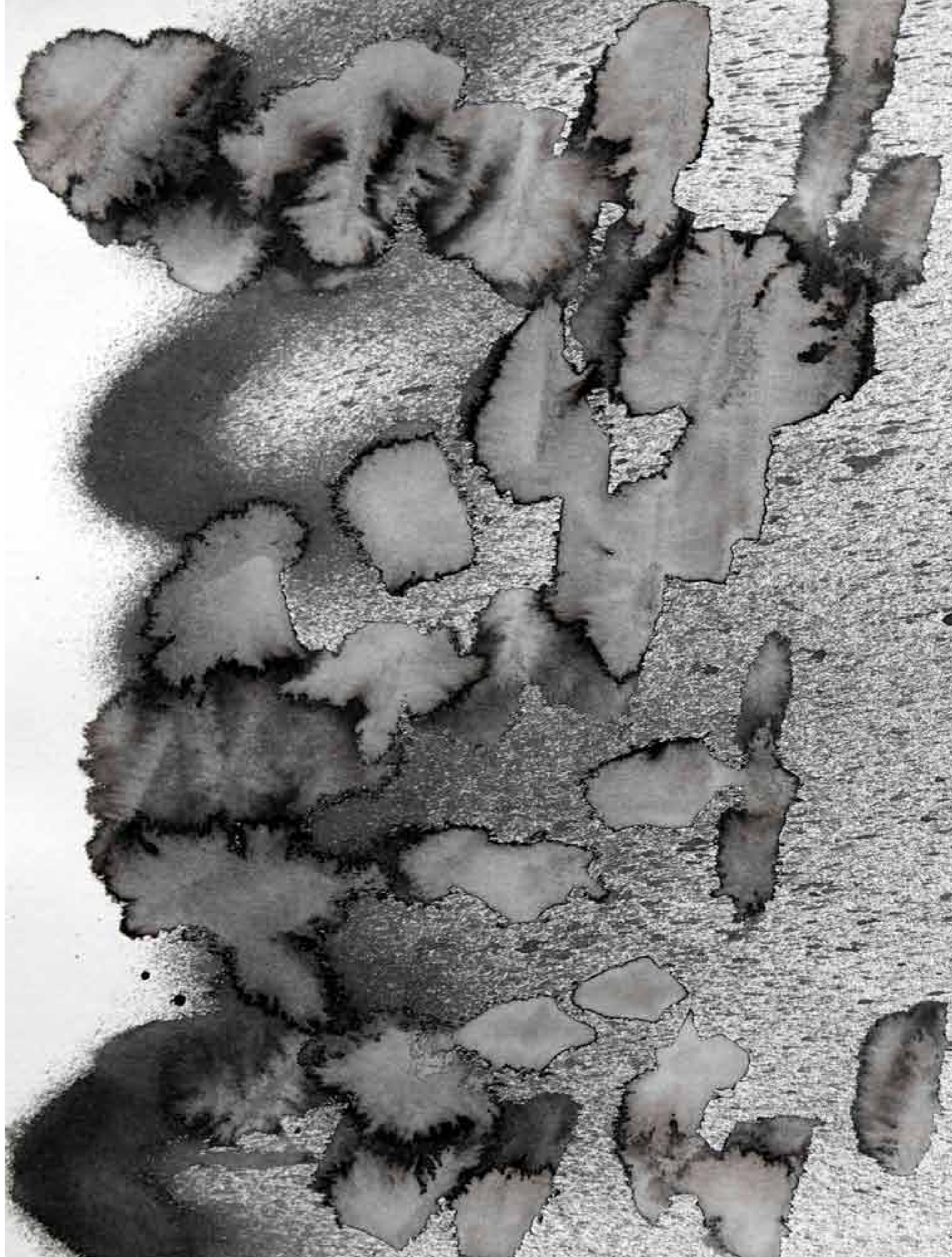

मुहब्बत वक़्त की
गुलाम नहीं
न ही इंसाफ की मुहताज
मुहब्बत ख़ुदा का नूर है
एक बार भी बरस जाये
तो रूह सदियों तक
रोशन रहती

संगीता गुप्ता

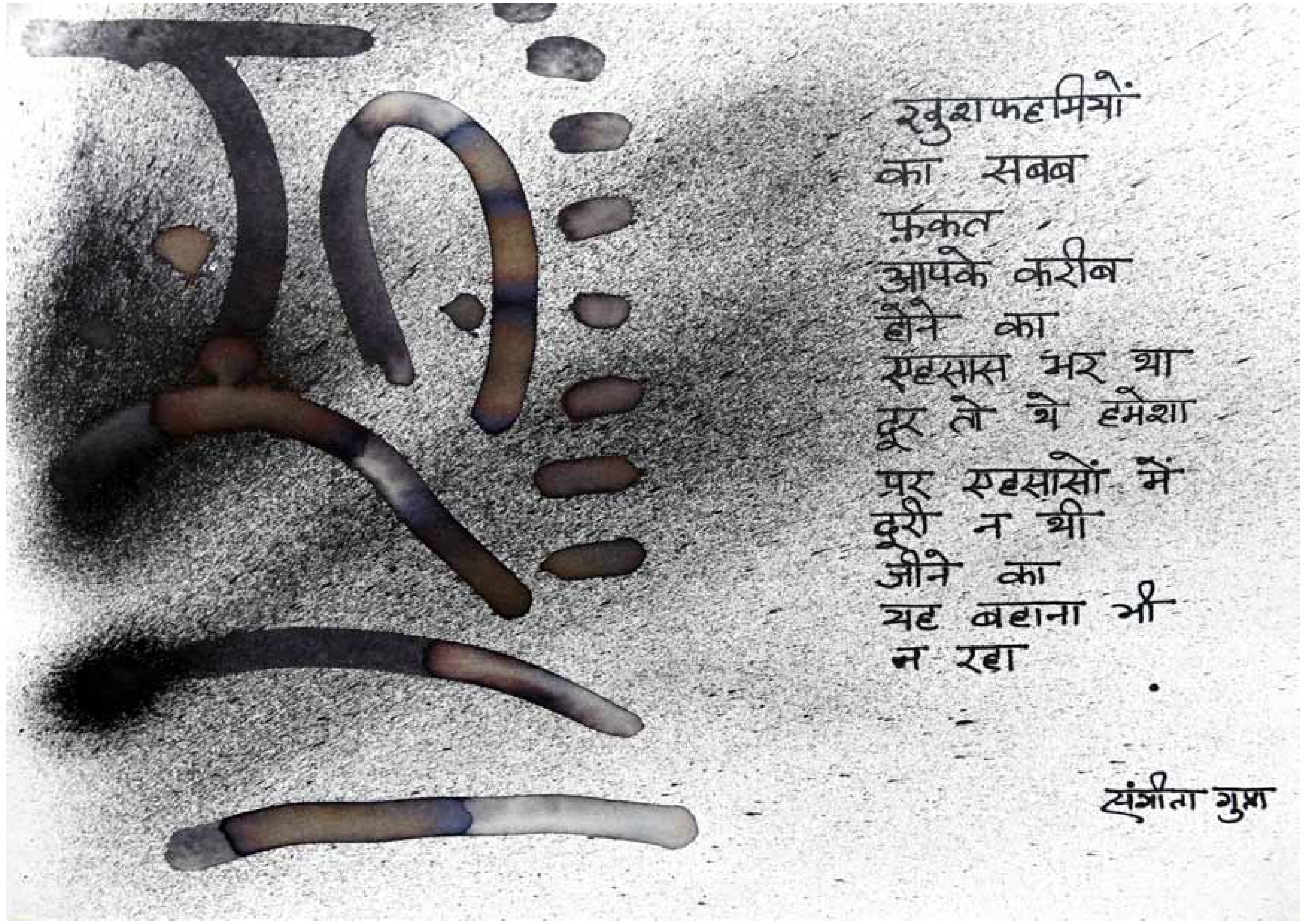
खुशफहमियों
का सबब
फ़क़त
आपके करीब
होने का
एहसास भर था
दूर तो थे हमेशा
पर एहसासों में
दूरी न थी
जीने का
यह बहाना भी
न रहा
संगीता गुप्ता

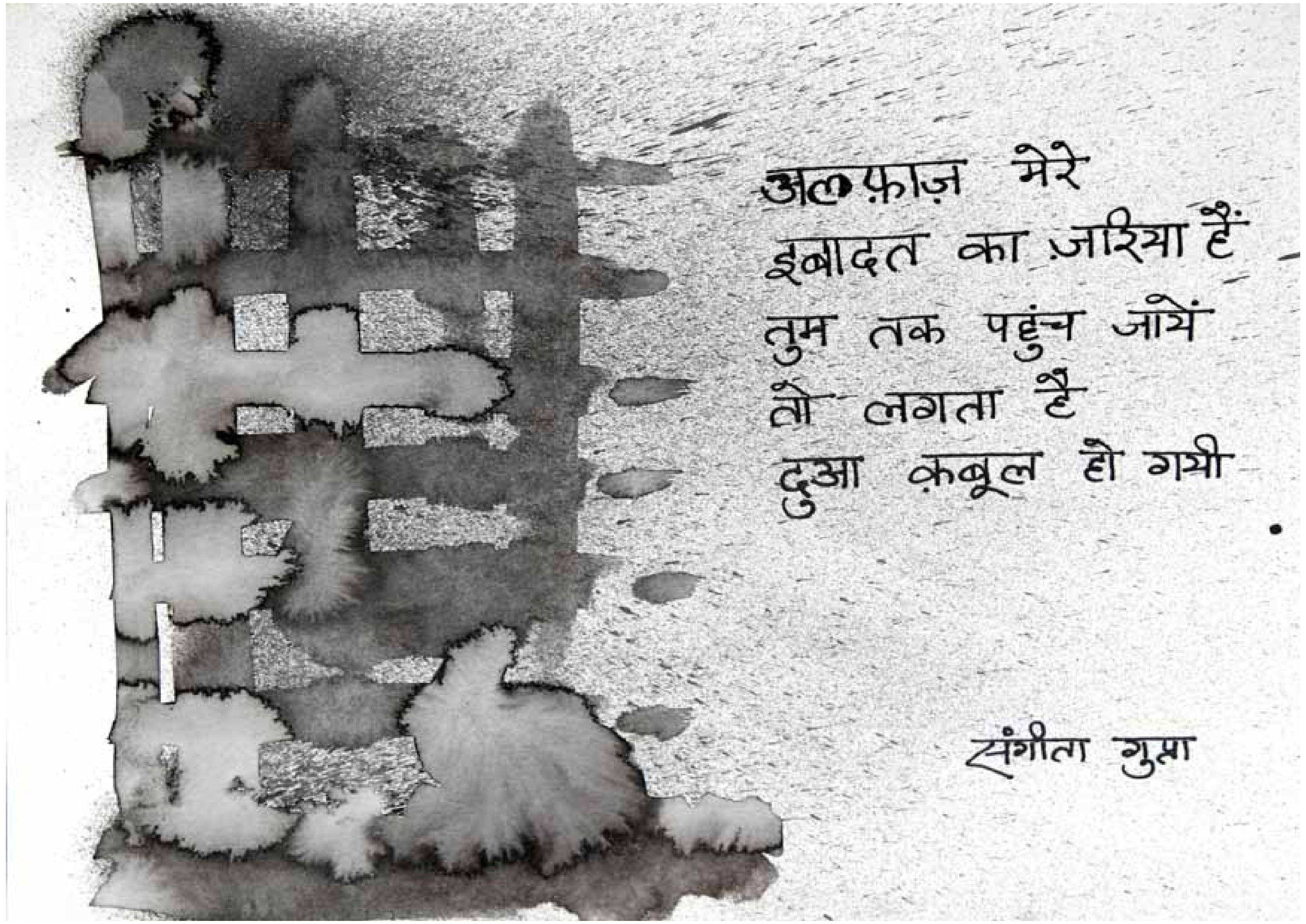
अलफ़ाज़ मेरे
इबादत का ज़रिया हैं
तुम तक पहुंच जायें
तो लगता है
दुआ क़बूल हो गयी
संगीता गुप्ता

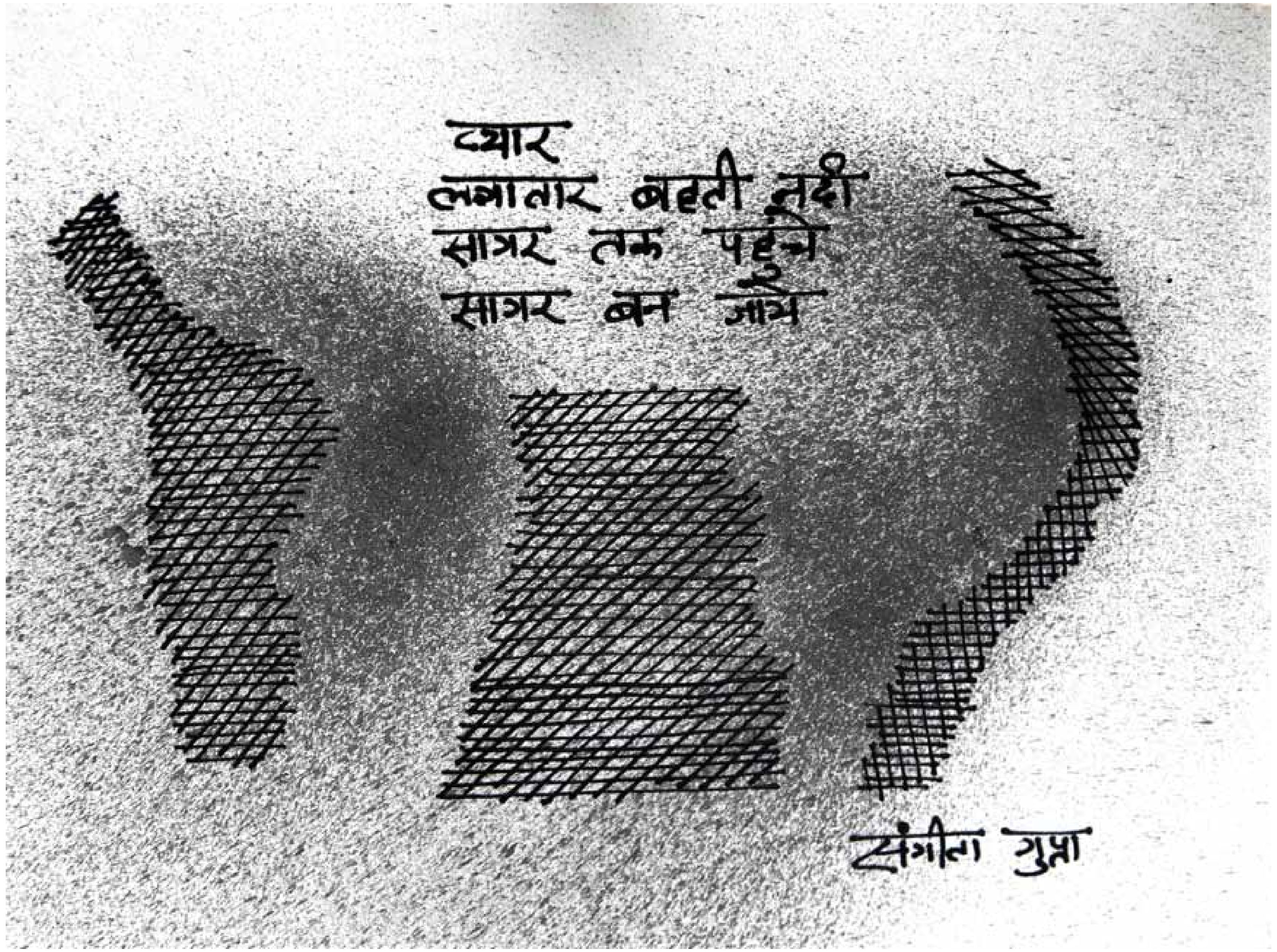
प्यार
लगातार बहती नदी
सागर तक पहुँचे
सागर बन जाये
संगीता गुप्ता

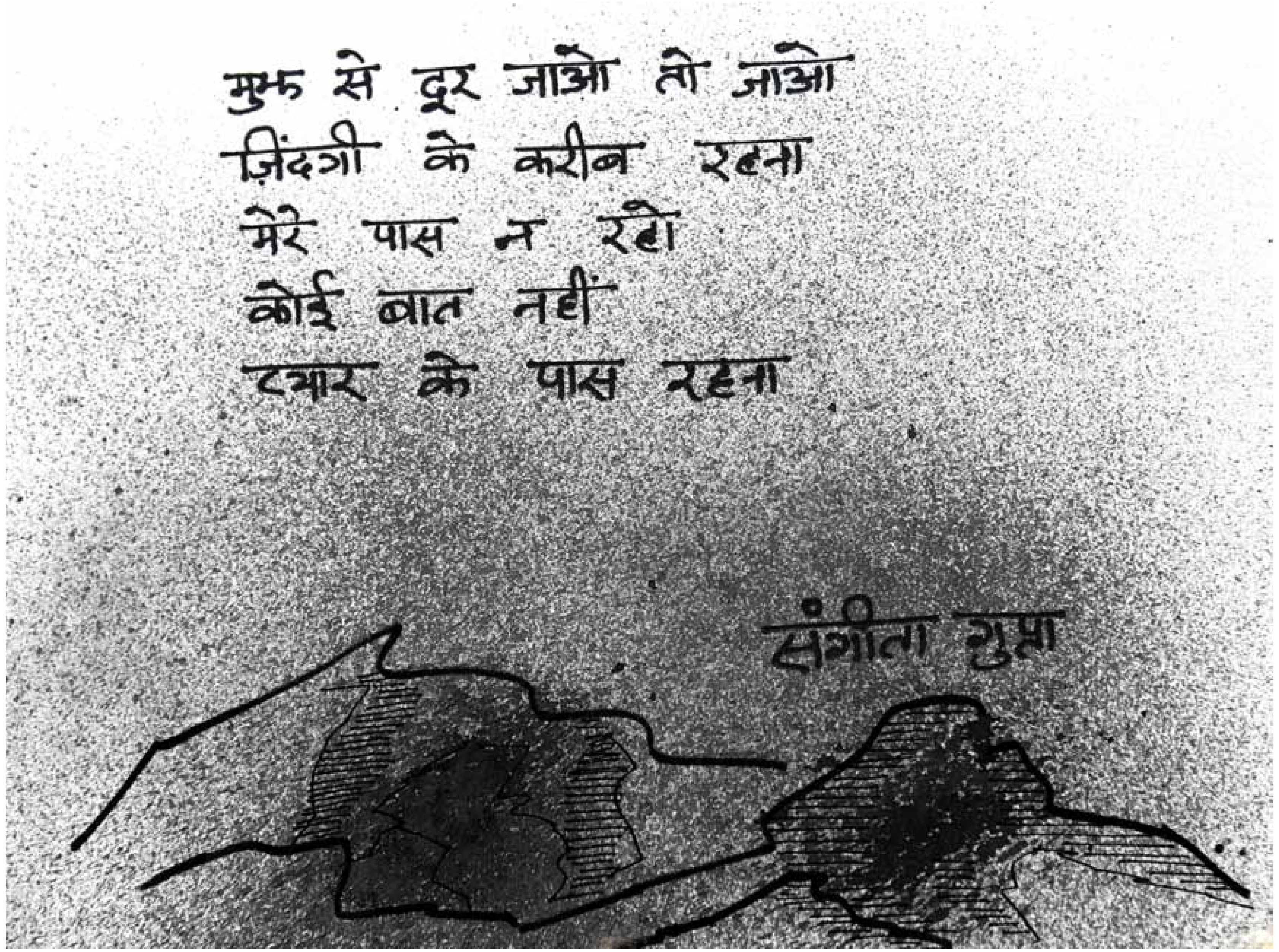
मुझ से दूर जाओ तो जाओ
ज़िंदगी के करीब रहना
मेरे पास न रहो
कोई बात नहीं
प्यार के पास रहना
संगीता गुप्ता

सम्मान एवं पुरस्कारः प्रतिभा सम्मान, 2018 - वुमन ऑफ सबस्टेन्स अवार्ड - केटेगरी - लेखक और कलाकार - सौजन्य नमस्कार दुनिया, दिल्ली, सर्टिफिकिट ऑफ रिकगनिशन, फिनोमिनल शी 2018 - सौजन्य इंडियन नेशनल बार एसोसिएशन, और अलीयन्स फ्रेनचाइज ड, दिल्ली, नारी गौरव सम्मान, 2018 - सौजन्य राजस्थानी अकादमी, दिल्ली, कल्पतरू अवार्ड, 2018 - केटेगरी - कला और कविता - सौजन्य कल्पतरू अकादमी, दिल्ली, अचीवर्स अवार्ड - 2017 - सौजन्य इंडिया आई इंटरनेशनल हयूमन राइट्स ऑबजर्वर, दिल्ली, 8वां राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड, 2017 - सौजन्य पहचान, नई दिल्ली, लिटरेरी अवार्ड, 2017 - सौजन्य भारत निर्माण, नई दिल्ली, सर्टिफिकिट ऑफ मैरिट, 2016 - सौजन्य साउथ सेन्ट्रल जोन कल्चरल सेन्टर नागपुर, मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, भारत सरकार, (चित्रकला के क्षेत्र में), 7वां राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड, 2016 - सौजन्य आई. जी. बी. सी., नई दिल्ली, द ग्रेट वूमन अचीवर अवार्ड, 2016 - सौजन्य द परफोरमर, जम्मू, कला दृष्टि अवार्ड, 2016 - सिविल सर्विस एवं कला के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य हेतु, दिल्ली गौरव अवार्ड, 2015 - सौजन्य इंडियन ब्रेव हार्टस् एवं मिनिस्ट्री ऑफ सोशल जस्टिस एंड एम्पावरमेंट, भारत सरकार, 6वां राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड, 2015 - सौजन्य आई. जी. बी. सी., नई दिल्ली, इंडिया एक्सीलेंस अवार्ड, 2015 - सौजन्य भारत निर्माण, नई दिल्ली, (कविता के क्षेत्र में), प्रियदर्शनी अवार्ड, 2015 - सौजन्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, (एम. एस. एम. ई.) भारत सरकार, (इन्टरनेशनल कल्चरल एन्टरप्रन्योर के रूप में), ग्लोबल वूमन अचीवर अवार्ड, 2015 - सौजन्य आई. जी. बी. सी., नई दिल्ली, 35वां वूमन एन्टरप्रन्योरशिप अवार्ड, 2015 - सौजन्य भारत निर्माण, नई दिल्ली, पोयट् ऑफ द ईयर अवार्ड, 2014 - सौजन्य तृतीय दिल्ली इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, कलाकार अवार्ड, 2014 - सौजन्य तृतीय दिल्ली इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, नेशनल वूमन एक्सीलेन्स अवार्ड, 2013 - सौजन्य योग कन्फेडरेशन ऑफ इंडिया और इंटरनेशनल वूमन एक्सीलेन्स अवार्डस ऑरगनाईजेशन, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, 2013 - हिन्दी काव्य में योगदान के लिए, वूमन अचीवर अवार्ड, 2013 - सौजन्य इण्डियन काउंसिल फॉर यू०एन० रिलेशन्स, विश्व हिंदी प्रचेता अलंकरण, 2013 - सौजन्य उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं उत्कर्ष अकादमी, कानपुर, उद्भव शिखर सम्मान, 2012 - सौजन्य उद्भव सामाजिक, सांस्कृतिक एंव साहित्यिक संस्थान, दिल्ली (कला और साहित्य के क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए), 77वां वार्षिक सम्मान, 2005 - सौजन्य ऑल इण्डिया फाइन आर्टस् एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी, दिल्ली (चित्रकला के क्षेत्र में), हिन्द प्रभा पुरस्कार, 1999 - सौजन्य उत्तर प्रदेश महिला मंच, मेरठ, 69वां वार्षिक पुरस्कार, 1998 - सौजन्य ऑल इण्डिया फाइन आर्टस् एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी, दिल्ली (चित्रकला के क्षेत्र में)।

संपर्कः sangeetaguptaart@gmail.com
www.sangeetagupta.co.in

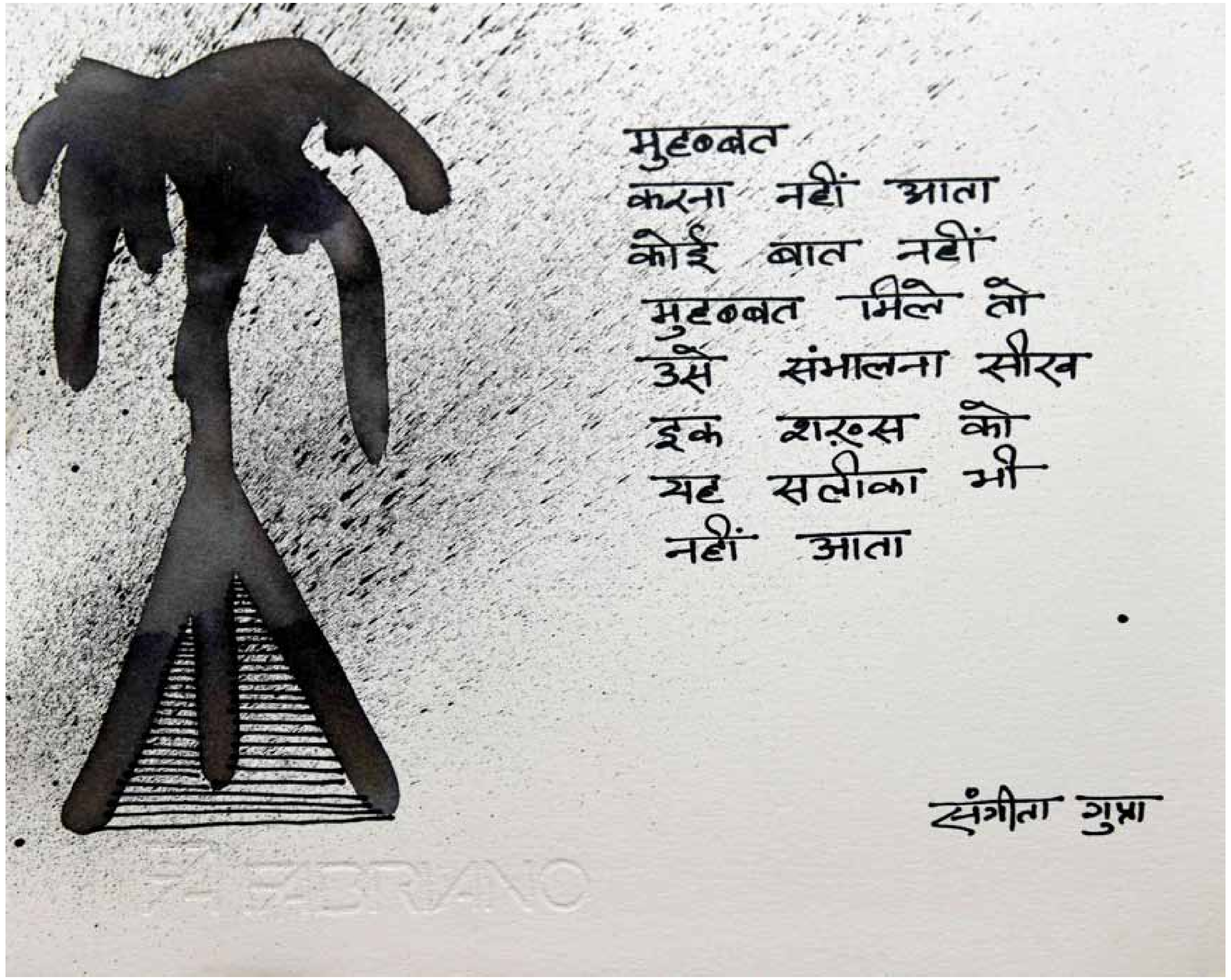

तुम्हारी तबियत का सुना जब से
चाह रही हूं तब से
एक सिरे से सब
दुनियावी जरूरी - गैरजरूरी
मसरूफ़ियतें खारिज कर दूं
खामोश बैठी रहूं तुम्हारे सिरहाने
सोख लूं तुम्हारी सारी तकलीफ
अपनी उंगलियों के पोरों से
धीरे से चूम लूं तुम्हारी आंखें
भर दूं उनमें नींद के बोसे
तुम्हारे हर बाल पर लिख दूं
अपनी हर अनकही नज़्म
निगाहों से छू लूं तुम्हें यूं
कि रोम-रोम सुकून से भर जाये
तुम्हारे पांवों तले छुपा दूं अपनी दुआएं
कि पलक झपकते तुम्हें आराम आ जाये
खामोश बैठी रहूं तुम्हारे सिरहाने
चाह रही हूं तब से
तुम्हारी तबियत का सुना जब से

संगीता गुप्ता

Prithvi